सोशल मीडिया से जुड़ें

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 228, नई दिल्ली, शनिवार 25 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 क्या है ओआरएस (ORS) को लेकर एफएसएसएआई (FSSAI) का आदेश

06 बचपन बिक रहा है: बच्चों से भीख मंगवाना एक सामाजिक अपराध।

08 दलविंदरजीत सिंह ने अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर के रूप में संभाला पद

दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते मानक को देखते हुए व्यवसायिक गतिविधि के वाहनों पर ना लगाई जाए रोक को लेकर कई परिवहन संस्थाओं और विशेषज्ञों ने देना शुरू किए अपने विचार

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण को लेकर डेल्ही के व्यवसायिक वाहन मालिकों की हालत बहुत खराब हो जाती हैं जिस पर कभी भी सरकार, विभाग या अन्य किसी भी एजेंसी ने ध्यान देना उचित नहीं समझा।

दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिक इस लिए भी अधिक चिंतित होती हैं क्योंकि परिवहन विभाग की बनाई गई नीतियां भी भ्रामक है।

1. बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहनों को दिल्ली में आने और चलने की अनुमति पर दिल्ली के पंजीकृत वाहनों पर रोक,
2. दिल्ली सरकार, जल विभाग और परिवहन विभाग द्वारा पुराने मानकों के वाहनों को अनुबंध पर लेकर जल छिड़काव पर अन्य पर रोक
3. आवश्यक सामग्री के लिए प्रयोग होने वाले वाहनों को छूट पर अन्य पर रोक
4. सरकारी विभागों द्वारा पुराने मानकों के वाहनों को चलने की छूट पर अन्य पर रोक
5. अनाधिकृत निज नंबरों के वाहनों द्वारा व्यवसायिक गतिविधि पर छूट पर वैधानिक

व्यवसायिक वाहनों पर रोक

यहां सबसे बड़ा सवाल यह उठता हैं की भारत देश में खास तौर से दिल्ली में जब किसी भी पैट्रोल पंप पर यूरो VI मानक के अतिरिक्त कोई भी पेट्रोलियम पदार्थ (पेट्रोल, डीजल) की बिक्री ही नहीं होती तो किसी भी मानक के वाहन से प्रदूषण कैसे संभव है ?

यूरो VI मानक की बात करें तो

यूरो VI मानक के डीजल के प्रयोग करने पर सीएनजी से भी कम प्रदूषण होता है तो वाहनों का प्रदूषण किस आधार पर दिल्ली की वायु को प्रदुषित करने में सक्षम हो सकता है, सोचनीय सवाल ?

क्या स्वयं दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग जनता को यह बताने का प्रयास किया रहे है की यूरो VI पेट्रोलियम पदार्थ के नाम से दिल्ली में जो पेट्रोलियम पदार्थ बेचा जा रहा है वह असल में यूरो VI है ही नहीं।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन के द्वारा यह बात कई बार उठाई जा चुकी हैं की दिल्ली परिवहन विभाग यह जनता को सार्वजनिक रूप में बताए की दिल्ली में बिकने वाला पेट्रोलियम पदार्थ यूरो VI मानक है या नहीं ?

परिवहन विशेषज्ञ अनिल छिक्कारा का कहना है बीएस 4 पेट्रोल और डीज़ल वाहनों को ग्रेप 3 और 4 के अंतर्गत नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि यह वाहन बीएस 6 ईंधन का उपयोग करते हैं और कम भार और कम तापमान पर चलते हैं और प्रदूषण नहीं फैलाते। उनका साथ ही कहना है इनमें धुएँ का बाद में उपचार होता है, हालाँकि यह प्रदूषण तो फैलाते हैं, लेकिन धुआँ नहीं छोड़ते।

अन्य सभी परिवहन से संबंधित संस्थाओं द्वारा भी दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग के साथ अन्य एजेंसियों से दिल्ली में पंजीकृत यूरो IV के वाहनों पर प्रदूषण के नाम से लगाई जाने वाली रोक को नहीं लगाने की अपील की है।

निष्कर्ष:- दिल्ली में वाहनों पर प्रदूषण से लगाई जाने वाली रोक से प्रदूषण में कमी नहीं होती पर वाहन व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल के मालिक कर्जदार जरूर हो जाते हैं, इसलिए दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग को इस तरफ विचार करना अनिवार्य है।

महिलाओं से क्या दुश्मनी है परिवहन विभाग दिल्ली की, क्या कोई बता सकता है ?

संजय बाटला

महिलाओं की सुरक्षा के मद्देनजर आदेशित सभी आदेशों / दिशा निर्देशों को परिवहन विभाग बेखौफ कर रहा है दरकिनार,

1. निर्भया कांड के बाद सवारी वाहनों में महिलाओ की सुरक्षा को सख्त बनाने के लिए दिए गए गृह मंत्रालय सचिव के नेतृत्व मे बनाई गई कमेटी और उच्च न्यायालय की जज ऊषा मेहरा द्वारा दिए गए दिशा -निर्देशों भारत सरकार से पैसा लेकर भी आज तक लागू नहीं करना,
2. दिल्ली में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 3 पहिया, तीन सवारी आटो के पंजीकरण पर एक लाख (100000) पर प्रतिबंधित आदेश को परिवहन विभाग दिल्ली द्वारा अपने ही आदेश / एसओपी की धज्जियां हवा में उड़ा कर दिल्ली में अनाधिकृत तरीके से डेढ़ लाख (150000) आटो के साथ एनसीआर में पंजीकृत 3 पहिया तीन सवारी आटो को अनाधिकृत प्रवेश दिलवाकर चलवा कर महिलाओं की सुरक्षा से जबरदस्तखिलवाड़,
3. दिल्ली की सड़को पर दिल्ली एवं बाहरी राज्यों के निजी नंबरों के वाहनों को खुले आम व्यवसायिक गतिविधि में चलने पर कार्यवाही नहीं कर के महिलाओं को असुरक्षित करवाने में,
4. दिल्ली में अपनी जानकार एक प्राईवेट कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से दिल्ली के व्यवसायिक गतिविधि में पंजीकृत वाहनों को बाहरी राज्यों में फिटनेस प्रमाणपत्र प्राप्त करने का रास्ता प्रदान कर उनपर लगी परमिट कंडीशन की धज्जियां उड़ा कर महिलाओ को असुरक्षा करवाने में मददगार साबित हो रही हैं।

आटो शाखा परिवहन विभाग दिल्ली माननीय सर्वोच्च न्यायालय और गृह मंत्रालय सचिव कमेटी के दिशा निर्देशों की कर रहा खुली अवहेलना, किसकी शय ?

दिल्ली भारत देश की राजधानी पर ना तो महिला सुरक्षित, ना आम जनता आखिर क्यों एक अनसुलझा सवाल।

दिल्ली परिवहन आयुक्त एक महिला, दिल्ली की मुख्यमंत्री एक महिला फिर भी महिलाओं की सुरक्षा में कमी,

आपको यहां हम जिस बात से अवगत कराने जा रहे है यह बात आम जनता की जानकारी में हो सकता है शायद ना हो पर दिल्ली पुलिस, दिल्ली यातायात पुलिस, प्रवर्तन शाखा परिवहन विभाग, आटो शाखा के अधिकारी, विशेष परिवहन आयुक्त, परिवहन आयुक्त और जिला एवम् उच्च न्यायालय की जानकारी में अवश्य है।

सबसे मुख्य बात कि इस कारण से दिल्ली की सड़को पर ना सिर्फ जनता असुरक्षित हैं अपितु महिलाएं असुरक्षित हैं।

दिल्ली में अकेली महिला सबसे विश्वसनीय सार्वजनिक सवारी के रूप में आटो तीन पहिया तीन सवारी का प्रयोग करना पसंद करती है और यही एक बड़ा हादसे का शिकार बना सकता है।

इस हादसे और असुरक्षा करवाने के पीछे अगर कोई सच में जिम्मेदार है तो वह है आटो शाखा में कार्यरत बह अधिकारी जो पुराने वाहन को बदल कर नए वाहन का खरीदने के लिए आदेश / एलओआई जारी कर रहे हैं वो भी पूर्ण सत्यता की जांच किए बिना क्योंकि उसी कारण से दिल्ली में एक ही नंबर से कई आटो चलते पाए जाते हैं। अब जनता को कैसे पता की कौन सा आटो प्रमाणित है आटो शाखा परिवहन विभाग से और कौन सा अवैध।

अवैध आटो को चलाने वाले कितने निडर हैं इसकी जानकारी आप दिल्ली पुलिस स्टेशनो से पता कर सकते हैं क्योंकि अभी कुछ महीनों पहले ही नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर एक ही समय पर एक ही नंबर के दो ऑटो पाए गए और जांच में दोनों के पास ही आटो को सड़क पर चलने के लिए अनिवार्य दस्तावेज उपलब्ध वह भी ओरिजनल पाए गए। एक ही नाम, एक ही नंबर और दस्तावेज भी मान्य। अब आप ही बताए की आटो शाखा के अधिकारी के बिना क्या यह संभव है ?

अब आपको बताते है इसके पीछे का एक और सचः- माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली में 1 लाख आटो के पंजीकरण के आदेश जारी किए हुए है जिसके आधार पर परिवहन विभाग नया आटो खरीदने के आदेश तभी जारी करता है जब पुराना आटो स्क्रैप हो जाता हैं। पिछले कुछ सालों से आटो स्क्रैप हुआ या नहीं की जानकारी अगर दिल्ली परिवहन विभाग के आटो शाखा के अधिकारी लेना चाहे तो उन्हें अपनी शाखा में बैठे बैठे ही आनलाइन जांच कर प्राप्त कर सकते हैं पर उनके पास जनता की सुरक्षा से ज्यादा जरुरी नए आटो को खरीदने का आदेश एलओआई जारी करना है जिस कारण वह जांच करना पसंद नहीं करते।

अब आपकी जानकारी हेतु बता दे आज से कुछ महीने पहले परिवहन विशेष के मुख्य सम्पादक स्वयं विशेष परिवहन आयुक्त विश्वेंदर से मिले थे और उन्हे सबूत उपलब्ध कराए थे की किस तरह आटो शाखा के अधिकारी बिन सत्यता की जांच किए पुराने आटो के स्थान पर नए आटो खरीदने की एलओआई जारी कर रहे है और उन्होंने विश्वास दिलाया था की वह इसकी जाँच करवा कर गलता ढंग से एलओआई जारी करने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगे और आगे से स्क्रैप की जांच किए बिना एलओआई जारी नही होगी पर यह विश्वाश खोखला सिद्ध हुआ और आटो शाखा में एलओआई जारी करने वाले अधिकारी अब भी बिना पूर्ण सत्यता की जांच किए बेख़ौफ़ होकर एलओआई जारी कर रहे है।

आपकी जानकारी हेतु बता दें किसी भी मान्यता प्राप्त स्क्रैप डीलर को जब भी राज्य सरकार जहां से उसने अपना स्क्रैप यूनिट पंजीकृत करवाया है के पंजीकरण के बाद भी सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा अपने स्क्रैप यूनिट को ऑपरेशनल का अप्रूवल लेना अनिवार्य है और ऑपरेशनल ही बिना वह स्क्रैप डीलर वाहन पोर्टल पर वाहन को जमा करने की सीओडी जारी तो कर पाता है पर वाहन को वाहन पोर्टल पर स्क्रैप नहीं दिखा पाता है और नॉन ऑपरेशनल स्क्रैप डीलरो की सीओडी पर ही आटो शाखा का अधिकारी वाहनों को खरीदने के आदेश जारी कर रहे है जिन मे ऐसे बहुत सी सीओडी हैं जहां वाहन मालिकों के पैन कॉर्ड नंबर ही नकली हैं और कई ऐसी हैं जिनमें बैंक का जो कोड दिखाया गया है वह भारत देश में मान्य नहीं हैं पर आटो शाखा के अधिकारी को या इस शिकायत को सबूतों के साथ पाने पर विशेष परिवहन आयुक्त को कोई फर्क नहीं क्योंकि अगर कोई हादसा होगा तो वह तो दिल्ली की सड़को पर चलने वाले नागरिक के साथ होगा उनके या उनके परिवार के साथ तो कम से कम नहीं।

अब अंतिम बात हरियाणा से पंजीकृत नान ऑपरेशनल स्क्रैप डीलर द्वारा उसका स्क्रैप लाइसेंस खत्म होने के बाद भी आटो के लिए सीओडी जारी की जा रही हैं और आटो शाखा के एलओआई जारी करने वाले अधिकारी का कहना है यह देखना हमारा नहीं स्क्रैप शाखा का काम है और उन्हें हमको सूचित करना होगा, यानी जानकारी के बाद भी एलओआई जारी करने का साहस,

ऐसे साहसी अधिकारियों के पद पर कार्यरत रहने और सबूत उपलब्ध कराने पर भी आयुक्त परिवहन एवम विशेष परिवहन आयुक्त द्वारा कार्यवाही नही करने से तो जरुर सुरक्षित रह पाएगी दिल्ली की सड़को पर चलने वाली अकेली महिलाएं एवं अन्य जनता।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

SCAN ME

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

Nova Lifestyles — Divine Wall Hanging Collection
Luxury Décor with a Touch of Divinity
Presented by Velvet Nova

Shiva Mahamrityunjaya
Premium Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
Material: MDF
Finish: High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Shiv 12 jyotirlinga Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte Vinyl
Size: Custom Available
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
॥ श्री ॥ शिवाय नमस्तुभ्यं

Jai Shri Ram
Exquisite Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
Material: MDF
Finish: Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
जय श्री राम

Shree Krishna Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte Vinyl
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Radhe Shyam Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
हरे कृष्णा हरे कृष्णा
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे

Lord Hanuman Wall Hanging
Discover our sacred décor embodying strength, faith, and devotion, perfect for enriching your spiritual space.
Material: MDF
Finish: Sparkling Vinyl Matte
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
संकट कटे मिटे सब पीरा
जो सुमिराई हनुमत बलबीरा

Goddess Durga Wall Hanging
Explore our luxurious Goddess Durga décor pieces that embody strength and spiritual elegance for your space.
Material: MDF
Finish: High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
सर्वमंगल मांगल्ये
शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी

Evil Eye Protection Décor
Embrace positivity and ward off negativity with our exquisite Evil Eye wall décor collection.
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte or High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
EE12
THIS IS OUR HAPPY PLACE
THANKFUL GRATEFUL BLESSED

Collection Grid
Spiritual Designs for Every Space
Nova Lifestyles — A VELVET NOVA Brand dedicated to spiritual and luxury décor

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

विनायक चतुर्थी आज

प्रत्येक माह के कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि भगवान गणेश को समर्पित होता है। इस शुभ अवसर पर क्रमशः संकष्टी और विनायक चतुर्थी मनाई जाती है। संकष्टी और विनायक चतुर्थी पर भक्ति भाव से भगवान गणेश की पूजा की जाती है। साथ ही मनचाहा वरदान पाने के लिए चतुर्थी का व्रत रखा जाता है। संकष्टी और विनायक चतुर्थी के दिन व्रत रखने वाले साधकों पर भगवान गणेश की विशेष कृपा बरसती है। उनकी कृपा से साधक के सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है। साथ ही जीवन में व्याप्त संकटों से मुक्ति मिलती है।

कब है विनायक चतुर्थी ?

==========

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के अगले दिन विनायक चतुर्थी मनाई जाती है। इस साल 25 अक्टूबर को विनायक चतुर्थी है। इस शुभ अवसर पर भगवान गणेश की पूजा की जाएगी। साथ ही चतुर्थी तिथि का व्रत रखा जाएगा।

विनायक चतुर्थी शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, 25 अक्टूबर को देर रात 01 बजकर 19 मिनट पर कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी की शुरुआत होगी। वहीं, 26 अक्टूबर को सुबह 03 बजकर 48 मिनट पर कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि समाप्त होगी। चतुर्थी तिथि पर चंद्र दर्शन किया जाता है। इसके लिए 25 अक्टूबर को विनायक चतुर्थी मनाई जाएगी।

विनायक चतुर्थी शुभ योग

==========

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि पर कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं। इन योग में शिव परिवार की पूजा की जाएगी। इस शुभ अवसर पर शोभन और रवि योग का संयोग है। भद्रावास योग का संयोग रात भर है। इन योग में भगवान गणेश की पूजा करने से साधक के सुख और सौभाग्य में वृद्धि होगी।

विनायक चतुर्थी का धार्मिक महत्व

==========

भगवान गणेश को 'विघ्नहर्ता' कहा जाता है. मान्यता है कि इस दिन सच्चे मन से व्रत और पूजा करने से जीवन के सभी कष्ट, बाधाएं और संकट दूर हो जाते हैं। इस व्रत के प्रभाव से घर में सुख-समृद्धि, धन-वैभव और ऐश्वर्य का आगमन होता है। भगवान गणेश को बुद्धि और ज्ञान का देवता माना जाता है। यह व्रत रखने वाले भक्तों को भगवान गणेश ज्ञान और धैर्य का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। जो श्रद्धालु इस दिन श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और उन्हें मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। विनायक चतुर्थी के दिन दान-पुण्य करना भी बहुत ही शुभ माना जाता है, इसलिए अपनी क्षमता अनुसार अन्न और धन का दान अवश्य करें।

विनायक चतुर्थी पूजा विधि

==========

स्नान और संकल्पः सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ वस्त्र धारण करें। इसके बाद पूजा शुरू करने से पहले व्रत का संकल्प लें।

गणेश स्थापनाः घर के पूजा स्थल पर एक साफ चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाकर भगवान गणेश की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।

पूजा सामग्री अर्पित करें: भगवान गणेश को रोली, चंदन, कुमकुम का तिलक लगाएं। उन्हें लाल रंग के फूल (विशेषकर गुड़हल), अक्षत (चावल), दूर्वा (घास) अर्पित करें। दूर्वा गणेश जी को बहुत ही प्रिय है।

भोग और मंत्र जापः गणेश जी को मोदक या लड्डू का भोग लगाएं। साथ ही, उन्हें शुद्ध घी और गुड़ भी अर्पित करें। पूजा के दौरान 'ॐ गं गणपतये नमः' मंत्र का कम से कम 108 बार जाप करें।

कथा और आरतीः विनायक चतुर्थी की कथा का पाठ करें और अंत में भगवान गणेश की भावपूर्ण आरती करें।

व्रत का पारणः दिन भर उपवास रखें। संध्याकाल में चंद्रमा के दर्शन कर उन्हें अर्घ्य दें (पानी में चंद्रमा की परछाई देखें, सीधे चंद्रमा को देखने से बचें) और फिर व्रत का पारण करें।

प्रसाद वितरणः पूजा के बाद प्रसाद सभी लोगों में वितरित करें।

पत्नी वामांगी क्यों कहलाती है ?

शास्त्रों में पत्नी को वामंगी कहा गया है, जिसका अर्थ होता है बाएं अंग का अधिकारी। इसलिए पुरुष के शरीर का बायां हिस्सा स्त्री का माना जाता है।

भगवान शिव के बाएं अंग से स्त्री की उत्पत्ति हुई है जिसका प्रतीक है शिव का अर्धनारीश्वर शरीर।

हस्तरेखा विज्ञान की कुछ पुस्तकों में पुरुष के दाएं हाथ से पुरुष की और बाएं हाथ से स्त्री की स्थिति देखने की बात कही गयी है।

शास्त्रों में कहा गया है कि स्त्री पुरुष की वामांगी होती है इसलिए सोते समय और सभा में, सिंदूरदान, द्विरागमन, आशीर्वाद ग्रहण करते समय और भोजन के समय स्त्री पति के बायीं ओर रहना चाहिए। इससे शुभ फल की प्राप्ति होती।

वामांगी होने के बावजूद भी कुछ कामों में स्त्री को दायीं ओर रहने के बात शास्त्र कहता है।

शास्त्रों में बताया गया है कि कन्यादान, विवाह, यज्ञकर्म, जातकर्म, नामकरण और अन्न प्राशन के समय पत्नी को पति के दायीं ओर बैठना चाहिए।

पत्नी के पति के दाएं या बाएं बैठने संबंधी इस मान्यता के पीछे तर्क यह है कि जो कर्म संसारिक होते हैं उसमें पत्नी पति के बायीं ओर बैठती है। क्योंकि यह कर्म स्त्री प्रधान कर्म माने जाते हैं।

यज्ञ, कन्यादान, विवाह यह सभी काम पारलौकिक माने जाते हैं और इन्हें पुरुष प्रधान माना गया है। इसलिए इन कर्मों में पत्नी के दायीं ओर बैठने के नियम हैं।

पत्नी ही पति के जीवन को पूरा करती है, उसे खुशहाली प्रदान करती है, परिवार का ख्याल रखती है, और उसे वह सभी सुख प्रदान करती है जिसके वह योग्य है.

पति-पत्नी का रिश्ता दुनिया भर में बेहद महत्वपूर्ण बताया गया है.

हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध ग्रंथ महाभारत में भी पति-पत्नी के महत्वपूर्ण रिश्ते के बारे में काफी कुछ कहा गया है.

भीष्म पितामह ने कहा था कि पत्नी को सदैव प्रसन्न रखना चाहिये, क्योंकि, उसी से वंश की वृद्धि होती है, वह घर की लक्ष्मी है और यदि लक्ष्मी प्रसन्न होगी तभी घर में खुशियां आयेगी, इसके अलावा भी अनेक धार्मिक ग्रंथों में पत्नी के गुणों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है।

गरूड पुराण, जिसे लोक प्रचलित भाषा में गृहस्थों के कल्याण की पुराण भी कहा गया है, उसमें उल्लिखित पत्नी के कुछ गुणों की संक्षिप्त व्याख्या करेंगे.

गरुण पुराण में पत्नी के जिन गुणों के बारे में बताया गया है, उसके अनुसार जिस व्यक्ति की पत्नी में ये गुण हों, उसे स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिये.

पत्नी के सुख के मामले में देवराज इंद्र अति भाग्यशाली थे, इसलिये गरुण पुराण के तथ्य यही कहते हैं।

सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रियंवदा।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता।।

गरुण पुराण में पत्नी के गुणों को समझने वाला एक श्लोक मिलता है, यानी जो पत्नी गृहकार्य में दक्ष है, जो प्रियवादिनी है, जिसके पति ही प्राण हैं और जो पतिपरायणा है, वास्तव में वही पत्नी है.

गृह कार्य में दक्ष से तात्पर्य है वह पत्नी जो घर के काम काज संभालने वाली हो, घर के सदस्यों का आदर-सम्मान करती हो, बड़े से लेकर छोटों का भी ख्याल रखती हो।

जो पत्नी घर के सभी कार्य जैसे- भोजन बनाना, साफ-सफाई करना, घर को सजाना, कपड़े-बर्तन आदि साफ करना, यह कार्य करती हो वह एक गुणी पत्नी कहलाती है.

बच्चों की जिम्मेदारी ठीक से निभाना, घर आये अतिथियों का मान-सम्मान करना, कम संसाधनों में भी गृहस्थी को अच्छे से चलाने वाली पत्नी गरुण पुराण के अनुसार गुणी कहलाती है, ऐसी पत्नी हमेशा ही अपने पति की प्रिय होती है।

प्रियवादिनी से तात्पर्य है मीठा बोलने वाली पत्नी, सदैव संयमित भाषा में बात करने वाली, धीरे-धीरे व प्रेमपूर्वक बोलने वाली पत्नी ही गुणी पत्नी होती है। ऐसी स्त्री जिस घर में हो वहां कलह और दुर्भाग्य कबीनहीं आता।

शादी के बाद नए लोगों से जुड़े रीति-रिवाज को स्वीकारना ही स्त्री की जिम्मेदारी है, पत्नी को एक विशेष प्रकार के धर्म का भी पालन करना होता है, विवाह के पश्चात उसका सबसे पहला धर्म होता है कि वह अपने पति व परिवार के हित में सोचे, व ऐसा कोई काम न करे जिससे पति या परिवार का अहित हो।।

चना

चना मात्र एक दाल या बेसन ही नही अपितु कई रोगों के उपचार की गुणवान औषधि भी है

जानिए चना के औषधीय गुण

आयुर्वेद में चने की दाल और चने को शरीर के लिए स्वास्थवर्धक बताया गया है।

चने के सेवने से कई रोग ठीक हो जाते हैं। क्योंकि इसमें प्रोटीन, नमी, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम और विटामिन्स पाये जाते हैं।

स्वास्थ्य के लिए भी यह दूसरी दालों से पौष्टिक आहार है। चना शरीर को बीमारियों से लड़ने में सक्षम बनाता है। साथ ही यह दिमाग को तेज और चेहरे को सुंदर बनाता है। चने के सबसे अधिक फायदे इन्हे अंकुरित करके खाने से होते है !

1 सुबह खाली पेट चने से मिलते है कई फायदे

शरीर को सबसे ज्यादा पोषण काले चनों से मिलता है। काले चने अंकुरित होने चाहिए। क्योंकि इन अंकुरित चनों में सारे विटामिन्स और क्लोरोफिल के साथ फास्फोरस आदि मिनरल्स होते हैं जिन्हें खाने से शरीर को कोई बीमारी नहीं लगती है। काले चनों को रातभर भिगोकर रख लें और हर दिन सुबह दो मुट्ठी खाएं। कुछ ही दिनों में फर्क दिखने लगेगा !

2 भीगे चने से लाभ

रातभर भिगे हुए चनों से पानी को अलग कर उसमें अदरक, जीरा और नमक को मिक्स कर खाने से कब्ज और पेट दर्द से राहत मिलती है !

3 अंकुरित चना

शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए अंकुरित चनों में नींबू, अदरक के टुकड़े, हल्का नमक और काली मिर्च डालकर सुबह नाश्ते में खाएं। आपको पूरे दिन की एनर्जी मिलेगी !

4 चने का सत्तू

चने का सत्तू भी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी औषधि है। शरीर की क्षमता और शक्ति को बढ़ाने के लिए गर्मीयों में आप चने के सत्तू में नींबू और नमक मिलकार पी सकते हैं। यह भूख को भी शांत रखता है !

5 पथरी की समस्या में चना

पथरी की समस्या अब आम हो गई है। दूषित पानी और दूषित खाना खाने से पथरी की समस्या बढ़ रही है। गाल ब्लैडर और किड़नी में पथरी की समस्या सबसे अधिक हो रही है। ऐसे में रातभर भिगोए चनों में थोड़ा शहद मिलाकर रोज सेवन करें। नियमित इन चनों का सेवन करने से पथरी आसानी से निकल जाती है। इसके अलावा आप आटे और चने का सत्तू को मिलाकर बनी रोटियां भी खा सकते हो !

6 शरीर की गंदगी साफ करना

काला चना शरीर के अंदर की गंदगी को अच्छे से साफ करता है। जिससे डायबिटीज, एनीमिया आदि की परेशानियां दूर होती हैं। और यह बुखार आदि में भी लाभ देता है !

7 डायबिटीज के रोगियों के लिए

चना ताकतवर होता है। यह शरीर में ज्यादा मात्रा में ग्लूकोज को कम करता है जिससे डायबिटीज के मरीजों को फायदा मिलता है। इसलिए अंकुरित चनों को सेवन डायबिटीज के रोगियों को सुबह-सुबह करना चाहिए !

8 मूत्र संबंधी रोग

मूत्र से संबंधित किसी भी रोग में भुने हुए चनों का सवेन करना चाहिए। इससे बार-बार मूत्र आने की दिक्कत दूर होती है। भुने हुए चनों में गुड मिलाकर खाने से यूरीन की किसी भी तरह समस्या में राहत मिलती है !

9 पौरुष शक्ति के लिये

अधिक काम और तनाव की वजह से पुरूषों में कमजोरी होने लगती है। ऐसे में अंकुरित चना किसी वरदान से कम नहीं है। पुरूषों को अंकुरित चनों को चबा-चबाकर खाने से कई फायदे मिलते हैं। इससे पुरूषों की कमजोरी दूर होती है। भीगे हुए चनों के पानी के साथ शहद मिलाकर पीने से पौरूषत्व बढ़ता है। और नपुंसकता दूर होती है !

10 पीलिया के रोग में

पीलिया की बीमारी में चने की 100 ग्राम दाल में दो गिलास पानी डालकर अच्छे से चनों को कुछ घंटों के लिए भिगो लें और दाल से पानी को अलग कर लें अब उस दाल में 100 ग्राम गुड़ मिलाकर 4 से 5 दिन तक रोगी को देते रहें। पीलिया से लाभ जरूरी मिलेगा। पीलिया रोग में रोगी को चने की दाल का सेवन करना चाहिए !

11 कुष्ठ रोग में चना

कुष्ठ रोग से ग्रसित इंसान यदि तीन साल तक अंकुरित चने खाएं। तो वह पूरी तरह से ठीक हो सकता है !

12 गर्भावस्था

गर्भवती महिला को यदि मितली या उल्टी की समस्या बार-बार होती हो। तो उसे चने का सत्तू पिलाना चाहिए।

13 अस्थमा रोग में

अस्थमा से पीड़ित इंसान को चने के आटे का हलवा खाना चाहिए। इस उपाय से अस्थमा रोग ठीक होता है !

14 त्वचा की समस्या में

चने के आटे का नियमित रूप से सेवन करने से थोड़े ही दिनों में खाज, खुजली और दाद जैसी त्वचा से संबंधित रोग ठीक हो जाते हैं !

15 पुरानी कफ़

लंबे समय से चली आ रही कफ की समस्या में भुने हुए चनों को रात में सोते समय अच्छे से चबाकर खाएं और इसके बाद दूध पी लें। यह कफ और सांस की नली से संबंधित रोगों को ठीक कर देता है !

16 चेहरे की चमक के लिए चना

चेहरे की रंगत को बढ़ाने के लिए नियमित अंकुरित चनों का सेवन करना चाहिए। साथ ही आप चने का फेस पैक भी घर पर बनाकर इस्तेमाल कर सकेत हो। चने के आटे में हल्दी मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम होती है। महिलाओं को हफ्ते में कम से कम एक बार चना और गुड जरूर खाना चाहिए !

17 दाद खाज और खुजली

एक महीने तक चने के आटे की रोटी का सेवन करने से त्वचा की बीमारियां जैसे खुजली, दाद और खाज खत्म हो जाती हैं !

18 धातु पुष्ट

दस ग्राम शक्कर और दस ग्राम चने की भीगी हुई दाल को मिलाकर कम से कम एक महीने तक खाने से धातु पुष्ट होती है !

चने को अपने भोजन में सम्मिलित करें। यह किसी औषधि से कम नहीं है।

अंकुरित चनों का प्रयोग प्रतिदिन किया जा सकता हैं।

सही न्याय से ही समाज में समता प्रकट होती है। जब तक न्याय सही नहीं होगा तब तक मानव समाज सुखी नहीं हो सकता।

सही न्याय से ही समाज में समता पैदा होती है और जहां समता है वहां सुख है। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार, अपने ज्ञान, कर्म, भोग और विश्राम के लिए, बिना किसी के अधिकारक्षेत्र का हनन किये, पूर्ण स्वतंत्रता मिल जाये है तो इसे न्याय कहते हैं। न्याय व्यवस्था सही नहीं होने के कारण ही, समाज में असमानता फैल जाती है और यह असमानता ही सभी दुखों को पैदा करने वाली महामारी है। न्याय व्यवस्था सही नहीं होने के कारण, पूरे मानव समाज में प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी आयवर्ग और आयुवर्ग का क्यों न हो? सबके सब दुःखी रहते हैं। भारत में भी सर्वोच्च संस्था 'संविधान' है। लेकिन जब स्थितियां बदलतीं हैं, या नई स्थितियां पैदा होती हैं तो उसमें भी समय/परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन/बदलाव की आवश्यकता होती है। परमात्मा के अतिरिक्त, ऐसा कोई भी नियम नहीं हो सकता, जो सार्वजनिन, समकक्ष, समवर्ती हो। समय/परिस्थिति के अनुसार पुराने नियम की महत्ता को सारगर्भित करते हुए, बदली हुई परिस्थिति और अधिकांश लोगों के लिए न्यायपरक भूमिका निभाने वाले तथ्य को, ग्रहण करना श्रेयस्कर है। इसीलिए हमारे संविधान निर्माताओं ने 'संविधान संशोधन' की अवधारणा, संशोधन के विधिवत नियम और संसद में मत-आधार की प्रतिस्थापना की थी। ध्यान रहे कि कोई भी किताब, नियम, उद्घोषणा, कभी स्थाई नहीं रह सकती, इसलिए विधि-निर्माताओं ने भी अपनी समस्त शक्तियों/ज्ञान/जानकारियों का उपयोग करते हुए भी आने वाली अपनी संततियों को, बंधनों में जकड़ने की नहीं, अपितु न्याय के लिए स्वतंत्रता की अद्भुत संकल्पना सौंपी है ताकि न्याय की जीत हो सके। जीवंतता की जीत हो सके। समाज की जीत हो सके।।

बार-बार रगड़ते हैं आंखें तो तुरंत कर दें बंद, वरना जीवन में छा जाएगा...

बार-बार आंखें रगड़ने से न सिर्फ उनकी नाजुक झिल्ली पर असर पड़ता है, बल्कि इससे संक्रमण, सूजन और स्थायी दृष्टि हानि का खतरा भी बढ़ जाता है।

अक्सर लोग धुआं या फिर आंखों पर जलन होने पर बार-बार रगड़ते हैं, जो आंखों के लिए नुकसानदायक हो सकता है। हालांकि, बहुत से लोग आंखों में जलन और खुजली को थकान, नींद की कमी या एलर्जी के कारण मानते हैं और आंखें मलने लगते हैं, लेकिन नेत्र रोग विशेषज्ञों के अनुसार यह एक खतरनाक आदत है, जो धीरे-धीरे आपकी आंखों की रोशनी को भी कमजोर कर सकती है। दरअसल, आंखें हमारे शरीर की सबसे कीमती और नाजुक अंग है। आंखों को रगड़ने जैसी छोटी-सी आदत भी बड़ा नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसे में अगली बार जब आंखों में जलन या खुजली महसूस हो, तो कुछ जरूरी बातों का खास ध्यान रखें।

नेत्र रोग विशेषज्ञ के मुताबिक, बार-बार आंखें रगड़ने से न सिर्फ उनकी नाजुक झिल्ली पर असर

पड़ता है, बल्कि इससे संक्रमण, सूजन और स्थायी दृष्टि हानि का खतरा भी बढ़ जाता है। कई मामलों में यह केराटोकोनस नामक बीमारी का भी कारण बन सकता है, जिसमें कॉर्निया पतली होकर बाहर की ओर उभर आती है और व्यक्ति को धुंधला दिखाई देने लगता है। आइए आपको बताते हैं बार-बार आंखें रगड़ने से क्या नुकसान हो सकते हैं और इस आदत से बचने के लिए क्या करना चाहिएः-

1. नजर कमजोर होना हमारी आंख का कॉर्निया बेहद संवेदनशील और मुलायम होता है. जब बार-बार आंखें रगड़ते हैं, तो इस पर माइक्रो स्क्रैच पड़ जाते हैं. जिसके चलते समय के साथ कॉर्निया पतली पड़ने लगती है और दृष्टि धुंधली हो जाती है।

2. संक्रमण का खतरा बार-बार आंखों को रगड़ने से हाथों पर मौजूद धूल, बैक्टीरिया और वायरस सीधे आंखों में पहुंच जाते हैं. इससे इंफेक्शन या रेडनेस जैसी समस्याएं हो सकती हैं. अगर आंख में खुजली हो रही है, तो उसे रगड़ने के बजाय साफ पानी से धोएं।

3. डार्क सर्कल्स और सूजन बार-बार रगड़ने से आंखों के आसपास की स्किन पर ब्लड वेसल्स फट जाती हैं, जिससे काले घेरे और सूजन बढ़ने लगती है.

कैसे रखें ख्याल

1. ठंडे पानी से आंखें धोएं.

2. आई ड्रॉप या आर्टिफिशियल टियर्स का उपयोग करें.

3. एलर्जी या डस्ट से बचने के लिए बाहर जाते समय सनग्लास पहनें.

4. स्क्रीन टाइम कम करें और हर 20 मिनट में आंखों को आराम दें।

आस्था का केंद्र है सततवाहिनी के पावन तट पर बना सूर्य मन्दिर

छठ पर्व पर सतत वाहिनी नदी के पावन तट पर उमड़ती है श्रद्धालुओं की भारी भीड़

विंढमगंज (सोनभद्र), उत्तर प्रदेश झारखण्ड सीमा को विभाजित करने वाली सततवाहिनी व कुकुरडुबा नदी के संगम स्थल पर स्थित विंढमगंज का सूर्य मंदिर पांच प्रांतों के श्रद्धालुओं का आस्था का प्रमुख केंद्र है।

नदी के संगम स्थल पर स्थित इस मंदिर की विशेष महत्व इसलिए बढ़ जाती है कि पुराणों में यह विधान है कि छठ पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष के छट्ठी को मनाए जाने वाला एक हिंदू पर्व है। मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। यह वैदिक काल से यह चला रहा है। इस त्यौहार के अनुष्ठान कठोर है यह 4 दिन की अवधि में मनाए जाते हैं। इसमें पवित्र स्नान, उपवास और पीने के पानी से दूर रहना, लंबे समय तक पानी में खड़ा होना और छठ पर्व सुर्य, प्रकृति, जल, वायु और उनकी बहन छठी मैया को व्रत की महिलाएं समर्पित करते हैं ताकि उन्हें पृथ्वी पर जीवन की व्यवस्था को बहाल करने के लिए पूजा की जाती है।

इस पर्व में कोई मूर्ति पूजा शामिल नहीं है। सिर्फ भगवान भास्कर को ही देव मानकर पर्व मनाया जाता है। सन क्लब सोसायटी के द्वारा इस संगम स्थल पर

क्षेत्र के स्थानीय लोगों से 5 रुपए के आर्थिक सहयोग से विशाल सूर्य मंदिर बना है।

मंदिर की आधारशिला सन्-2000 में रखी गई थी, जो कई वर्षों की कड़ी मेहनत व लगन से बनकर तैयार हुआ। बताया जाता है की इस संगम स्थल पर स्थापित सूर्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद से इतना जीवंत आ गया है कि यहां मनौती मांगने के बाद अवश्य ही पूरी होती है।

झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के दर्जनों गांवों से हजारों छठी व्रत करने वाली महिलाएं इस पर्व पर आती हैं और अपने दुःखों को भगवान भास्कर के समक्ष मनोती मान कर जाती है। 1 वर्ष बीतने के पश्चात उनकी मनौती पूर्ण होने के बाद गाजेबाजे के साथ छठ पर्व करने के लिए अपने सपरिवार आती है। मनोती पूरा होने के पश्चात व्रती महिलाएं रोड पर दंडवत व छठी मैया की जयकारा के साथ जयघोष करते हुए छठ घाट तक भगवान सूर्य को नमन करते हुए आती हैं जिससे पूरा इलाका छठ माई की जय सूर्य भगवान की जय से गुंजयमान हो जाता है।

सततवाहिनी नदी व कुकुर डूबा नदी के संगम स्थल पर स्थापित सुर्य मंदिर, सोनभद्र सहित झारखंड, बिहार छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों का भक्ति, विश्वास का प्रतीक है। यहां पर दूर दराज से लोग छठ महापर्व करने के लिए आते हैं।

ऐसी मान्यता है कि दो नदियों के संगम स्थल पर छठ महापर्व करने से मनोकामना पूर्ण होती है। उत्तर प्रदेश, झारखंड को विभाजित करने वाले सतत वाहिनी नदी के संगम तट पर स्थित सूर्य मंदिर की महिमा अपार है। यहां पर पूरे साल भक्तों का ताता लगा रहता है। जिले का सबसे प्राचीन भव्य सूर्य मंदिर है यहां हर साल कई प्रांत के लोग छठ महापर्व करने के लिए दूर-दूर से आते हैं।

ग्रीन टी किन लोगों को नहीं पीनी चाहिए...

आयुर्वेद हो या मॉडर्न साइंस, दोनों मानते हैं कि कुछ लोगों को ग्रीन टी से दूरी बनाकर रखनी चाहिए, या फिर इसे बहुत कम मात्रा में पीना चाहिए. तो बिना देर किए आइए जानते हैं उन लोगों के बारे में,

आजकल हर कोई फिटनेस और अच्छी सेहत के लिए ग्रीन टी पीता है. कुछ लोग तो इसे पानी की तरह पीने लगे हैं. इसमें कोई शक नहीं कि ग्रीन टी एंटीऑक्सीडेंट्स (Antioxidants) से भरी होती है और इसके कई कमाल के फायदे हैं. लेकिन, क्या आप जानते हैं कि यह सबके लिए फायदेमंद नहीं है?

1. प्रेग्नेंट लेडी और ब्रेस्टफीडिंग कराने वाली महिलाएं प्रेग्नेंसी (Pregnancy) के दौरान डॉक्टर अक्सर कैफीन (Caffeine) कम लेने की सलाह देते हैं. ग्रीन टी में कैफीन होता है, जो ज्यादा मात्रा में लेने पर बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकता है. वहीं, स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए भी कैफीन बच्चे तक पहुंच सकता है, जिससे उसे नींद की समस्या हो सकती है. इसलिए, डॉक्टर की सलाह के बिना ग्रीन टी से दूर ही रहें.

2. आयरन (Iron) की कमी से जूझ रहे लोग अगर आपके शरीर में खून (आयरन) की कमी है, जिसे एनीमिया (Anemia) कहते हैं, तो आपको ग्रीन टी से बचना चाहिए. ग्रीन टी में टैनिन (Tannins) नाम का तत्व होता है, जो खाने से आयरन को ठीक से सोखने (Absorb) नहीं देता.

इससे आपकी आयरन की कमी की समस्या और भी बढ़ सकती है.

3. पेट की समस्या वाले लोग जिन लोगों को अक्सर पेट में एसिडिटी (Acidity), अल्सर (Ulcer) या पेट दर्द की शिकायत रहती है, उन्हें ग्रीन टी खाली पेट तो बिल्कुल नहीं पीनी चाहिए. ग्रीन टी में मौजूद टैनिन और कैफीन पेट में एसिड की मात्रा को बढ़ा सकते हैं, जिससे जलन या दर्द हो सकता है.

4. नींद और एंग्जायटी की समस्या अगर आपको ठीक से नींद नहीं आती या आप बहुत ज्यादा तनाव (Stress) या बेचैनी (Anxiety) महसूस करते हैं, तो ग्रीन टी आपकी दिक्कत बढ़ा सकती है. इसमें मौजूद कैफीन दिमाग को एक्टिव कर देता है, जिससे बेचैनी बढ़ सकती है और नींद आने में और भी मुश्किल हो सकती है.

5. दिल की बीमारी वाले मरीज जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर (BP) या दिल से जुड़ी कोई दूसरी समस्या है, उन्हें ज्यादा ग्रीन टी नहीं पीनी चाहिए. कैफीन दिल की धड़कन (Heart Rate) को तेज कर सकता है और ब्लड प्रेशर को हल्का बढ़ा सकता है, जो दिल के मरीजों के लिए सही नहीं है.

6. लिवर (Liver) की समस्या से जूझ रहे लोग वैसे तो ग्रीन टी लिवर के लिए अच्छी मानी जाती है, लेकिन अगर आप ग्रीन टी एक्सट्रेक्ट (Extract) वाले सप्लीमेंट्स (Supplements) बहुत ज्यादा ले रहे हैं, तो यह खतरनाक हो सकता है. ग्रीन टी में कैटेचिन (Catechins) नामक तत्व होता है. बहुत अधिक मात्रा में कैटेचिन लिवर को नुकसान पहुंचा सकता है.

7. किडनी की गंभीर समस्या वाले लोग ग्रीन टी एक अच्छा मूत्रवर्धक (Diuretic) होती है, यानी यह बार-बार पेशाब लाती है. किडनी की गंभीर समस्या वाले मरीजों के लिए यह जरूरी है कि वे तरल पदार्थों (Fluids) का संतुलन बनाए रखें, जिसके लिए उन्हें अपने डॉक्टर से पूछकर ही कोई पेय लेना चाहिए.

जीवन अनमोल है, आपका घर पर इंतजार है, यह याद रहे सदा

परिवहन विशेष न्यूज

राह चलते वाहन की गति उतनी ही रखिए, जितने में विपरीत परिस्थितियां आने पर ,वाहन को बिना क्षति नियंत्रित किया जा सके, मनः स्थिति निर्मल रखो जब आप सफर पर हो (यानी नशा से दूरी- है बहुत जरूरी)।।

सड़क हादसों में,छतरपुर जिले की, एनसीआरबी की रिपोर्ट चौंकाने वाली।

सन 2024 में छतरपुर जिले में, 750 सड़क हादसे हुए, औसतन प्रतिदिन दो सड़क हादसों से भी ज्यादा,

सड़क हादसों में 300 राहगीरों ने अपनी जान खोई यानी छतरपुर जिले में सन-2024 में सड़क हादसों, मृत्यु दर, प्रतिदिन लगभग एक, मौत का औसत आ रहा है।

365 दिन में 300 मौतें।

यदि सभी प्राकृतिक आपदाएं जोड़ लीं जाएं, जैसे कॉविड-19, आकाशीय बिजली, बाढ़ का पानी, ताल- तलैया- तालाबों में डूबने और गंभीर बीमारियां इत्यादि को सम्मिलित कर लिया जाए, तब भी छतरपुर जिले की सभी अन्य कारणों से हुई मौतें सड़क हादसों में खोई गईं जिंदगियों की बराबरी नहीं कर सकती।

इसलिए चेतने का वक्त है। यह कोई प्राकृतिक आपदा नहीं है, यह मानव निर्मित, मानव निवारक, जानबूझकर की गई लापरवाही का परिणाम है।

यह भी सत्य है कि, सड़क हादसों के मामलों में, अपने अमूल्य मानव शरीर की सुरक्षा की जवाबदेही, शासकीय सिस्टम पर न छोड़िए, इसलिए सड़क हादसों में शरीर बचाने हेतु, शासकीय सिस्टम पर आश्रित न रहिए, यदि आश्रित रहना ही है तो, सड़क हादसे रोकने हेतु अपने पारिवारिक संस्कारों पर आश्रित रहिए, क्योंकि राह में चलते समय, पारिवारिक संस्कार, हमेशा साथ रहेंगे, परंतु शासकीय सिस्टम का, राह चलते साथ रहना संभव नहीं है।

एक राहगीर के साथ, पारिवारिक संस्कार होंगे, तब वह, लाख कोशिश होने के बावजूद, जियो और जीने दो, के सिद्धांत का पालन करते हुए ही वाहन चलाएगा, क्योंकि शासकीय सिस्टम के समक्ष, गुजरने पर तो, केवल उतने समय के लिए ही, भयवश वह भी आर्थिक चालान के कारण, जियो और जीने दो, का पालन राहगीर (वाहन चालक) करता है, परंतु, पारिवारिक संस्कार साथ होने पर, वह बाहन को हमेशा ही, जियो और जीने दो, के सिद्धांत के पालन का, प्रयोग करते हुए ही चलाता है। पारिवारिक संस्कार होने के कारण, वाहन चालक, स्वयं की जान और सामने वाले की जान में भिन्नता भी नहीं समझता है और यदि धोखे से

सड़क हादसा हो भी जाए, तो पारिवारिक संस्कारवान, व्यक्ति, कभी भी एक्सीडेंटल को रास्ते में मरणासन्न हालत में पड़ा हुआ, छोड़कर नहीं जा सकता है।

इसलिए सड़क हादसे रोकने हेतु, अपने संस्कारों पर आश्रित रहिए, न कि, सिस्टम की वैधानिक कानूनी कार्रवाई पर,

राह चलते, यातायात नियमों का पालन करते हुए ही, गंतव्य पहुंचने का रास्ता चुनिए। जीवन अनमोल है-वाहन की गति और मन की मति (नशा से दूरी, है बहुत जरूरी) पर नियंत्रण रखते हुए ही, सुरक्षित गंतव्य प्राप्त किया जा सकता।।

हां, एक बात और न भूलिए, राह में पड़े, एक्सीडेंटल को, जब तक हॉस्पिटल्स न करा दें, तब तक अपनी यात्रा में विलंब रखिए, क्योंकि यह भी पारिवारिक संस्कारों को दर्शाता है--जहाँ दया तहाँ धर्म, जहाँ लोभ तहाँ पाप।

ईश्वर न करें कि, किसी के साथ ऐसा हो, फिर भी राह में पड़े एक्सीडेंटल को चिकित्सालय पहुंचने या चिकित्सालय में, उपचार मिलने में असुविधा आ रही हो तो,

1. राजेंद्र प्रसाद, सड़क सुरक्षा मित्र, छतरपुर, मोबाइल नंबर- 9425144307 पर, केवल छतरपुर जिला हेतु,

और दिल्ली में

2. टोलवा ट्रस्ट 09811732095 पर 24 घंटे संपर्क करिए।

जीवन अनमोल है- राह चलते वाहन की गति उतनी ही रखिए, जितने में विपरीत परिस्थितियां आने पर ,बाहन को बिना क्षति के, नियंत्रित किया जा सके, और,मनः स्थिति भी निर्मल हो (यानी नशा से दूरी- है बहुत जरूरी)।।

प्रत्येक राहगीर की यात्रा सुरक्षित रहे। बैठें सुरक्षित, चलें सुरक्षित, राह में ना हो, कोई बाधा।।

पीएनबी घोटाला, मेहुल चोकसी का प्रत्यर्पण और भारत की वित्तीय नैतिकता पर प्रश्नचिन्ह

भारत के बैंकिंग तंत्र पर अब निर्णायक कार्रवाई का समय

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : बेल्जियम की एक अदालत द्वारा अक्टूबर 2025 में फरार हीरा कारोबारी मेहुल चोकसी के भारत प्रत्यर्पण को मंजूरी देना देश की वित्तीय न्याय-व्यवस्था के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है।

मेहुल चोकसी, अपने भांजे नीरव मोदी के साथ, पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) में हुए 13,000 करोड़ रुपये से अधिक के महाघोटाले का मुख्य आरोपी है। यह घोटाला केवल एक वित्तीय अपराध नहीं, बल्कि देश के बैंकिंग तंत्र में वर्षों से पनप रही लापरवाही, भ्रष्टाचार और मिलीभगत का उजागर रूप है।

घोटाले की जड़ें और प्रणालीगत विफलताएँ -

पीएनबी घोटाले में फर्जी लेटर ऑफ अंडरटेकिंग (LoU) जारी कर विदेशी बैंकों से करोड़ों डॉलर का ऋण लिया गया।

बिना किसी गारंटी और निगरानी के, बैंक के अंदरूनी अधिकारी इन फर्जी लेनदेन में शामिल रहे।

यह घटना भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की विफलता का जीता-जागता उदाहरण है।

पीएनबी में इस घोटाले से पहले भी कई संदिग्ध प्रकरण सामने आ चुके हैं –

2011-12 में फर्जी ऋण वितरण, जिसमें फर्जी कंपनियों को करोड़ों का लोन देकर बाद में उसे एनपीए घोषित किया गया।

ब्रैडी हाउस शाखा (मुंबई) से अवैध विदेशी ट्रांजेक्शन, जिससे नीरव मोदी और चोकसी दोनों ने अरबों रुपये विदेश भेजे।

2018 के बाद एनपीए में लगातार वृद्धि, जिससे देश के वित्तीय संस्थान कमजोर हुए।

इन घटनाओं ने यह साबित किया कि बैंकिंग व्यवस्था में "सुरक्षा और सत्यनिष्ठा" के स्थान पर "सांठगांठ और स्वार्थ" ने जड़ें जमा ली हैं।

जनधन का अपमान और आम जनता की लूट

जब देश का आम नागरिक, ट्रक चालक, परिवहन व्यवसायी, मजदूर और किसान अपने पसीने की कमाई से टैक्स भरता है,

तब यह जानकर अत्यंत पीड़ादायक है कि उन्हीं पैसों से बने बैंकों को कुछ गिने-चुने पूंजीपति लूटकर विदेश भाग जाते हैं।

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष – उफ्तत्सा (राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) - का यह स्पष्ट मत है कि —

यह घोटाला केवल बैंक का नहीं, बल्कि देश की जनता के विश्वास और परिश्रम की लूट है।

यह भारत की आर्थिक नीति और शासन प्रणाली पर गहरा प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।

सरकार और न्यायिक संस्थानों से मांग

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष – उफ्तत्सा (राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी)

ने कहा है कि ₹अब समय आ गया है जब भारत को इन घोटालों के प्रति शून्य सहनशीलता नीति अपनानी होगी।"

हमारी मांगें निम्नलिखित हैं:

1. पीएनबी सहित सभी सार्वजनिक बैंकों की आंतरिक और बाहरी ऑडिट प्रणाली की पूर्ण पारदर्शी जांच की जाए।

2. घोटालों में शामिल बैंक अधिकारियों, ऑडिटरों और राजनीतिक संरक्षणदाताओं की जवाबदेही तय की जाए।

3. फरार आर्थिक अपराधियों की संपत्ति जब्त कर, उसका उपयोग जनकल्याण और बुनियादी ढांचे में किया जाए।

4. एक स्वतंत्र बैंकिंग सतर्कता आयोग (Independent Banking Vigilance Authority) का गठन किया जाए।

5. अंतरराष्ट्रीय वित्तीय एजेंसियों के साथ समन्वय कर भगोड़ों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई और प्रत्यर्पण प्रक्रिया तेज की जाए।

ट्रक ट्रांसपोर्ट समुदाय की भूमिका और संकल्प

देश के ट्रक चालक, ट्रांसपोर्टर और मोटर मालिक — जिनकी मेहनत पर देश की अर्थव्यवस्था की गाड़ी चलती है —

यह उम्मीद करते हैं कि सरकार अब इन आर्थिक अपराधियों के खिलाफ कठोरतम दंड सुनिश्चित करे।

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा:

"हमारे समुदाय का हर सदस्य ईमानदारी से टैक्स देता है, नियमों का पालन करता है, लेकिन जब देश का धन कुछ भ्रष्ट व्यापारी लूट लेते हैं और सिस्टम मौन रहता है — तो यह पूरे राष्ट्र के साथ अन्याय है। अब कार्रवाई केवल दिखावटी नहीं, निर्णायक होनी चाहिए।"

निष्कर्ष - मेहुल चोकसी का प्रत्यर्पण सिर्फ एक व्यक्ति की वापसी नहीं, बल्कि यह भारतीय न्याय और जनआवाज की जीत है।

यह उन सभी ताकतों के लिए चेतावनी है जिन्होंने भारत की आर्थिक आत्मा को छलने की कोशिश की।

अब देश यह संकल्प ले कि कोई भी अपराधी – चाहे वह कितना भी बड़ा उद्योगपति या प्रभावशाली क्यों न हो –

"जनधन की लूट से बच नहीं सकेगा"

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष – उफ्तत्सा (राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी)

(ट्रक, ट्रांसपोर्टर व सारथी समाज के अधिकार, सम्मान और न्याय के लिए समर्पित संगठन)

आपातकालीन स्थिति में सहयोग करना (घटना) आग

परिवहन विशेष न्यूज

22/10/25 सुबह 11:00am के करीब जब हम केशवपुर मंडी में पहुंचे आपदा मित्र पंकज और आपदा सखी सीमा वहां की पब्लिक से हमने रात के हादसे के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया की कल दिनांक 21 अक्टूबर 2025 रात 11:30 pm को केशवपुर मंडी में आग लगी जिससे इस मंडी मे भारी नुकसान हुआ यहां चाय की टपरी लगाने वाले राम चंद्र जी चीन की उम्र 104 साल है जोकि यहां चाय की दुकान लगाते है उन्होंने बताया कि रात को वह जब सो रहे थे तब मंडी मे कुछ लोग सब्जी के करेत के ऊपर बॉम्ब जल रहे थे जब राम चंद्र जी ने उठकर इसका विरोध किया तब भी वो नहीं माने बॉम्ब फटने से अचानक जमीन पर पड़े कचो में आग लग गई और साथ में पड़े प्लास्टिक के करैत में भी आग पकड़ ली उसके जरिए बिजली के ट्रांसफार्मर तक पहुंच गई जिससे बहुत बड़ा ब्लास्ट हुआ जिससे आग चारों तरफ फैल गई जिससे भगदड़ मच गई यहां प्लास्टिक का सामान बिजली का ट्रांसफार्मर सब्जी के करेत सब्जियां सब्जी की रेडी और राम चंद्र जी का चाय की दुकान का सारा समान जल गया और जमीन मे सारा तब्दील हो गया पेड़ भी जल गए यह के लोगो के मुताबिक मौके पर 14 एम्बुलेंस पहुंची और 8 फायर की गाड़ियां पहुंची थी सुबह जब हम वहां पर थे तब भी 1 फायर की गाड़ी आई थी और मंडी के प्रधान श्री जस्सा जी भी रात मे मौके पर मौजूद थे और अपने 15 से 20 लोगो को मदद के लिए लाए थे साथ के कालोनी वाले लोगों ने काफी मदद की जिससे आग ज्यादा दूर तक नहीं फैली 1 आदमी जो वहां नशे मे पड़ा रहता है वो आधा

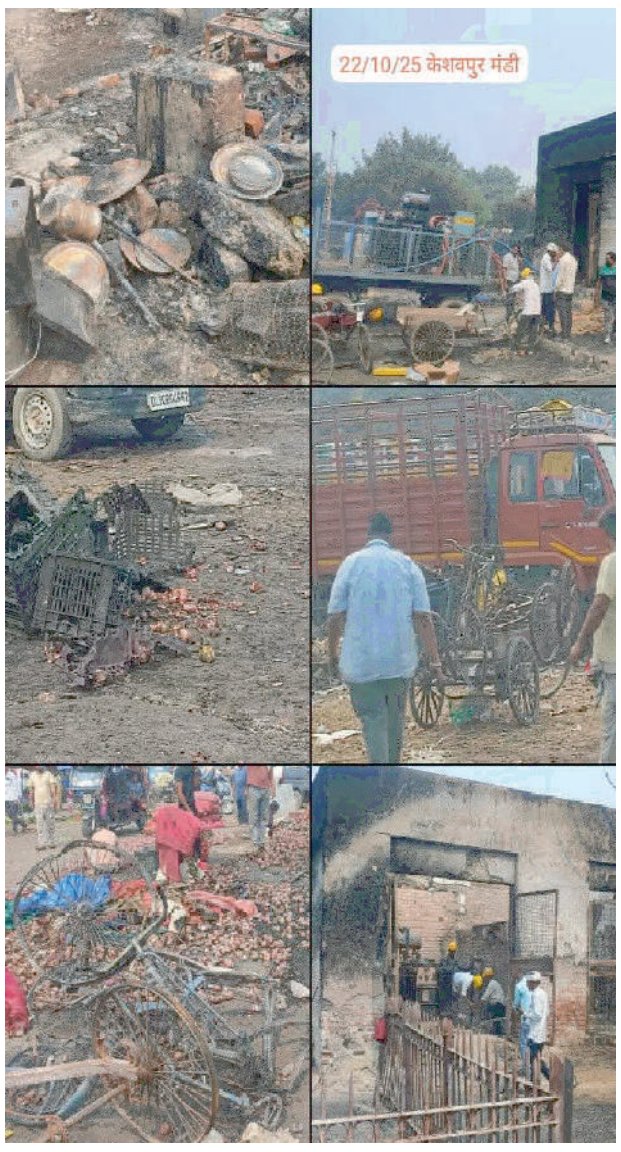

जल गया और उसे मेडिकल टीम अपने साथ ले गए यह जानकारी वहां पर मंडी की पब्लिक और प्रधान ने दी आपदा मित्र पंकज दास को और आपदा सखी सीमा को मौके से यह रिपोर्ट।

क्या सलाहकार बेनेगल नरसिंग राऊ वाकई इतने दूरदर्शी थे? संविधान निर्माण में दलितहितों की वकालत ने खड़े किए कई सवाल

एक प्रश्न आज भी प्रासंगिक है क्या भारत के संवैधानिक सलाहकार बेनेगल नरसिंग राऊ वाकई ब्राह्मण होकर भी ब्राह्मणवाद और जातिवाद के विरुद्ध थे?

उत्तरप्रदेश। भारत के संवैधानिक सलाहकार बेनेगल नरसिंग राऊ का संविधान के इतिहास में एक नाम हमेशा उल्लेखनीय रहा है। आजकल यह चर्चा फिर से जोर पकड़ रही है कि क्या बेनेगल नरसिंग राऊ ने अपनी दूरदर्शिता और संवेदनशीलता से भारतीय समाज के सबसे वंचित तबकों दलितों और अछूतों के अधिकारों की नींव रखी थी, या फिर वे अपने ही वर्गीय हितों के विरुद्ध खड़े हुए एक असामान्य ब्राह्मण थे?

भारत के संवैधानिक सलाहकार बेनेगल नरसिंग राऊ की तारीफ करते हुए लोगो ने बताया कि पंडित बेनेगल नरसिंग राऊ जी की भूमिका केवल सलाहकार तक सीमित नहीं थी। वे बड़े ही दूरदर्शी, देशहितेषी एवं संवेदनशील और अच्छे विचारों वाले एक महान व्यक्ति थे। जो देश में ग़रीब अछूतों पर हो रहें अमानवीय अत्याचारों से दुःखी थे। इसीलिए वे ब्राह्मण होकर भी ब्राह्मणवाद और जातिवाद के विरुद्ध खड़े हुए एक असामान्य ब्राह्मण थे। कहा जाता है कि उन्होंने संविधान की प्रारूप-रचना के दौरान सुझाव के रूप में ऐसी अनुशंसाएँ दीं, जिन्होंने भारतीय समाज के सबसे वंचित तबकों दलितों और अछूतों के अधिकारों की नींव रखी और राष्ट्रहित में अपने ही वर्गीय हितों के विरुद्ध उन्होने संबिधान सभा को महत्वपूर्ण सलाह दी थी कि वंचित ग़रीब अछूत दलितों के संरक्षण हित में एससी-एसटी एक्ट और आरक्षण को मजबूत तरिके से संबिधान में रखा जाएं।

उन्होंने आगे बताया कि सलाहकार पंडित बेनेगल नरसिंग राऊ जी कट्टर ब्राह्मण होकर भी भारतीय समाज के सबसे वंचित तबकों दलितों और अछूतों के विरोधी नहीं थे, इसलिए उन्होंने संविधान सभा को अपनी जाति के विरुद्ध जाकर अछूत दलितों के हित में महत्वपूर्ण सलाह दी थी। लेक़नि देश पर 60 साल राज़ करने के बाद भी कांग्रेस के काले कऊए ये बात कभी नहीं बताएंगे की अछूत दलित पर हो रहें अमानवीय अत्याचारों के कारण ही अछूत दलित को आरक्षण दिया जाता हैं। अछूतों से जाति के नाम पर गुंडागर्दी ना हो इसलिए एससी एसटी एक्ट का मजबूत तरिके से संबिधान में प्रावधान रखा गया। लेक़नि आज़ आरक्षण और एससी एसटी एक्ट को खत्म करने की बात तो सब करते हैं, मगर अछूत दलितों पर गुंडागर्दी कर रहें तत्वों को कोई बुद्धिजीवी ये नहीं समझाता की ये सब ग़लत हैं, अपनी मनमानी बंद करों। जिनके आधार पर अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण तथा एससी-एसटी संरक्षण संबंधी प्रावधानों को ठोस रूप मिला।

लोगों का मानना है कि पंडित बेनेगल नरसिंग राऊ जी, एक उच्च ब्राह्मण परिवार से आने के बावजूद, समाज में व्याप्त जातिगत असमानता और अछूतों पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों से गहराई से काफ़ी व्यथित थे। संभवतः इसी संवेदना ने उन्हें ऐसे सुझाव देने के लिए प्रेरित किया, जो बाद में भारतीय संविधान की आत्मा बन गए। हालांकि, उनके आलोचकों का तर्क है कि उनकी सोच उस समय के सामाजिक दबाव और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार आंदोलनों से प्रभावित थी। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि संविधान में आरक्षण और संरक्षण के प्रावधान पंडित बेनेगल नरसिंग राऊ जी की व्यक्तिगत विचारधारा से अधिक थे, जो अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर और संविधान सभा की सामूहिक चेतना का भी परिणाम थे।

फिर भी, एक प्रश्न आज भी प्रासंगिक है क्या पंडित बेनेगल नरसिंग राऊ जी वाकई ब्राह्मण होकर भी ब्राह्मणवाद और जातिवाद के विरुद्ध थे? या यह केवल इतिहास की एक रोचक व्याख्या है, जो समय-समय पर एक नई बहस को जन्म देती है?

सूर्योपासना का महापर्व: "छठ", क्या है ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथा

संजय कुमार सुमन

भारतीय संस्कृति में हर ऋतु में कोई न कोई पर्व आता है। ऋतु परिवर्तन को मनाने के लिए व्रत, पर्व और त्योहारों की एक श्रृंखला लोक जीवन को निरंतर आबद्ध किए हुए हैं।

भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता है 'सर्वेभवंतु सुखिनः , अर्थात सभी सुखी हों। दूसरी विशेषता है 'आनो भद्रा कतयो यंतु विश्वतः, अर्थात जो श्रेष्ठ हो, कल्याणमय, ज्ञान और कर्म चारों ओर से हमारे पास आएं। तीसरी विशेषता यह है कि भारतीय संस्कृति उत्सव अनुगामिनी है। साथ ही विश्व में सबसे पुरातन है। भारतीय जीवन पर्वो के माध्यम से अपनी संस्कृति को जीवंत बनाए है। ये पर्व सच्चे अर्थो में भारतीय संस्कृति के रसायन हैं। सभी पर्वो के अपने-अपने उद्देश्य हैं। इन्ही विशेषताओं में एक है लोक संस्कृति का महापर्व ₹छठ"। इसे सूर्योपासना का महापर्व भी कहते हैं।

यह छठ पर्व विदेश में भी भारतीय संस्कृति की अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रही है। वहां रहने वाले भारतीय प्रवासी इन त्यौहारों का जमकर लुत्फ उठाते हैं। दिवाली की रौनक के छह दिन बाद हर साल छठ का पर्व दस्तक देता है। यह पर्व बिहारवासियों के लिए खास महत्व रखता है। यूपी, बिहार, पूर्वांचल, झारखण्ड और नेपाल के कई हिस्सों में मनाया जाने वाला यह लोकपर्व आज महापर्व का रूप ले चुका है। इस महापर्व को पवित्रता, निष्ठा, भक्ति और श्रद्धा के साथ ही सूर्य की उपासना और अराधना का प्रतीक माना जाता है। चार दिन तक चलने वाले इस त्यौहार में महिलाएं 36 घंटे का उपवास रखती हैं और अपने पति और पुत्र के लिए दीर्घायु की कामना करती हैं। इस पर्व को राजनीति से जुड़े हुए लोग भी पूरे रीति-रिवाज के साथ मनाते हैं। लालू प्रसाद यादव उन राजनितिज्ञों में प्रमुख हैं, जो इस पर्व को हर साल एक शानदार तरीके से मनाते आ रहे हैं। छठ पर्व की महिमा अपार है। सुख-स्मृद्धि तथा मनोकामना पूर्ति के लिए इस त्यौहार को सभी स्त्री और पुरुष समान रूप से मनाते हैं।

छठ पूजा की सबसे महत्वपूर्ण बात इसकी सादगी, पवित्रता और लोकपक्ष है। भक्ति और आध्यात्म से परिपूर्ण इस पर्व के लिए न तो विशाल पंडालों की,न भव्य मंदिरों की और ना ही ऐश्वर्य युक्त मूर्तियों की जरूरत होती है। आधुनिकता की चकाचौंध और शोरगुल से दूर यह पर्व बांस से बनें सूप, टोकरी, मिट्टी के बर्तनों, गन्ने, गुड़, चावल और गेहूं से बनें प्रसाद और सुमधुर लोक गीतों से सबके जीवन में भरपूर मिठास भरने का काम करता है।

वैसे तो लोग उगते हुए सूर्य को प्रणाम करते हैं, लेकिन छठ पूजा एक ऐसा अनोखा पर्व है जिसकी शुरुआत डूबते हुए सूर्य की अराधाना से होती है। शब्द ₹छठ₹ संक्षेप शब्द ₹षष्ठीर

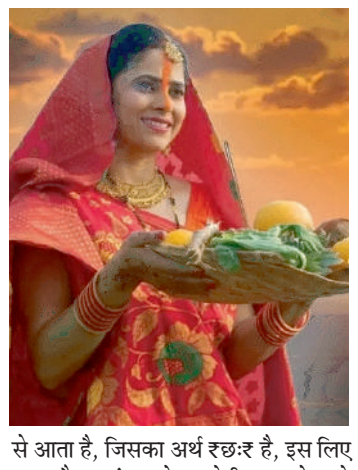

से आता है, जिसका अर्थ ₹छः₹ है, इस लिए यह त्यौहार चंद्रमा के आरोही चरण के छठे दिन, कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष पर मनाया जाता है। इसमें सूर्यदेव की उपासना की जाती है।छठ पर्व को लेकर महाभारत और रामायण काल से कथाएं जुड़ी हुई हैं।

यह माना जाता है कि छठ पूजा का उत्सव प्राचीन वेदों में स्पष्ट रुप से बताया गया है, क्योंकि पूजा के दौरान किए गए अनुष्ठान ऋग्वेद में वर्णित अनुष्ठानों के समान हैं, जिसमें सूर्य की पूजा की जाती है। उस समय, ऋषियों को सूर्य की पूजा करने के लिए भी जाना जाता था और अच्छे सेवन किए बिना वे अपनी ऊर्जा सीधे सूर्य से प्राप्त करते थे।

ऐसा कहा जाता है कि महाभारत काल में महान ऋषि धौम्य की सलाह के बाद, द्रौपदी ने पांडवों को कठिनाई से मुक्ति दिलाने के लिए छठ पूजा का सहारा लिया था। इस अनुष्ठान के माध्यम से, वह केवल तत्काल समस्याओं को हल करने में सक्षम रही। ऐसा ही नहीं, लेकिन बाद में पांडवों ने हस्तिनापुर में अपने राज्य को पुनः प्राप्त किया था। ऐसा कहा जाता है कि कर्ण, सूर्य के पुत्र, जो कुरुक्षेत्र के महान युद्ध में पांडवों के खिलाफ लड़े थे, ने भी छठ का अनुष्ठान किया था। पूजा का एक अन्य महत्व भगवान राम की कहानी से भी जुड़ा हुआ है । प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, राम और उनकी पत्नी सीता ने उपवास किया था और 14 साल के निर्वासन के बाद शुक्ल पक्ष में कार्तिक के महीने में सूर्य देव की प्रार्थना की थी। तब से, छठ पूजा एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक हिंदू उत्सव बन गया, जिसे हर साल उत्साह से मनाया जाता है।

लोकप्रिय विश्वास यह भी है कि सूर्य भगवान की पूजा कुष्ठ रोग जैसी बीमारियों को भी समाप्त करती है और परिवार की दीर्घायु और समृद्धि सुनिश्चित करती है। यह सख्त अनुशासन, शुद्धता और उच्चतम सम्मान के साथ की जाती है। और एक बार जब एक परिवार छत पूजा शुरू कर देता है तो ये उनका कर्तव्य हो जाता है कि वह परंपराओं को पीढ़ियों तक पारित करे।

एक कदम 12 साल के बच्चे का जिसने हिला दिया हरियाणा को

हरियाणा में 12 साल के एक मासूम बच्चे ने ऐसा कदम उठाया जिसने पूरे देश को हैरान कर दिया। एक दर्दनाक घटना में, उस बच्चे ने गांव के सरपंच के बेटे पर चार गोलियाँ चला दीं — अपनी बहन पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए।

यह सिर्फ़ अपराध की कहानी नहीं है, बल्कि हमारे समाज का आईना है। जब न्याय देर से मिलता है, जब पीड़ितों की आवाज़ दबा दी जाती है, और जब व्यवस्था निर्दोषों की रक्षा करने में असफल रहती है, तो दर्द धीरे-धीरे गुस्से का रूप ले लेता है। बच्चे का यह कदम सही नहीं कहा जा सकता — लेकिन इसे अनदेखा भी नहीं किया जा सकता।

पुलिस इस पूरे मामले की गहराई से जांच कर रही है। लेकिन सवाल यह है — आख़िर क्या वजह थी कि एक 12 साल का बच्चा यह मान बैठा कि इज़्ज़त बचाने का एकमात्र रास्ता हिंसा है? जब कानून, इंसाफ़ और समाज पर बहसें चल रही हैं, तब एक बात साफ़ दिखाई देती है — ऐसे मामलों पर मीडिया की चुप्पी निष्पक्षता नहीं, बल्कि लापरवाही है

पत्रकार हंसराज

हिसार के गांव से सुप्रीम कोर्ट तक, जस्टिस सूर्यकांत की अनसुनी कहानी, बनने वाले हैं देश के नए सीजेआई

परिवहन विशेष न्यूज

हिसार के एक छोटे से कस्बे से निकलकर जस्टिस सूर्यकांत अब देश के अगले मुख्य न्यायाधीश बनने जा रहे हैं. उनका सफर मेहनत, ईमानदारी और न्याय के प्रति जुनून की मिसाल है. आइए इस खबर में जानते हैं उनके सफर के बारे में.

हरियाणा के हिसार से निकलकर देश की सर्वोच्च न्यायिक कुर्सी तक पहुंचने वाले जस्टिस सूर्यकांत की कहानी किसी प्रेरणा से कम नहीं है. साधारण परिवार से आने वाले इस जज ने अपनी मेहनत, ईमानदारी और न्याय के प्रति जुनून से सुप्रीम कोर्ट तक का सफर तय किया. अब वे 24 नवंबर 2025 को भारत के अगले मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बनेंगे और फरवरी 2027 तक इस पद पर रहेंगे.

कानून की पढ़ाई से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक उनका सफर संघर्ष, लगन और समर्पण से भरा रहा है. जब मौजूदा सीजेआई बी आर गवई 23 नवंबर को रिटायर होंगे, तो न्यायपालिका की कमान देश के सबसे वरिष्ठ जज जस्टिस सूर्यकांत संभालेंगे.

शिक्षा से मिली मजबूत नींव जस्टिस सूर्यकांत का जन्म 10 फरवरी 1962 को हरियाणा के हिसार

में हुआ. 1981 में उन्होंने गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, हिसार से ग्रेजुएशन किया और 1984 में महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी, रोहतक से एलएलबी की डिग्री हासिल की. यही नहीं उन्होंने 2011 में कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से एमएलएल (कानून में मास्टर डिग्री) फर्स्ट क्लास फर्स्ट रैंक से पास की. यह उनकी निरंतर सीखने की प्रवृत्ति को दर्शाता है.

संविधान और न्याय के जानकार 1984 में उन्होंने हिसार की जिला अदालत से वकालत की शुरुआत की और जल्द ही 1985 में चंडीगढ़ स्थानांतरित होकर पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करने लगे. उन्होंने संवैधानिक, सिविल और सर्विस मामलों में विशेषज्ञता हासिल की और कई विश्वविद्यालयों, बोर्डों और बैंकों के लिए कानूनी सलाहकार के रूप में कार्य किया.

उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय तक

वकालत में उत्कृष्टता के कारण उन्हें पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट का एडवोकेट जनरल बनाया गया. 2004 में उन्हें न्यायाधीश नियुक्त किया गया और आगे चलकर वे हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने. उनकी स्पष्ट सोच, निष्पक्ष निर्णय और न्यायिक दृष्टिकोण ने उन्हें सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचाया.

न्यायपालिका में नई ऊर्जा का प्रतीक जस्टिस सूर्यकांत उन जजों में गिने जाते हैं जिनके फैसलों में संवेदनशीलता और संविधान दोनों झलकते हैं. उन्होंने कई अहम मामलों में ऐतिहासिक निर्णय दिए हैं, जो समाज के कमजोर वर्गों और आम नागरिकों के अधिकारों की रक्षा से जुड़े रहे हैं.

नए दौर की न्यायपालिका का चेहरा 24 नवंबर 2025 को जब वे देश के 52वें मुख्य न्यायाधीश बनेंगे, तो न्यायपालिका में नई ऊर्जा और उम्मीद का दौर शुरू होगा. उनकी नियुक्ति न केवल हरियाणा बल्कि पूरे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा है कि छोटे शहरों से भी बड़ा मुकाम हासिल किया जा सकता है।

शहीद दिवस पर जवानों को दी सलामी

सुनील चिंचोलकर

रानी बोदली, बिलासपुर। छत्तीसगढ़ का एक मात्र कैंप जिसको आदर्श कैंप के नाम से जाना जाता है वो है रानीबोदली बीजापुर का कैंप। यहां शहीद दिवस पर जवानों को सलामी दी गई। यह आयोजन बीजापुर एसपी जितेन्द्र यादव व सेनानी (आईपीएस) राजेश कुकरेजा के मार्गदर्शन में किया गया। यहां वर्तमान में प्रथम वाहिनी सीएएफ की एफ कंपनी तैनात है जिसके प्रभारी वर्तमान में घनश्याम सिंह हैं यहां पर पुलिस स्मृति दिवस (शहीद दिवस) के दिन कैंप में बने शहीद स्मारक पर जवानों द्वारा सलामी दी गई। कम्पनी कमांडर घनश्याम सिंह व जवानों द्वारा स्मारक पर पुष्पाहार चढ़ाकर वीर शहीदों को याद किया गया। इस मौके पर शहीदों के परिवार व गॉव के सरपंच, उप सरपंच तथा गॉव के सम्मानित लोगों द्वारा भी स्मारक पर पुष्प चढ़ाकर शहीदों को याद किया गया! कम्पनी के जवानों द्वारा शहीदों के परिवार व ग्रामीणों को सम्मान किया गया।

रानी बोदली वही जगह है जहां 15 मार्च 2007 की रात में 3000 नक्सलियों ने कायरता का परिचय देते हुए सोये जवानों पर पेट्रोल बम, ग्रेनेड से हमला कर दिया था। इस हमले में बहादुरी से लड़ते हुए 55 जवान शहीद हो गए थे जिसमे इस गॉव के भी 6 जवान शामिल थे।

बाजरा खरीद प्रक्रिया में गड़बड़ी पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का बड़ा एक्शन

कनीना और कोसली मंडियों के अधिकारियों को किया गया सस्पेंड

करनाल में भी फर्जी गेट पास जारी करने पर तीन अधिकारियों पर हुई कार्रवाई

नई अनाज मंडी, कनीना और अनाज मंडी, कोसली में ई-खरीद पोर्टल और मार्केट कमेटी के एच-रजिस्टर की ऑक्शन में अंतर की मिली थी शिकायत

दोनों मंडियों में गेट पास जारी करने की प्रक्रिया में भी मिली थी अनियमितताएं

नई अनाज मंडी कनीना के सचिव-सह-ईओ मनोज पराशर तथा अनाज मंडी, कोसली के सचिव-सह-ईओ नरेंद्र कुमार को तत्काल प्रभाव से किया सस्पेंड

करनाल में अलग-अलग आईपी का इस्तेमाल करके फर्जी गेट पास जारी करने की थी शिकायतें

मार्केट कमेटी, करनाल के मंडी सुपरवाइजर हरदीप व अश्वनी तथा ऑक्शन रिकॉर्डर सतबीर को भी तुरंत प्रभाव से किया गया सस्पेंड

मुख्यमंत्री का सख्त संदेश, किसानों के हितों से समझौता नहीं होगा

मंडियों में पारदर्शी और निष्पक्ष खरीद सुनिश्चित करने के दिए गए सख्त निर्देश।

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट की महिलाओं ने अभियान के तहत ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूकता रजनी देवी

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद। ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाने और महिलाओं को समय पर जांच कराने के महत्व को समझाने के लिए अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट की महिलाओं ने अभियान की शुरुआत की है। यह पहल केवल जागरूकता तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं को अपनी सेहत के प्रति सजग और सशक्त बनाने का प्रयास है। इसके के माध्यम से महिलाओं को यह संदेश दिया जा रहा है कि नियमित सेल्फ-चेकअप, डॉक्टर से खुलकर सलाह लेना और समय पर जांच कराना उनकी जान और जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही, यह पहल उन डर और सामाजिक कलंक को भी तोड़ने में मदद करेगी जो अक्सर ब्रेस्ट कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के चारों ओर होते हैं। ट्रस्ट की महिला सचिव रजनी देवी ने ने कहा, "महिलाएँ अक्सर अपने परिवार और काम में व्यस्त रहती हैं और अपनी सेहत को नजरअंदाज कर देती हैं। इस ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता माह में, मैं सभी महिलाओं से यही कहती हूँ कि खुद को प्राथमिकता दें। अभियान इसी उद्देश्य से शुरू किया गया है।" उन्होंने आगे कहा, "नियमित जांच, समय पर पहचान और अपने डॉक्टर से खुलकर बात करना केवल सुरक्षा नहीं, बल्कि खुद से प्यार और साहस का प्रतीक है। जब महिलाएँ अपनी देखभाल करती हैं, तो वे अपने परिवार को मजबूत बनाती हैं और समाज को भी प्रेरित करती हैं। आइए मिलकर अपना अभियान बनाएं – जागरूक, सशक्त और अजेय।" अभियान महिलाओं को नियमित सेल्फ-चेकअप करने और डॉक्टर की सलाह के अनुसार मेमोग्राम या ब्रेस्ट अल्ट्रासाउंड जैसी जांच कराने के लिए प्रेरित करता है। इसके अंतर्गत शैक्षिक वर्कशॉप, सोशल मीडिया अभियान, विशेषज्ञ वार्ता और सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, ताकि सभी उम्र की महिलाएँ अपनी सेहत के प्रति जागरूक हो सकें। ट्रस्ट का लक्ष्य है कि यह अभियान महिलाओं को सजग बनाए और समाज में एक ऐसा समुदाय बने जो अभियान के तहत एकजुट होकर खड़ा हो।

यह ध्यान देने योग्य है कि हम अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के माध्यम से पिछले 7 वर्षों से महिलाओं और बच्चों की देखभाल कर रहा है। अब तक 273 बच्चों को फ्री शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर निरन्तर कार्य कर रहे हैं और देखभाल की है।

"आत्मनिर्भर भारत अभियान" के अंतर्गत प्रोफेशनल मीट की तैयारी बैठक सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

गाज़ियाबाद। दिनांक 23 अक्टूबर को भाजपा महानगर कार्यालय, नेहरू नगर में "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के अंतर्गत आयोजित होने वाली प्रोफेशनल मीट एवं अन्य कार्यक्रमों की तैयारी को लेकर एक बैठक आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री मयंक गोयल ने की।

बैठक में अभियान संयोजक सुशील गौतम, सह संयोजक एवं मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी, सह संयोजक प्रहलाद दुआ, सह संयोजक नीरू शर्मा, प्रोफेशनल मीट संयोजक संजय कश्यप सहित सभी प्रकोष्ठों के संयोजक एवं सह संयोजक उपस्थित रहे।

महानगर अध्यक्ष श्री मयंक गोयल ने कहा कि "आत्मनिर्भर भारत अभियान" प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प 'लोकल से वोकल' को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस अभियान का उद्देश्य महानगर के विभिन्न वर्गों — प्रोफेशनल्स, उद्योगपति, व्यापारी, चिकित्सक, शिक्षाविद् एवं युवा उद्यमियों — को जोड़ना है, ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग में आत्मनिर्भरता की भावना और अधिक

सशक्त हो सके।

उन्होंने कहा कि संगठन इस विषय पर योजनाबद्ध रूप से प्रत्येक क्षेत्र में संवाद एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करेगा।

एनजीओ प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक एवं प्रोफेशनल मीट प्रभारी संयोजक संजय कश्यप ने बताया कि इस मीट के माध्यम से मंडल एवं बूथ स्तर के आधार पर एक बड़ा सम्मेलन 1 नवंबर से 15 नवंबर तक आत्मनिर्भर भारत अभियान को स्थानीय स्तर पर सशक्त करने का प्रयास किया जाएगा। शहर के सभी पेशेवर समूहों को जोड़कर एक साझा मंच तैयार किया जा रहा है, जिससे स्थानीय प्रतिभा और संसाधनों को प्रोत्साहन मिल सके।

बैठक के दौरान प्रकोष्ठों की ओर से ओपी अग्रवाल, अशोक भारतीय, अनिल अग्रवाल, वीरेंद्र सारस्वत, बृज भूषण शर्मा, सतेन्द्र सिंह, सुनील शर्मा, साक्षी नारंग, भीम शर्मा, प्रमोद यादव, गौरव गर्ग, विनोद त्यागी, विजय सिंह, बृजेश सोलंकी, बबलू कश्यप, पीतांबर त्यागी, डॉक्टर वी के सक्सेना, वैभव पराशर, पुष्पलता सक्सेना आदि मौजूद रहे।

बैठक में आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा एवं जिम्मेदारियों का निर्धारण किया गया।

प्रदीप चौधरी
महानगर मीडिया प्रभारी, भाजपा
महानगर गाज़ियाबाद

भुने चने मे ओरामाइन की मिलावट का काला सच: कैंसरकारी जहर की बलि चढ़े निर्दोष

भुने चने, वह सस्ता-सा स्नैक जो गरीब से अमीर तक की थाली सजाता है, प्रोटीन का खजाना और ऊर्जा का अमृत! यह तो वही चना है जो मजदूर की थकान मिटाता है, बच्चे की भूख शांत करता है, और बुजुर्गों को टॉनिक की तरह ताकत देता है। लेकिन ओह, कितनी करुण कथा है यह! अमानवीय लोभी व्यापारियों की साजिश ने इस नेक स्नैक को मौत का पैगाम बना दिया।

ऑरामाइन—वह जहरीला रसायन जो कैंसर का बीज बोता है—से मिलावट कर दी गई। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में, नवंबर २०२४ की एक सर्द शाम, एक साधारण परिवार की जिंदगी उजड़ गई। कलुआ (४५ वर्ष) और गोलू (८ वर्ष) नामक पिता-पुत्र की जान पर बन आई। भुने चने खाने के बाद उल्टी की बौछार, फिर अस्पताल की चीखें, और अंत में चुप्पी—दो मौतें! दो अन्य सदस्यों को भी आंतों की विकृति ने जकड़ लिया। स्थानीय बाजार से खरीदे ये चने, फूले-फूले, चमकीले पीले—बाहरी आकर्षण के पीछे छिपा था कैंसर का खौफ। सहायक खाद्य आयुक्त विनीत कुमार की जांच ने पुष्टि की: यह मिलावट का काला कारनामा था। क्या यह पहला अपराध है? नहीं! मिलावटखोरों की यह साजिश सदियों पुरानी है, लेकिन आज के युग में यह महामारी बन चुकी है। ऑरामाइन, जो कपड़ों के रंगाई के लिए इस्तेमाल होता है, मानव भोजन में घुसा तो शरीर के अंगों को धीरे-धीरे खोखला करने लगा—फेफड़े, लीवर, किडनी पर हमला, और अंत में कैंसर की चपेट।

गरीबों का यह सस्ता पोषण अब जोखिम का पर्याय! लेकिन उम्मीद की किरण है—जागरूकता। चमकीले, अस्वाभाविक बड़े चनों से बचें; घर पर भूनें या विश्वसनीय दुकानदार से लें। २०२५ में खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने महाराष्ट्र में २ करोड़ की मिलावटी खाद्य सामग्री जब्त की, भोपाल में ० में से एक नमूना मिलावटी पाया गया। यह लड़ाई जारी है—सरकार की मुहिमें, छापेमारी, और जन-जागरण से ही हम इस विषाक्त जाल को तोड़ सकेंगे। आइए, चने की मिठास को बचाएं, जिंदगियों को बचाएं। जागें, सावधान रहें।

ग्राम धमसिंगा स्थित गोपकुमार गौशाला में इक्कीस वां छः दिवसीय गोपाष्टमी महोत्सव 25 अक्टूबर से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

कोसीकलां (मथुरा)। धनिष्ठा सखी जू के ग्राम धमसिंगा स्थित श्रीगोपकुमार गौशाला में इक्कीस वां छः दिवसीय गोपाष्टमी महोत्सव 25 से 30 अक्टूबर 2025 पर्यन्त संत माता ब्रजदेवीजी व संत प्रेम धन लालनजी महाराज (संतश्री) के पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।महोत्सव की तैयारियों के संबंध में आयोजित बैठक में जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी रूयूपी रत्नरू डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव का शुभारंभ 25 अक्टूबर को प्रातःकाल गौमाता के पूजन एवं भव्य शोभायात्रा के साथ होगा। इसके साथ ही छः दिवसीय रासलीला भी प्रारंभ होगी। जिसके अंतर्गत राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त प्रख्यात रासाचार्य स्वामी फतेह कृष्ण शर्मा के निर्देशन में श्रीकृष्ण लीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया जाएगा।इसके अलावा प्रख्यात सन्त बिहारी दास भक्तमाली महाराज, भागवताचार्य डॉ. हरेकृष्ण शास्त्री (शरद जी) व कई प्रख्यात सन्तों, विद्वानों व धर्माचार्यों आदि के नित्य प्रवचन होंगे।

ग्राम प्रधान राजाराम शर्मा व रासाचार्य पण्डित राधाकांत शर्मा (छोटे स्वामीजी) ने बताया कि महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में गौसेवा आयोग, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष रमाकांत उपाध्याय उपस्थित रहेंगे।

इस अवसर पर स्वामी कृष्ण दास महाराज, साध्वी हरिदासी, साध्वी कुंज दासी, मधु रुइया (मुम्बई), गोपाल प्रसाद अग्रवाल (बड़ा वाले), गोविन्द शर्मा, योगेश सौंखिया, सी.ए. विनोद ताजपुरिया (नागपुर), सी.ए कृष्ण वर्मा (मथुरा), आदित्य चौधरी (महाप्रबंधक - प्रसार भारती), प्रदीप अग्रवाल (दिल्ली), संजीव जाविया, कृष्णांशु शर्मा (इंदौर) आदि की उपस्थिति विशेष रही।

भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति का सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण पर्व है दीपावली : भास्करानंद महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह क्षेत्र स्थित अखण्ड दया धाम में मंगलायतन सेवा ट्रस्ट के द्वारा पंच दीपावली महोत्सव महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज के पावन सानिध्य में बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसके अंतर्गत वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य मां लक्ष्मी और भगवान गणेश का पूजन किया गया।साथ ही समूचे आश्रम को मिट्टी के दीपक और झिलमिल आधुनिक लाइटों से रोशन किया गया। इसके अलावा जमकर बम, पटाखे, फुलझड़ी व आतिशबाजी चलाई गई।

अखण्ड दया धाम के संस्थापक महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज ने कहा कि दीपावली भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति का सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व युगों युगों से मनाया जाता रहा है।कार्तिक मास की अमावस्या को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला यह पर्व एक पौराणिक पर्व है।जिसे समस्त सनातन धर्मावलंबी कार्तिक कृष्ण अमावस्या को पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं।

प्रख्यात साहित्यकार रूयूपी रत्नरू डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि भारत ही नहीं अपितु समूचे विश्व में मनाए जाने वाले सभी पर्वों में दीपावली का त्यौहार व्यवहारिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि कोण से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।धार्मिक ग्रंथानुसार सतयुग, त्रेता और द्वापर युग से लेकर कलयुग तक कई कथाओं में दीपोत्सव का विशेष महत्व बताया गया है।

महोत्सव के अंतर्गत ब्रज सेवा संस्थान के द्वारा उसके अध्यक्ष डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज का सम्मान किया।साथ ही उन्हें शॉल ओढ़ाकर एवं पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट किया गया।

इस अवसर पर महाराजश्री की परम कृपापात्र शिष्या साध्वी कृष्णानंद महाराज, वरिष्ठ पत्रकार विपिन पाराशर, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, श्रीमती वसुधा गोपाल आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महामंडलेश्वर साध्वी सत्यप्रिया गिरि 26 अक्टूबर से कहेंगी श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित वात्सल्य ग्राम में सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव वात्सल्य मूर्ति, पद्म विभूषण साध्वी ऋतम्भरा के पावन सानिध्य में 26 अक्टूबर से 01 नवंबर 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत व्यास पीठ से पद्म विभूषण साध्वी ऋतम्भरा की परम कृपापात्र शिष्या महामंडलेश्वर साध्वी सत्यप्रिया गिरि अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा का रसास्वादन कराएंगी।

सरदार सेना की स्वाभिमान संकल्प रथ यात्रा का जगह जगह जोरदार स्वागत

मदन कुमार केशरवानी पत्रकार

कौशांबी जनपद में सरदार सेना की स्वाभिमान संकल्प रथ यात्रा पहुंचते ही जगह जगह लोगो ने किया जोरदार स्वागत यह यात्रा कानपुर जनपद के गौरी करन गांव सरदार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर आर एस पटेल के द्वारा जनहित संकल्प यात्रा २१ अक्टूबर २०२५ को शुरू करके फतेहपुर जनपद के खागा विजईपुर रक्षपाल पुर होते हुए २३ अक्टूबर २०२५ को धाता पहुंच कर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दादा दीप नारायण को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के बाद स्वाभिमान रथ यात्रा का विश्राम शिवाय गेस्ट हाउस धाता में हुआ उसके बाद २४ अक्टूबर २०२५ को सरदार सेना कौशांबी के जिला अध्यक्ष डॉक्टर अनिरुद्ध सिंह पटेल की अगुवाई में धाता से हनुमान गढ़ी नरसिंह पुर काबरहा में शिव कुमार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित किया उसके बाद हनुमान गढ़ी में ददुआ की मूर्ति पर माल्यार्पण करते हुए स्वाभिमान रथयात्रा आगे बढ़ते हुए हिनौता चौराहे से अलवारा ज़ील के चांदेराई गेट पर सैकड़ों लोगों ने इकट्ठा हो कर सरदार सेना की स्वाभिमान रथ यात्रा का स्वागत किया उसके बाद रथ यात्रा आगे बढ़ी और भगत का पुरवा चौराहे विद्यालय के स्टॉप एवं बच्चों के द्वारा सेना का स्वागत किया गया उसके बाद सरदार सेना की यात्रा बारखर गंज से गोराजू पहुंची जहां पर सैकड़ों लोगों की भीड़ ने सरदार सेना का स्वागत किया उसके बाद आगे के लिए कूच किया उसी रस्ते में जयंती के पुरवा गांव में शिवपाल सिंह को सरदार सेना के द्वारा माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित किया गया तत्पश्चात विजिया चौराहा होते हुए करन चौराहा पर सरदार सेना का माल्यार्पण करके जोरदार स्वागत किया तत्पश्चात रथ यात्रा सरदार बल्लभ भाई पटेल इंटर कालेज के अंदर सरदार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर आर एस पटेल एवं सरदार सेना के संरक्षक अविनाश काकड़े के साथ जिला अध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल एवं कारगिल युद्ध विजेता सूबेदार मदन सिंह के द्वारा सरदार बल्लभ भाई पटेल की मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया सरदार सेना की रथ यात्रा पुलिस प्रशासन के सहयोग से कौशांबी जनपद में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई सरदार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर आर एस पटेल ने कहा हम लोग सरदार सेना स्वाभिमान रथ यात्रा के माध्यम से समाज को जागरूक करके उनके हक व अधिकार की लड़ाई लड़ते हुए नवजवान को रोजगार दिलाने के लिए सरदार सेना पूरे प्रदेश के भ्रमण कर रही है इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर आर एस पटेल संरक्षक अविनाश काकडे विराग पटेल अनिरुद्ध सिंह पटेल सोम सिंह राम लाल पटेल रमेश पटेल बुद्धि सागर पटेल संजीव कुमार चौरसिया मदन सिंह पटेल मुन्नू सिंह पटेल भारत लाल पटेल मदन सिंह पटेल राम सिंह यादव नरेंद्र सिंह विक्रम सिंह शिवकरन विश्वकर्मा सोम सिंह पटेल संतोष भारती चंद्र भान पटेल संदीप पटेल नवदीप पटेल कापुल पटेल अनूप पटेल गोविंद पटेल बलवीर सिंह पटेल गुड्डू सिंह पटेल सहित हजारों गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

47 वाँ आसियांन शिखर सम्मेलन 26 से 28 अक्टूबर 2025- मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर- समावेशिता एवं स्थिरता

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दक्षिण- पूर्व एशिया के संगठन (आसियांन) का 47 वाँ संस्करण, 26 से 28 अक्टूबर 2025 तक मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर में आयोजित होने जा रहा है।मलेशिया इस वर्ष आसियान की अध्यक्षता कर रहा है, और उन्होंने इस सम्मेलन के लिए थीम तय की है, समावेशिता एवं स्थिरता, इस थीम के अंतर्गत दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में समावेशी विकास, सामाजिक, आर्थिक पक्षों का समुचित समन्वय, और पर्यावरणीय तथा स्थिरता संबंधी चिंताओं को प्रमुखता दी जा रही है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इस आयोजन की विशेषता यह है कि इस बार आसियांन के दस सदस्य देशों के साथ-साथ अनेक संवाद साझेदार और वैश्विक शक्तियों के शीर्ष नेताओं की भागीदारी अपेक्षित है, जिससे यह सम्मेलन सिर्फ क्षेत्रीय नहीं, बल्कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। बता दें, भारतीय पीएम इस शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे, पीएम अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों के कारण संबंधित बैठकों में भाग लेने के लिए संभवतः मलेशिया नहीं जाएंगे, मीडिया की मानें तो भारत की ओर से विदेश मंत्री इस बैठक में हिस्सा लेंगे और भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे यहां बताना जरूरी है कि इस आसियान बैठक में डोनाल्ड ट्रंप भी आ रहे हैं, ऐसे में संभावना थी कि अगर मोदी जाते हैं तो ट्रंप संग उनकी मुलाकात हो सकती थी, मगर अब मुलाकात का इंतजार बढ़ गया है।

साथियों बात अगर हम इस सम्मेलन की पृष्ठभूमि और भू-राजनीतिक महत्व को समझने की करें तोआसियान का मूल उद्देश्य है दक्षिण-पूर्व एशिया के दस सदस्य देशों ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्याँमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड तथा वियतनाम, में राजनीतिक -सुरक्षा, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाना। वर्ष 2025 में मलेशियाअध्यक्षत्व संभाले हुए है, जो आसियान के लिए एक अवसर भी है और चुनौती भी। अवसर इसलिए क्योंकि दक्षिण-पूर्व एशिया वैश्विक अर्थव्यवस्था और भू-रणनीति के बदलते केंद्रों में तेजी से उठा है, और चुनौती इसलिए क्योंकि इस क्षेत्र में अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रसद व आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान, जलवायु परिवर्तन, और मानवीय व राजनीतिक तनावों का दबाव लगातार बढ़ रहा है।इस सम्मेलन में न सिर्फ आसियान के दस सदस्य देश उपस्थित होंगे, बल्कि उनकी निगाहें उन डायलॉग पार्टनर देशों पर भी हैं जिनके साथ आसियान का व्यापक सामरिक-आर्थिक नेटवर्क बना हुआ है।उदाहरणस्वरूप, डोनाल्ड ट्रम्प की उपस्थिति की पुष्टि हो चुकी है, इसके अतिरिक्त, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, भारत, ऑस्ट्रेलिया, रूस जैसे बड़े बाहरी देश भी चर्चा के दायरे में हैं।यह व्यापक भागीदारी इस बात का संकेत है कि आसियान अब केवल क्षेत्रीय मंच नहीं बल्कि एक वैश्विक संवाद केंद्र बनने की प्रक्रिया में है।

साथियों बात अगर हम एजेंडा, विषय औरप्राथमिकताओं अवसरों व चुनौतियों को समझने की करें तो, थीम क़ा उद्देश्य है कि विकास का लाभ समस्त सदस्य देशों- समुदायों तक पहुँच सके और सहयोग की संरचना सतत हो।मुख्य एजेंडा में शामिल होंनें की संभावना है, दक्षिण- चीन सागर में समुद्री एवं सुरक्षा विवाद, म्याँमार में नागरिक संकट, आपूर्ति श्रृंखला व आर्थिक निर्भरताएं, डिजिटल अर्थव्यवस्था व जुड़ाव, जलवायु परिवर्तन व सतत विकास, और निस्संदेह बाहरी शक्तियों के साथ रणनीतिक संवाद। इसके अलावा, व्यापार और निवेश को तत्परता से आगे बढ़ाने की दिशा में कदम उठाना इस शिखर सम्मेलन की बड़ी प्राथमिकता होगी क्योंकि वैश्विक आर्थिक माहौल अस्थिर हो रहा है।अवसर और चुनौतियाँ -इस सम्मेलन के माध्यम से आसियान को अनेक अवसर मिल रहे हैं। जैसे-(1) वैश्विक संपर्क बढ़ाना, (2) बहुपक्षीय साझेदारी को गहरा करना, (3) क्षेत्रीय आवाज को सशक्त बनाना, और (4) आर्थिक तथा डिजिटल संक्रमण में नेतृत्व करना।उदाहरण स्वरूप, मलेशिया ने वर्ष 2025 में आसियान अध्यक्ष रहते हुए डिजिटल अर्थव्यवस्था ढाँचे पर जोर दिया है। चुनौतियाँ कम नहीं हैं, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन-मध्यस्थता, म्याँमार की अंदरूनी स्थिति, दक्षिण-चीन सागर में तनाव, बढ़ती आर्थिक असममिताएँ और सदस्य देशों के बीच विकास की खाई) जैसी समस्याएं आसियान के समक्ष खड़ी हैं।

साथियों बात अगर कर हम भारत-आसियान संबंध एवं भारत की भूमिका को समझने की करें तो भारत के लिए यह सम्मेलन विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारत ने आसियान के साथ व्यापक रणनीतिक साझेदारी स्थापित की है और पोस्ट-2025 दृष्टिकोण तैयार कर रहा है। उपरांत, भारत अपनी अर्थव्यवस्था, सामाजिक शक्ति व रणनीतिक प्रासंगिकता के चलते आसियान क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस सम्मेलन के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि भारत के पीएम ने इस सम्मेलन में वर्चुअल उपस्थिति की बात कही है। इससे यह संकेत मिलता है कि भारत आसियान मंच पर सक्रिय है, हालांकि सीधी उपस्थिति न हो पाने का तथ्य भी राजनीति- कूटनीति के आयाम को दर्शाता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका -आसियान तथा चीन- आसियान संबंधों का नए परिप्रेक्ष्य में पुनर्संयोजन को समझने की करें तो, अमेरिका की इस क्षेत्र में वापसी और चीन की गहरी दक्षिण-पूर्व एशिया में हिस्सेदारी दोनों ही आसियान की भूमिकाओं को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की उपस्थिति और चीन-रूस-इंडिया समेत अन्य शक्तियों की संभावित उपस्थिति इस क्षेत्र को वैश्विक मुकाबले के केंद्र में ला रही है। इसके मद्देनज़र आसियान को चाहिए कि वह अपनी "आसियान-सेंट्रलिटी" को सुदृढ़ करे, अर्थात्सदस्य देशों का नेतृत्व एवं निर्णय-प्रक्रिया स्वयं आसियान के अंतर्गत रहे, न कि बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रित हो जाए।आर्थिक एवं व्यापारिक आयाम-इस सम्मेलन के पूर्व 25-26 अक्टूबर को, एक दिन पहले, आसियान बिज़नेस एंड इन्वेस्टमेंट सम्मिट 2025 का आयोजन भी कुआलालम्पुर में होने जा रहा है, जिसमें वैश्विक सीईओ और व्यावसायिक नेतृत्व भाग लेगा।यह दर्शाता है कि सिर्फ राजनीतिगत मंच नहीं, बल्कि आर्थिक-वाणिज्यिक संवाद का भी एक प्रमुख अवसर इस सम्मेलन के दौरान मौजूद होगा। इस तरह, इस शिखर सम्मेलन को आर्थिक उन्नति, निवेश प्रवाह, डिजिटल अर्थव्यवस्था, आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संरचना, हरित वित्त जैसे क्षेत्रों में 'प्रेरणा बिंदु' के रूप में देखा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम सुरक्षा, समुद्री तथा मानवीय चुनौतियों को समझने की करें तो, नियोजन में इस क्षेत्र में विशेष रूप से ध्यान दिया गया है, जैसे पूर्वी एशिया में समुद्री सीमाओं की स्थिति, म्याँमार में राजनीतिक- सामाजिक संकट, दक्षिण-चीन सागर में तनाव, तथा जलवायु -प्रेरित आपदाएँ। उल्लेखनीय यह भी है कि रूस की उपस्थिति या उसकी प्रतिनिधि तैनाती पर अभी निश्चितता नहीं पुतिन के आने पर प्रश्न चिह्न है, इससे यह स्पष्ट होता है कि सुरक्षा-रणनीति, वैश्विक शक्ति-संतुलन, तथा मानवीय अवस्था-मध्यस्थता जैसे जटिल विषय इस सम्मेलन के एजेंडा में अहम भूमिका निभाएंगे।स्थिरता जलवायु परिवर्तन तथा डिजिटल संक्रमण- मलेशिया की अध्यक्षता के तहत, आसियान इस वर्ष "डिजिटल अर्थव्यवस्था फ्रेमवर्क एग्रीमेंट" को आगे बढ़ाने पर विचार कर रहा है। साथ ही, सदस्यों के बीच हरित वित्त, सतत निवेश व आपूर्ति श्रृंखला की लोच पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह दृष्टिकोण वैश्विक अर्थव्यवस्था की अस्थिरता, जलवायु आपदाओं तथा ऊर्जा-संकट की चुनौतियों के बीच आसियान को अगुआ बनाने का अवसर देता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 26-28 अक्टूबर 2025 को कुआलालम्पुर में आयोजित होने वाला 47वाँ आसियान शिखर सम्मेलन एक समय-सापेक्ष आयोजन है यह दक्षिण-पूर्व एशिया को वैश्विक मंच पर पुनःस्थापित करने का अवसर प्रस्तुत करता है, जबकि इसकी सफलता मुख्यतः इस बात पर निर्भर करेगी कि सदस्य देश एवं भागीदार देशों ने कितनी सक्रियता, सहयोग और साझा दृष्टिकोण दिखाया है।यदि सम्मेलन में स्पष्ट निर्णय, ठोस संवाद, निवेश व साझेदारी के नए मॉडल तथा रणनीतिक समझौते सामने आते हैं, तो यह आसियान के संदर्भ में एक 'टर्निंग प्वाइंट' साबित हो सकता है। दूसरी ओर, यदि सम्मेलन केवल बयानों तक सीमित रहा, तात्कालिक प्रभाव न दिखा पाया, या बाहरी शक्तियों द्वारा आसियान सेंट्रलिटी को चुनौती मिली, तो यह अवसर खो सकता है।

सऊदी ने शोषणकारी कफाला व्यवस्था खत्म की

राजेश कुमार पासी

सऊदी अरब के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान(एमबीएस) ने अपने देश में एक बड़ा सुधार किया है। उन्होंने 1950 से सऊदी अरब में चली आ रही कफाला व्यवस्था को समाप्त कर दिया है। इससे वहां काम करने वाले विदेशी लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई है। सऊदी अरब में लगभग 1.30 करोड़ प्रवासी काम कर रहे हैं और इसमें भारतीयों की संख्या लगभग 30 लाख है। देखा जाए तो ये खबर उन भारतीयों के लिए बहुत बड़ी राहत है जो वहां काम कर रहे हैं या काम करने के लिये जाने वाले हैं। सऊदी अरब ने अपने इस फैसले से न केवल खुद के देश में बड़ा बदलाव कर दिया है बल्कि अन्य खाड़ी देशों के लिए भी ऐसा करने का रास्ता खोल दिया है। सऊदी अरब में इस व्यवस्था के खत्म होने के बाद उन खाड़ी देशों पर बड़ा दबाव आ गया है जहां ये व्यवस्था अभी भी चल रही है। कफाला व्यवस्था एक तरह से नौकरी की स्पॉन्सरशिप व्यवस्था है जिसे ज्यादातर खाड़ी देशों ने लागू किया हुआ है। इस व्यवस्था में जब कोई कामगार इन देशों में काम करना चाहता है तो उसे एक स्पॉन्सर की जरूरत पड़ती है जिसे कफील कहा जाता है। बिना किसी कफील के कामगार इन देशों में नौकरी करने के लिए नहीं जा सकते। वास्तव में उस देश में कामगार की पूरी जिम्मेदारी कफील के पास ही होती है। कामगार को फायदा यह होता है कि उसे कफील ही अपने देश में लाने का खर्च उठाता है और वहां उसके खाने-पीने एवं रहने की व्यवस्था करता है। इस व्यवस्था को ही कफाला व्यवस्था कहा जाता है। देखा जाए तो इस व्यवस्था के कारण संबंधित देश कामगार की पूरी जिम्मेदारी कफील पर डाल देता है। ये कफील कोई कंपनी या व्यक्ति हो सकता है। कामगार को उस देश में उस कफील के अधीन रहकर ही काम करना होता है।

इस व्यवस्था का स्याह पहलू यह है कि कामगार कफील का गुलाम बन कर रह जाता है। उसे निर्धारित अवधि तक पूरी तरह से कफील के अधीन रहकर काम करना होता है। कफील ही तय करता है कि वो कहां रहेगा, क्या खायेगा और क्या काम करेगा। कफील ही तय करता है कि वो कब अपने देश जाएगा या नहीं जाएगा। कामगार अपने कफील के खिलाफ उस देश की अदालत में नहीं जा सकता और न ही सरकार के पास उसकी कोई शिकायत कर सकता है। कामगार का पासपोर्ट, वीज़ा भी कफील के कब्जे में रहता है, इसलिए वो उसकी मर्जी के बिना देश भी नहीं छोड़ सकता। देखा जाए तो इस व्यवस्था में कामगार की जिंदगी पूरी तरह से कफील के रहमो करम पर होती है। कामगार को इसकी भी इजाजत नहीं है कि वो अपना मालिक बदल ले। इस व्यवस्था के कारण खाड़ी देशों की बड़ी बदनामी हो रही है। इसके कारण मुस्लिम देशों में भी अरब देशों की बदनामी हो रही है क्योंकि विदेशी कामगारों में बहुसंख्यक आबादी मुस्लिम समाज से आती है। इस व्यवस्था के कारण कामगारों का जबरदस्त शोषण और उत्पीड़न हो रहा है। एजेंट उन्हें धोखा देकर उन देशों में ऐसे लोगों के हाथों में सौंप देते है जो उनका मनमाना इस्तेमाल करते हैं। यहां तक कि कई लोगों का यौन शोषण तक किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस, सृजनशीलता और संस्कृति का विश्व महोत्सव

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह,

कला मानव सभ्यता की आत्मा है, यह वह माध्यम है जिसके द्वारा इंसान अपने भीतर की संवेदनाओं, अनुभूतियों और विचारों को रूप, रंग, ध्वनि और शब्दों के माध्यम से प्रकट करता है। जब मानव ने पहली बार पत्थर की गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाए होंगे, जब उसने लकड़ी पर आकृतियाँ उकेरी होंगी या जब उसने अपनी आवाज़ ताल और सुर में ढालकर गीत बनी होगी, तभी से कला का अस्तित्व प्रारंभ हुआ होगा। उसी सृजनशील चेतना को स्मरण करने और कलाकारों के योगदान का सम्मान करने हेतु प्रत्येक वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस' मनाया जाता है। इस दिन विश्वभर में कलाकारों को उनकी अनूठी दृष्टि, संवेदनशीलता और समाज को दिशा देने की क्षमता के लिए सम्मानित किया जाता है। एक चित्रकार जब कैनवास पर अपने विचारों की छाप छोड़ता है, तो वह केवल रंग नहीं भरता बल्कि समाज की आत्मा को उकेरता है, एक संगीतकार जब सुरों में भावनाएँ पिरोता है, तो वह मानव हृदय के अदृश्य तारों को झंकृत करता है; एक कवि जब शब्दों में अनुभवों को बाँधता है तो वह समय का साक्षी बन जाता है। इसी प्रकार हर कलाकार अपने सृजन से विश्व को भावनात्मक गहराई, सांस्कृतिक पहचान और मानवीय अपनत्व प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस विभिन्न देशों में अनेक आयोजनों के माध्यम से मनाया जाता है, चित्रकला प्रदर्शनियाँ, संगीत समारोह, नाट्य प्रस्तुतियाँ, नृत्य-प्रयोग और रचनात्मक कार्यशालाएँ इस दिन की शोभा बढ़ाते है। इसका उद्देश्य केवल कलाकारों का सम्मान करना नहीं बल्कि समाज को कला के महत्व को पुनर्स्थापित करना भी है ताकि लोग समझ सकें कि तकनीकी प्रगति के बावजूद जीवन की असली सुंदरता कला में ही निहित है। भारत में भी यह दिवस विशेष भावनात्मक महत्व रखता है क्योंकि यहाँ की कलात्मक परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, अजन्ता-एलोरा की गुफाओं के चित्र, खजुराहो की मूर्तिकला, मधुबनी और वारली की लोककला, भरतनाट्यम और कथक जैसी शास्त्रीय नृत्य विधाएँ, सितार और तबले की सुरलहरियाँ, मुगल चित्रकला की बारीकियाँ, उर्दू शायरी की नज़ाकत, इन सभी ने भारत को सांस्कृतिक रूप से विश्व के उज्ज्वल स्थान पर पहुँचाया है। जब हम राष्ट्रीय दिवसों की चर्चा करते हैं, तो वे देश की एकता, सम्मान और गौरव का प्रतीक होते हैं। ऐसे नज़रिए से देखें तो संविधान और स्वतंत्रता की याद दिलाता है, वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं होती बल्कि सृजन की स्वतंत्रता भी उतनी ही आवश्यक है। कलाकार अपने विचारों की आज़ादी के माध्यम से समाज को नई दृष्टि देता है और यही उसका राष्ट्र तथा विश्व के प्रति सबसे बड़ा योगदान होता है। वास्तव में जब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवस एक साथ मनाए जाते हैं, तब हम भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए मनुष्यता की साझा धारा में प्रवेश करते हैं जहाँ राष्ट्रप्रेम और कलाप्रेम एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं। यह दिवस हमें यह संदेश देता है कि कला किसी देश, जाति या भाषा की सीमा में नहीं बंधती, यह संपूर्ण मानवता की विरासत है जिसका सम्मान हर व्यक्ति और हर समाज का कर्तव्य है। इसलिए अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस केवल उत्सव नहीं बल्कि आत्ममंथन का अवसर भी है, यह याद दिलाता है कि सृजनशीलता ही वह शक्ति है जिससे दुनिया सुंदर, संवेदनशील और एकजुट रह सकती है।

बीमार दवा क्षेत्र को उपचार की दरकार

डा.वेदप्रकाश

विगत दिनों मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा और बैतूल में जहरीले कफ सिरप से 16 बच्चों की मौत के मामले ने दवा क्षेत्र पर कई प्रश्न खड़े कर दिए हैं। आरंभिक जांच में कोलड्रिफ सिरप में जहरीले रसायन डायथिलीन ग्लाइकाल की मात्र 46.20 और 48.6 प्रतिशत मिली है जबकि यह मात्रा 0.1 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। इस जांच ने दवाओं के गुणवत्ता मानकों की भी पोल खोल दी है। समाचारों के अनुसार कोलड्रिफ सीरप श्रीसन फार्मास्यूटिकल्स कंपनी बनाती है जिसकी उत्पादन इकाई तमिलनाडु के कांचीपुरम में है। समाचार यह भी है कि इस कंपनी को वर्ष 2009 में सरकारी रिकॉर्ड से हटा दिया गया था यानी सरकारी रिकॉर्ड में यह कंपनी तब से बंद हो चुकी है। फिर कोलड्रिफ सीरप का उत्पादन और प्रयोग किस आधार पर किया जा रहा था? यदि जांच में डायथिलीन ग्लाइकाल निर्धारित सीमा से बहुत अधिक मिली है तो दवाओं की गुणवत्ता जांच का सरकारी अमला क्या कर रहा था? दवा में निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक मात्रा किसी षड्यंत्र का हिस्सा तो नहीं? प्रश्न तो यह भी है कि जिन परिवारों ने अपने बच्चों को खो दिया, उनको न्याय कब और कैसे मिलेगा? क्या चिकित्सक की गिरफ्तारी, ड्रग कंट्रोलर को हटाया जाना, निलंबित किया जाना और अब इस उत्पाद को प्रतिबंधित किया जाना ही पर्याप्त है?

सर्वविदित है कि विगत कुछ महीनों में देश के अलग-अलग हिस्सों से नकली दवाओं और गुणवत्ता के मानकों पर खरी न उतरने के सैकड़ों मामले सामने आ चुके हैं। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन व स्टेट ड्रग अथॉरिटी की ओर से जनवरी महीने में जारी ड्रग अलर्ट में देशभर की 135 दवाओं के सैंपल गुणवत्ता पर खरे नहीं उतरे। इनमें सर्दी, खांसी, जुकाम, एलर्जी व दर्द निवारण के लिए प्रयोग होने वाली दवाएं शामिल हैं। यह भी समाचार था कि इनमें से 38 दवाओं का उत्पादन हिमाचल के उद्योगों में हुआ है। फरवरी 2025 की कैग रिपोर्ट में यह सामने आया कि दिल्ली के अस्पतालों में दवाओं की खरीद में अनियमितताएं रही और ब्लैक लिस्ट एवं प्रतिबंधित फर्म से भी दवाएं खरीदी गई। मार्च 2025 का एक समाचार बताता है कि केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन व स्टेट ड्रग अथारिटी की जांच में देशभर के विभिन्न दवा उद्योगों में बनी 145 दवाएं गुणवत्ता की कसौटी पर खरी नहीं उतरी हैं। इसी प्रकार विगत में निम्न गुणवत्ता वाली दवाओं के खिलाफ एक अभियान के तहत दवाओं के 111 नमूने गुणवत्ता के मानकों पर खरे नहीं उतरे और कुछ नमूने नकली दवाओं के भी मिले हैं? विगत दिनों दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने भी नकली सिरप बेचने वाले सिंडिकेट का भंडाफोड़ किया था। उपर्युक्त सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि लंबे समय से दवा क्षेत्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की विसंगतियां और धांधली चल रही है। विभिन्न प्रकार की जांच और धर पकड़ के बाद भी दो-चार दिन मामला चर्चा में रहता है फिर स्थिति वहीं पहुंच जाती है। क्या इसके लिए शासन-प्रशासन जिम्मेदार नहीं है? यदि है तो उन पर भी आपराधिक संलिप्तता के तहत मुकदमा क्यों न चले?

मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा और बैतूल की यह घटना कोई पहली बार नहीं है। विगत में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ आदि में भी ऐसी कई घटनाएं हो चुकी है जहां पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में अथवा जर्जर उपकरणों के कारण बच्चों की मौतें हुई हैं। गली गली में वैध एवं अवैध सैकड़ों नर्सिंग होम एवं चिकित्सा केंद्र खुले हुए हैं जहां कभी ऑक्सीजन के अभाव में तो कभी आग लगने से न जाने कितने मासूम मौत के मुंह में जा चुके हैं। कोरोना काल में नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन बाजारों में खूब बिके। कैंसर जैसी घातक बीमारी की नकली दवाइयों के समाचार भी खूब छपते हैं। बीमारी में गरीब आदमी भी कर्ज लेकर अथवा अपनी संपत्ति बेचकर इलाज के लिए भागदौड़ करता है लेकिन नकली दवाइयां न तो जीवन बचा पाती हैं और न ही उसकी संपत्ति। क्या यह अपराध नहीं है? क्या यह सीधे-सीधे शासन-प्रशासन की लापरवाही को उजागर नहीं करता है?

यहां यह भी चिंतनीय है कि विगत कुछ वर्षों से केंद्रीय बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र हेतु लगातार बढ़ोतरी की जा रही है लेकिन आज भी अनेक प्रदेश ऐसे हैं जहां स्वास्थ्य की मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं है। इस बार के बजट में भी डिजिटल हेल्थ केयर के लिए 340 करोड़ का प्रविधान किया गया है. क्या भारत के सुदूर क्षेत्रों में इसका कोई लाभ हो पाएगा क्योकि उन क्षेत्रों में अभी भी डिजिटल सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। दूसरे यदि किसी रोगी ने किसी प्रकार डिजिटल तकनीक से दवाइयां लिखवा भी ली तो उन क्षेत्रों में अच्छी दवाइयों की उपलब्धता आज भी एक बड़ी चुनौती है। भारत जैसे सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश में बालकों एवं नवजात शिशुओं की मृत्यु दर अभी भी अधिक है। बच्चों में निमोनिया, संक्रमण, कुपोषण, भ्रूण संबंधी विकार एवं माताओं में प्रसव की जटिलताएं आज भी बनी हुई हैं।

आंकड़ों के अनुसार इस समय भारत में लगभग 13 हजार लोगों पर एक डाक्टर उपलब्ध है जबकि वैश्विक स्तर पर आदर्श अनुपात 1000 लोगों पर एक डाक्टर का माना गया है, क्या यह स्थिति स्वयं में ही गंभीर नहीं है? बाल चिकित्सा एवं देखभाल बिल्कुल भिन्न क्षेत्र है। उसमें कुशल चिकित्सक, नर्स एवं अन्य कर्मचारियों की उपलब्धता भी समुचित नहीं है। ऐसे में बहुत आवश्यक है कि केंद्र, राज्य और जिला स्तर पर व्यापक योजना बनाकर समन्वय के साथ उन्हें लागू किया जाए और स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े हुए सभी लोगों की जिम्मेदारी तय हो।

भारतीय न्याय संहिता के अधिनियम 1940 के अंतर्गत नकली दवाओं के निर्माण, बिक्री, आयात या वितरण के लिए कम से कम 10 वर्ष के कारावास से लेकर आजीवन कारावास का प्रविधान है। इसके साथ-साथ आर्थिक दंड का भी प्रविधान है। लेकिन बहुत कम मामलों में दोषियों को इस प्रकार का दंड दिया जाता है, क्योंकि वे किसी न किसी कारण से छूट जाते हैं। आज आवश्यक है कि न्याय संहिता के इस प्रविधान को कड़ाई से लागू किया जाए। दवा गुणवत्ता मानकों से संबंधित केंद्रीय और राज्य स्तरीय अधिकारियों पर भी इस अधिनियम के तहत कठोर कार्रवाई हो, जिससे भविष्य में किसी के जीवन के साथ खिलवाड़ न हो सके। ध्यान रहे दवा उपचार के लिए हैं यदि दवा क्षेत्र ही बीमार और दोषयुक्त होगा तो फिर रोगियों का उपचार किस प्रकार संभव है।

असिस्टेंट प्रोफेसर
किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

जब विज्ञापन ने बोलना नहीं, महसूस कराना सीखा – वहाँ थे पीयूष

जब दिल से दिल तक बात पहुंचे, तो विज्ञापन नहीं, जादू बन जाता है। यह जादू रचने वाले भारतीय विज्ञापन जगत के बेताज बादशाह, पीयूष पांडे अब हमारे बीच नहीं रहे। उनका जाना सिर्फ विज्ञापन उद्योग की क्षति नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और रचनात्मकता की ऐसी विरासत का अवसान है, जिसकी गूंज हमेशा रहेगी। पीयूष पांडे महज विज्ञापन निर्माता नहीं थे; वे भावनाओं के कारीगर थे, जिन्होंने भारतीय जनमानस की धड़कनों को न केवल समझा, बल्कि उसे अपनी कला में पिरोकर अमर कर दिया। उनके हर विज्ञापन में भारत की आत्मा बसती थी—चाहे वह "हमारा बजाज" का गौरव हो, "सर्फ एक्सेल" की मासूम गंदगी हो, या "फेवीकॉल का जोड़" जो कभी टूटता नहीं।

जब भारत का विज्ञापन जगत पश्चिमी चमक और अंग्रेजी संवादों के रंग में डूबा था, पीयूष पांडे ने उसे भारतीय मिट्टी की सौंधी महक से सराबोर कर दिया। उन्होंने दिखाया कि विज्ञापन सिर्फ उत्पाद बेचने का साधन नहीं, बल्कि समाज की कहानियों को जीवंत करने, उससे गहरा संवाद करने का माध्यम है। उनकी रचनाओं में भारतीयता की आत्मा गूंजती थी—चाहे वह "हर घर कुछ कहता है" की भावना हो, जिसने एशियन पेंट्स को हर घर की कहानी बनाया, या "दाग अच्छे हैं" का स्लोगन, जो भारतीय मातृत्व और बचपन की मासूमियत का उत्सव बन गया। पीयूष की रचनात्मक यात्रा एक सांस्कृतिक क्रांति थी। उन्होंने विज्ञापन को व्यापार की सीमा से निकालकर भारतीय बोलचाल, परंपराओं और भावनाओं का दर्पण बनाया। उनकी कृतियां विश्वास बुनती थीं, रिश्ते गढ़ती थीं और दिलों को जोड़ती थीं।

जयपुर के एक छोटे से कस्बे से निकलकर पीयूष पांडे ने भारतीय विज्ञापन को वैश्विक मंच पर नई ऊँचाइयाँ दीं। "कैंपेन इंडिया - टाइटन मिलेनियम अचीवर ऑफ द ईयर" (2000), पद्म श्री (2016) और एलआईए लीजेंड (2024) जैसे सम्मानों ने उनकी रचनात्मकता को विश्व भर में अमर कर दिया। ओगिल्वी एंड मैथर जैसे वैश्विक मंच को भारतीय संवेदनाओं से जोड़ना उनके लिए चुनौती नहीं, बल्कि एक कला थी, जिसे उन्होंने अपनी सादगी, गहरी अंतर्दृष्टि और अनूठी सोच से साकार किया। उनके विज्ञापनों में शब्द नहीं, जीवन बोलता था। "फेवीकॉल का जोड़" सिर्फ एक नारा नहीं, विश्वास का प्रतीक बन गया। "कैडबरीज़ का कुछ खास है" वाला विज्ञापन, जिसमें क्रिकेटर का छक्का और उसकी प्रेमिका का मैदान में उत्साह भरा नाच, न केवल ब्रांड को, बल्कि भारतीय युवा दिलों की धड़कनों को जीवंत करता था। यही थी पीयूष की जादुई खासियत—वे हर विज्ञापन में ऐसी कहानी बुनते थे, जो दर्शकों को अपनेपन की गर्माहट देती थी।

पीयूष की रचनात्मकता की जड़ें उनके बचपन में थीं, जयपुर की सर्द सुबहों में, जब उनके पिता इंद्र नारायण पांडे उन्हें मधुर स्वर में जगाते थे— "चिड़िया चूँ चूँ करके बोली, भोर निकलकर आई क्या?" शायद तब किसी को नहीं पता था कि यही सादगी और भावनाएँ एक दिन पीयूष को विज्ञापन जगत का चमकता सितारा बना देंगी। उनका घर एक "क्रिएटिव फैक्ट्री" था, जहाँ हिंदी साहित्य, कविताएँ और भारतीय संस्कृति की सुगंध हर पल बिखरी रहती थी। उनके पिता ने उनकी माँ को पहला तोहफा न साड़ी दी, न ज़ेवर, बल्कि हिंदी साहित्य की किताबें। यही संस्कार पीयूष की रचनाओं में झलके। उनके विज्ञापनों में हास्य था, पर तीखा व्यंग्य नहीं; गहराई थी, पर अहंकार नहीं। फेवीकॉल का "दम लगा के हाइसा" अभियान, जो राजस्थानी लोकसंगीत की जीवंतता से सजा था, ने विश्व भर में वाहवाही बटोरी। राजस्थान की मिट्टी में रचा-बसा यह विज्ञापन हर फ्रेम में भारतीयता की सच्चाई लिए था। "एसबीआई लाइफ" का "खुशियों की ताकत" विज्ञापन, जिसमें एक बुजुर्ग अपनी पत्नी को हीरे का तोहफा देता है, पीयूष की अपनी माँ के लिए हीरे की बालियाँ खरीदने की निजी कहानी से प्रेरित था। उनकी माँ की आँखों में चमकते खुशी के आँसू उनकी रचनाओं का आधार बने।

पीयूष पांडे के विज्ञापन सिर्फ उत्पादों की कहानी नहीं, जीवन का उत्सव थे। "सर्फएक्सेल" का वह बच्चा, जो मिट्टी में गिरकर भी मुस्कुराता है, भारतीय मातृत्व की उदारता और बचपन की निश्छलता का जीवंत प्रतीक बन गया। उनके लिए विज्ञापन केवल बिक्री का साधन नहीं, बल्कि समाज के दिलों से संवाद का सेतु था। उन्होंने कहा था, "ब्रांड्स को बात करनी चाहिए, उपदेश नहीं देना चाहिए।" यही कारण था कि उनके विज्ञापनों में कृत्रिमता का नामोनिशान नहीं था—हर फ्रेम में जीवन की सादगी और सच्चाई झलकती थी, जो दर्शकों के दिलों को छू लेती थी।

पीयूष पांडे का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं सा ही प्रेरक और अनुपम था। सहकर्मियों, जूनियर क्रिएटिव्स और क्लाइंट्स के प्रति उनकी विनम्रता और हास्यबोध उन्हें सबसे अलग बनाता था। वे कहते थे, "सृजनात्मकता किसी डिग्री या भाषा की मोहताज नहीं; उसे बस ईमानदार नजर और इंसानी अनुभवों से जुड़ने की ताकत चाहिए।" उनके बनाए "मिले सुर मेरा तुम्हारा" ने भारतीय एकता को न केवल गढ़ा, बल्कि उन्हें विज्ञापन जगत के शिखर पर स्थापित किया। लूना, कैडबरीज़, सेंटर फ्रेश और फेवीकॉल जैसे ब्रांड्स को उन्होंने ऐसी पहचान दी, जो आज भी भारतीय दिलों में धड़कती है।

पीयूष पांडे का जाना एक युग का अवसान है, पर उनकी विरासत सदा प्रेरणा देती रहेगी। उनके विज्ञापनों ने न केवल ब्रांड्स को नई ऊँचाइयाँ दीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और पहचान को वैश्विक मंच पर और मजबूत किया। उन्होंने सिखाया कि सच्ची रचनात्मकता वही है, जो दिल से जन्म ले और दिलों को जोड़े। भले ही आज वे हमारे बीच नहीं हैं, उनकी रचनाएँ, उनके शब्द और उनकी मुस्कान हमेशा हमारे साथ रहेंगे। "फेवीकॉल का जोड़" कभी नहीं टूटेगा, क्योंकि पीयूष पांडे ने जो रिश्ते और यादें गढ़ीं, वे अटूट हैं। उनकी कहानियाँ, उनके विज्ञापन और उनकी प्रेरणा भारतीय विज्ञापन जगत को युगों-युगों तक रोशन करती रहेंगी। पीयूष पांडे शब्दों में नहीं, दिलों में अमर हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

तीज-त्योहार और अर्थव्यवस्था

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारतवर्ष की हर एक वस्तु धन-धान्य से भरी हुई है। इसका कण-कण स्वर्ण से भरा हुआ है। यहां की वनस्पति, पेड़-पौधे, नदी, पर्वत, मिट्टी सभी अथहा गुणों से भरे हुए हैं। भारतवर्ष युगों-युगों से विश्व पटल पर सोने की चिड़िया रहा है और आगे भी रहेगा। यहां का हर एक जीव आनंद में रहता है, उमंग, उल्लास से भरा हर समय अपने अंदर नव संचार भरता रहता है। हमारे देवी-देवता, आदि पुरुष और वर्तमान में भी कितने ही पुरुष और महापुरुष पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, वृक्षों आदि से सीधे संवाद करते रहे हैं। हमारी जीवन दयानी नदियां और उनका मधुर स्वर हमें आनंदित करता रहता है।

हमारे देश का ऋतु चक्र हमें नई सोच और विचारों को जन्म देता रहता है। प्रकृति हमारी सबसे बड़ी गुरू है। प्रकृति को आधार मानकर हमारे कवियों ने काव्य-महाकाव्य सभी कुछ लिखा है। आयुर्वेद तो हमारी सेहत का खजाना है, इसे विश्व को सभी ने माना है। हमारी संस्कृति ही हमारी आस्था और व्यवस्था का आधा बिंदु रही है। हमारी अर्थव्यवस्था कभी नहीं डूबती है और नहीं कभी डूबेगी। हमारी धन-दौलत-संपदा को देखकर ही विदेशी आक्रमणकारी हमारे ऊपर हमला करते रहे। यहां के खजानों को लूटते रहे। हमारे देवी-देवताओं के मंदिरों को लूटते रहे। अपने धर्म का प्रचार करने हेतु हमारे मंदिरों को तोड़ते रहे, उनमें रखा खजाना लूटते रहे। हमारे पूर्वजों ने कितने ही आक्रमणों को झेला है। हमारे कितने ही देशभक्त इस देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करके, हमें स्वतंत्र राष्ट्र देकर चले गए।

कितने ही हमले, आक्रमण, शासन होने के बाद भी हम बने हुए हैं। इसमें हमारी संस्कृति, आस्था, संस्कारों आदि का बहुत बड़ा योगदान है। हमारी संस्कृति में तीज-त्योहारों का बहुत बड़ा महत्व है। यह तीज-त्योहार हमारे अंदर ऊर्जा का संचार भरते हैं। इन तीज-त्योहारों के चलते ही हमारे बाजारों में एक नई ऊर्जा और कार्यशैली बढ़ती है। अर्थव्यवस्था को नया जीवन मिलता है। सुस्त पड़ी अर्थव्यवस्था में नव संचार आ जाता है। फसलों के साथ जुड़ा यह देश, देवी-देवताओं के आधार पर तीज-त्यौहार मानता आ रहा है। हमारे देश में तीज-त्योहारों की कमी नहीं है। इन तीज-त्योहारों के चलते, हर एक वर्ग और स्थिति के लोगों को काम मिलता है। अर्थव्यवस्था तेजी से दौड़ती है। इस देश में रहने वाले हर एक व्यक्ति को काम मिलता है। इसके विपरीत विदेश की बात करें तो वहां तीज-त्योहारों की कमी है। उमंग, उत्साह कम है। इसलिए अर्थव्यवस्था लगभग ठप पड़ी रहती है। दूसरों का मुंह ताकती रहती है।

भारतवर्ष अपने में एक वैश्विक अर्थव्यवस्था है। कितनी ही भाषाएँ, कितने ही रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि सभी इसकी सुंदरता को चार चाँद लगा देते हैं। विश्व हमसे जुड़ना चाहता है, हम विश्व से अपने आप जुड़ जाते हैं। सबसे ज्यादा फैसलें, तीज-त्यौहार, ऋतु चक्र, मौसम आदि भारत की भूमि पर हैं। हम विश्वगुरु के साथ-साथ विश्व अर्थव्यवस्था हैं लेकिन पिछले कुछ वर्षों से तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इसे छोटा करके बताया-समझाया, जो बहुत गलत विचार था। हमारे देश में युगों-युगों से लोग व्यापार करने आते रहे हैं और आते रहेंगे। हमने विश्व को शांति का संदेश दिया है। हमारे देश के साथ इतनी लूटपाट, हमले, शासन होने के बाद भी हमने वैश्विक विरोध नहीं, बल्कि विश्व के एकीकरण और शांति की बात कही है।

हम सभी के साथ प्रेम से रहना चाहते हैं। हमारी बढ़ती अर्थव्यवस्था, हमारी प्राचीन परंपराओं, संस्कृति और तीज-त्योहारों का ही फल है। हमें अपने तीज-त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाने चाहिए। नकारात्मक सोच और विचार से दूर रहना चाहिए। हम तोड़ने की नहीं, जोड़ने की बात करते हैं।

गाँव पेटवाड़ से चीफ जस्टिस तक : जस्टिस सूर्यकांत की प्रेरक यात्रा

- डॉ. सत्यवान सौरभ

मेरे साहित्यिक गुरु पंडित मदन गोपाल जी अब इस भौतिक संसार में नहीं हैं, लेकिन उनके लिखे सैकड़ों पत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। वे पत्र जिनमें केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन का ज्ञान, संवेदना और आत्मा की आवाज़ बसी हुई थी। हर सप्ताह वे मुझे प्रेमपूर्वक पत्र लिखते, साहित्य की बारीकियाँ सिखाते और जीवन में ईमानदारी व कर्म की महत्ता समझाते थे। उनके प्रत्येक पत्र में चरित्र की गहराई, भाषा की सादगी और विचार की ऊँचाई होती थी।

आज जब उनके छोटे पुत्र सूर्यकांत जी देश के 53वें मुख्य न्यायाधीश बने हैं, तो लगता है जैसे उन पत्रों में लिखे संस्कारों ने ही परिवार को यह ऊँचाई दी है। यह केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि गुरु के मूल्यों और शिक्षाओं की विजय है। यह उस भारतीय परंपरा की मिसाल है जहाँ ज्ञान व संस्कार पीढ़ियों तक अपना प्रकाश फैलाते हैं।

("पेटवाड़ की मिट्टी से निकला वह दीप, जिसने न्याय के मंदिर में अपने उजाले से पूरे देश को आलोकित कर दिया।")

हरियाणा के हिसार ज़िले का छोटा-सा गाँव पेटवाड़ आज पूरे देश में गर्व और प्रेरणा का प्रतीक बन गया है। इस गाँव की मिट्टी ने वह रत्न दिया है जिसने मेहनत, सादगी, ईमानदारी और निष्ठा के बल पर वकालत से लेकर देश के सर्वोच्च न्यायिक पद तक की यात्रा पूरी की — जस्टिस सूर्यकांत, जो अब भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश (CJI) बने हैं। यह उपलब्धि केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस हरियाणवी संस्कृति, उस परिवार और उस शिक्षा की है जिसने अपने संस्कारों से न्याय, सेवा और समर्पण की भावना को जन्म दिया।

जस्टिस सूर्यकांत का जीवन किसी प्रेरक कथा से कम नहीं। चार भाई-बहनों (कमला देवी, ऋषिकांत, देवकांत, शिवकांत, सूर्यकांत) में सबसे छोटे सूर्यकांत ने बचपन से ही मेहनत, अध्ययन और संयम को अपने जीवन का आधार बना लिया था। उनके पिता पंडित मदन गोपाल जी एक साहित्यप्रेमी और नैतिक मूल्यों वाले व्यक्ति थे। वे अपने बच्चों को हमेशा शिक्षा और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते थे। उनके जीवन का बड़ा हिस्सा लोगों को सही राह दिखाने और समाज में नैतिकता की मशाल जलाए रखने में बीता। पंडित मदन गोपाल जी के जीवन के संस्कारों का ही परिणाम है कि उनके पुत्र सूर्यकांत ने न केवल अपने परिवार का नाम रोशन किया, बल्कि पूरे हरियाणा और देश को गौरवान्वित किया।

गाँव पेटवाड़ की सादगी, खेतों की मिट्टी की खुशबू, और ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ शायद वही प्रेरणास्रोत बनीं जिनसे सूर्यकांत ने अपनी राह तय की। गाँव से निकलकर उन्होंने अपनी शिक्षा और वकालत की यात्रा शुरू की। यह आसान सफर नहीं था — न साधन, न सुविधा — लेकिन था अटूट विश्वास और कर्मनिष्ठा।

शुरुआती दिनों में उन्होंने सामान्य परिस्थितियों में रहकर अध्ययन किया और धीरे-धीरे अपने ज्ञान और तर्कशक्ति से सबका ध्यान खींचा।

1984 में सूर्यकांत ने वकालत के क्षेत्र में कदम रखा। उन्होंने हरियाणा और पंजाब हाईकोर्ट में वकालत करते हुए न केवल अनेक महत्वपूर्ण मामलों को सुलझाया बल्कि गरीबों और वंचितों के पक्ष में अपनी आवाज़ बुलंद की। उनकी पहचान एक संवेदनशील, निष्पक्ष और गहराई से सोचने वाले अधिवक्ता के रूप में बनी। बाद में जब वे न्यायिक सेवा में आए तो उन्होंने न्यायालय को केवल निर्णय का स्थान नहीं, बल्कि न्याय और मानवीय मूल्यों का मंदिर माना।

उनकी कार्यशैली में सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने कभी भी अपने पद को प्रतिष्ठा का साधन नहीं बनाया, बल्कि सेवा का माध्यम माना। चाहे मामला गरीब किसान का हो, या किसी छोटे व्यापारी का, उन्होंने हर बार अपने निर्णयों में न्याय और संवेदना का संतुलन बनाए रखा। यही कारण रहा कि वे धीरे-धीरे न्यायिक जगत में एक विशिष्ट पहचान बनाते चले गए।

2019 में उन्हें सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया। यह वह क्षण था जब हरियाणा के लोगों की आँखें गर्व से भर आईं। गाँव पेटवाड़ में उस दिन से लेकर आज तक उनके नाम से एक आत्मीयता जुड़ी है। जब यह समाचार आया कि जस्टिस सूर्यकांत अब देश के 53वें मुख्य न्यायाधीश होंगे, तो गाँव के हर आँगन में दीपक जले, लोग एक-दूसरे को बधाइयाँ देने पहुँचे, और बुजुर्गों की आँखों से गर्व के आँसू छलक पड़े।

पंडित मदन गोपाल जी भले आज इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके संस्कार और उनके लिखे सैकड़ों पत्र आज भी परिवार में सहेज कर रखे गए हैं। वे पत्र सूर्यकांत जी के लिए केवल शब्द नहीं, बल्कि प्रेरणा के दीपक हैं। जिन प्रेम, अनुशासन और आत्मीयता से पंडित जी अपने बेटे को हर सप्ताह पत्र लिखते थे, वही आज उनकी आत्मा को शांति देता होगा कि उनका बेटा उसी मार्ग पर चला — सत्य, ईमान और न्याय का।

जस्टिस सूर्यकांत का यह उत्थान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है; यह उस विश्वास का प्रमाण है कि भारत का कोई भी नौजवान, चाहे वह किसी छोटे गाँव से ही क्यों न हो, अगर उसके भीतर लगन और नैतिकता है तो वह किसी भी शिखर तक पहुँच सकता है। उनके जीवन से यह सिखने योग्य है कि सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए केवल प्रतिभा ही नहीं, बल्कि धैर्य, विनम्रता और अनुशासन की भी आवश्यकता होती है।

गाँव पेटवाड़ के लोग बताते हैं कि सूर्यकांत जी हमेशा अपने गाँव और जड़ों से जुड़े रहे। वे जब भी समय निकाल पाते, गाँव आते, बुजुर्गों से मिलते, बच्चों को पढ़ाई की प्रेरणा देते। उनका कहना था कि शिक्षा ही वह ताक़त है जो किसी को भी अंधकार से प्रकाश तक ले जा सकती है। उनकी इस सोच ने न केवल गाँव में, बल्कि पूरे क्षेत्र में युवाओं के भीतर आत्मविश्वास जगाया।

आज जब वे देश के सर्वोच्च न्यायिक पद पर पहुँचे हैं, तो उनके गाँव के लोग यह कहते नहीं थकते कि यह "हम सबकी जीत" है। वास्तव में यह उस भारत की जीत है जहाँ अब प्रतिभा का मूल्यांकन जन्म या संपत्ति से नहीं, बल्कि कर्म और निष्ठा से होता है।

उनके साथियों का कहना है कि जस्टिस सूर्यकांत बेहद शांत, सरल और सहृदय व्यक्ति हैं। वे अपनी बात को दृढ़ता से रखते हैं लेकिन कभी भी अहंकार से नहीं। सुप्रीम कोर्ट में उनके निर्णयों में यह स्पष्ट दिखता है कि वे केवल कानून की भाषा नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना की भाषा भी समझते हैं। न्यायालय के भीतर वे जितने सख्त हैं, बाहर उतने ही विनम्र और सहज। यही गुण उन्हें आम जनता के बीच प्रिय बनाते हैं।

उनकी पत्नी और परिवार ने भी हर कठिन दौर में उनका साथ दिया। गाँव के लोगों का कहना है कि सूर्यकांत जी के परिवार में संस्कार और आपसी प्रेम आज भी वैसा ही है जैसा पंडित मदन गोपाल जी के समय था। शायद यही वजह है कि सफलता के इतने ऊँचे पद पर पहुँचने के बावजूद उन्होंने कभी अपने भीतर के इंसान को मरने नहीं दिया।

जस्टिस सूर्यकांत की सफलता हमें यह भी सिखाती है कि सच्ची उपलब्धि वही है जो समाज को प्रेरित करे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता दिखाए। जब कोई व्यक्ति अपनी मेहनत से समाज में सम्मान अर्जित करता है, तो उसकी यात्रा केवल व्यक्तिगत नहीं रहती — वह एक पीढ़ी की आकांक्षाओं का प्रतीक बन जाती है।

हरियाणा जैसे राज्य में जहाँ शिक्षा और न्याय के क्षेत्र में अभी भी कई सुधारों की गुंजाइश है, वहाँ से देश का मुख्य न्यायाधीश बनना एक ऐतिहासिक संदेश देता है — कि परिवर्तन गाँव से भी शुरू हो सकता है। पेटवाड़ जैसे छोटे गाँव से उठकर सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचना यह दिखाता है कि भारत की मिट्टी में आज भी ऐसे बीज हैं जो अगर सही मार्गदर्शन और परिश्रम पाएँ तो पूरे देश को रोशन कर सकते हैं।

आज जब पूरा देश जस्टिस सूर्यकांत को मुख्य न्यायाधीश पद की बधाई दे रहा है, तो यह केवल एक व्यक्ति के लिए तालियाँ नहीं हैं, बल्कि उस हर माँ-बाप के सपनों के लिए भी हैं जो अपने बच्चों को ईमानदारी से बढ़ा रहे हैं, उस हर गाँव के लिए हैं जो अपने बेटों को मेहनत का मूल्य सिखाता है।

सूर्यकांत जी का यह उदय उस "नवभारत" की पहचान है जहाँ न्यायपालिका न केवल कानून का प्रहरी है बल्कि सामाजिक न्याय की आत्मा भी है। उनसे उम्मीद है कि वे अपने कार्यकाल में न्याय प्रणाली को और अधिक पारदर्शी, सरल और जनहितकारी बनाएँगे। उनकी सोच और अनुभव निश्चित रूप से देश की न्याय व्यवस्था को एक नई दिशा देंगे।

गाँव पेटवाड़ के उस छोटे से आँगन से लेकर सुप्रीम कोर्ट के विशाल भवन तक की यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि जो व्यक्ति अपने मूल्यों से कभी समझौता नहीं करता, उसे मंज़िलें खुद बुलाती हैं।

जस्टिस सूर्यकांत आज न केवल अपने गाँव के बेटे हैं, बल्कि हर उस भारतीय के प्रेरणास्रोत हैं जो यह मानता है कि सत्य और परिश्रम से बढ़कर कोई धर्म नहीं।

फिक्र से पहचान

ज़िक्र करने वाले तो हज़ार मिल जाएँ,
मगर फिक्र करने वाले कहाँ नज़र आएँ।
जो हाल पूछे बिना समझ ले दिल की बात,
वो ही अपना है, बाकी सब परछाईं जाएँ।

बोलों से नहीं, एहसास से जो जुड़ते हैं,
मौन में भी जो साथ खड़े दिखते हैं।
वक़्त की आँधी में भी जो ना डगमगाएँ,
वो रिश्ते ही सच्चे, बाकी सब मिट जाएँ।

ज़िक्र तो दुनिया रोज़ करती रहेगी,
फिक्र वही करेगा जो सच में स्नेही।
अपनों की पहचान यही तो निशानी है,
फिक्र में बसी हर सच्ची कहानी है।

जो तेरी हँसी में अपनी ख़ुशी पाए,
तेरे ग़म को जो अपना दुख बनाए।
जिसे तेरा दर्द चुभे सौरभ बिन कहे,
सच में वही सच्चा अपना कहलाए।

ज़िक्र से नहीं, फिक्र से नाते गहरे होते हैं,
इनसे ही बस रिश्ते सुनहरे होते हैं।
ज़माना तो नाम से पहचान बनाता है,
फिक्र करने वाला ही अपना कहलाता है।

ज़िक्र से नहीं, फिक्र से पहचान होती है,
बातों से नहीं, एहसासों में जान होती है।
जो दूर रहकर भी पास लगे सदा,
वही तो रिश्तों की सच्ची उड़ान होती है।

शब्दों के मेले में मौन जो समझे,
वो ही अपना है, बाकी सब भ्रम है।
जिसे तेरे आँसुओं की आहट सुनाई दे,
वो ही तो तेरे दिल का मरहम है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

हर योजना पर साया: म्युल खातों से सामाजिक न्याय पर हमला

देश का हर कोना, जहाँ गरीब किसान, मजदूर और वृद्ध अपनी छोटी-छोटी उम्मीदों को सरकारी योजनाओं से बाँधते हैं, आज एक अदृश्य दुश्मन के चंगुल में फँस रहा है। म्युल बैंक खातों का यह घृणित खेल, जो हाल ही में राजस्थान के झालावाड़ में बेनकाब हुआ, न केवल सरकारी खजाने को लूट रहा है, बल्कि उन करोड़ों लोगों का भरोसा तोड़ रहा है, जो इन योजनाओं को अपनी जिंदगी की आस मानते हैं। यह महज साइबर अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय पर क्रूर प्रहार है, जो हमें यह सवाल उठाने को मजबूर करता है—क्या हमारा डिजिटल भारत वाकई हर नागरिक के लिए सचमुच सुरक्षित है?

म्युल बैंक खाते साइबर अपराधियों का वह खतरनाक हथियार हैं, जो लालच और फर्जी पहचान के जाल में फँसाकर गरीबों, बेरोजगारों और अनजान लोगों के खातों को अपराध का औजार बना लेते हैं। झालावाड़ में पकड़े गए अंतरराज्यीय गिरोह ने सैकड़ों फर्जी खातों के जरिए करोड़ों रुपये की सरकारी राशि हड़प ली। फर्जी आधार, पैन और मोबाइल सिम के दम पर ये अपराधी डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) की राशि को म्युल खातों में डालकर पलक झपकते निकाल लेते हैं। सबसे दर्दनाक यह है कि अक्सर खाताधारक को भनक तक नहीं होती कि उसका खाता मनी लॉन्ड्रिंग का हिस्सा बन चुका है। अपराधी लेयरिंग तकनीकों से पैसों को एक खाते से दूसरे में, फिर डिजिटल वॉलेट और नकदी में बदलकर अपने निशान मिटा देते हैं।

डीबीटी, जो पारदर्शिता और तेजी का वादा लेकर आया था, आज अपराधियों के लिए स्वर्णिम अवसर बन गया है। कमजोर लाभार्थी सत्यापन इसका सबसे बड़ा कारण है। एक बार खाता पंजीकृत हो जाए, तो उसकी नियमित जाँच नहीं होती। फर्जी दस्तावेजों से खाता खोलना और उसे डीबीटी से जोड़ना बेहद आसान हो गया है। मोबाइल आधारित ओटीपी सत्यापन भी सिम-स्वैपिंग या चोरी हुए फोन के कारण निष्प्रभावी हो जाता है। बैंकों में उन्नत व्यवहारिक एनालिटिक्स की कमी और कुछ मामलों में कर्मचारियों की मिलीभगत इस जाल को और पुख्ता करती है। जब एक खाते में बार-बार डीबीटी की राशि आती है और तुरंत निकाल ली जाती है, तो इसे पकड़ने में आधुनिक तकनीक की कमी साफ झलकती है।

इस जाल का असर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी तहस-नहस कर रहा है। वह किसान, जो बीज के लिए सरकारी सहायता की बाट जोहता है, वह वृद्धा, जो पेंशन से अपनी दवाओं का खर्च चलाती है, या वह परिवार, जो आपदा राहत की आस में जीता है—इन सबके हक पर डाका डाला जा रहा है। यह महज धन की चोरी नहीं, बल्कि विश्वास की नींव को खोखला करने वाला अपराध है। लोग सरकारी योजनाओं को कागजी तमाशा मानने लगे हैं, जिससे सामाजिक असमानता का दुष्चक्र और गहराता जा रहा है। यह स्थिति देश की आर्थिक स्थिरता और सामाजिक एकजुटता के लिए घातक खतरा बन रही है।

इस जाल को तोड़ने के लिए एक सशक्त और समग्र रणनीति जरूरी है। सबसे पहले, एकीकृत सत्यापन प्रणाली लागू हो, जो आधार, पैन और मोबाइल नंबर की हर छह महीने में स्वचालित जाँच करे। बैंकों में वास्तविक समय की व्यवहार निगरानी शुरू हो, ताकि संदिग्ध लेन-देन तुरंत पकड़े जाएँ। बड़े भुगतानों के लिए बायोमेट्रिक सत्यापन अनिवार्य हो। ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर साक्षरता अभियान जोर-शोर से चलाए जाएँ, ताकि लोग अपने खाते और ओटीपी को साझा करने से बचें। बैंकों को नियमित केवाईसी अपडेट और फर्जी दस्तावेजों के खिलाफ कठोर दंड लागू करना होगा। हर डीबीटी भुगतान के बाद लाभार्थी के लिए व्हाट्सएप या आईवीआर जैसे सरल फीडबैक चैनल हों, ताकि अनियमितता की शिकायत तुरंत दर्ज हो सके।

झालावाड़ पुलिस की कार्रवाई एक सशक्त मिसाल है। इसने न केवल एक विशाल साइबर गिरोह का भंडाफोड़ किया, बल्कि साइबर इंटेलिजेंस और तकनीकी कौशल की असीम ताकत को भी रेखांकित किया। मगर यह महज एक शुरुआत है। हर जिले को ऐसी सतर्कता और संसाधनों की दरकार है। यह जाल तोड़ना सिर्फ पुलिस का कर्तव्य नहीं, बल्कि हर नागरिक, बैंक और प्रशासन की साझा जिम्मेदारी है। केवल एकजुट प्रयास और अडिग संकल्प ही इस अपराध के खिलाफ अभेद्य दीवार खड़ी कर सकते हैं।

यह अपराध हमें कठोर सवाल पूछने को विवश करता है—क्या हमारा डिजिटल भारत वाकई हर नागरिक को गले लगाने वाला है? जवाब साफ है—अभी नहीं। मगर यह असंभव भी नहीं। हमें एक ऐसी व्यवस्था चाहिए, जो तकनीक और नैतिकता का अटूट गठजोड़ हो। प्रत्येक नागरिक को यह समझना होगा कि उसका एक छोटा-सा कदम—चाहे वह अपने खाते की सुरक्षा हो या संदिग्ध गतिविधि की सूचना देना—इस अपराध के जाल को चकनाचूर कर सकता है। सरकार को योजनाओं की सुरक्षा को वही प्राथमिकता देनी होगी, जो उनकी घोषणा को दी जाती है।

जब तक हर पात्र व्यक्ति का हक उस तक नहीं पहुँचता, कल्याणकारी राज्य का स्वप्न अधूरा ही रहेगा। इस कुटिल जाल को तोड़ने का अटूट संकल्प लें—एक ऐसा संकल्प जो न केवल अपराधियों को सलाखों के पीछे लाए, बल्कि हर नागरिक के हृदय में यह अडिग विश्वास जगाए कि उसका हक अखंड और सुरक्षित है। यह केवल एक लड़ाई नहीं, बल्कि एक नए युग की शुरुआत है—एक ऐसे भारत की नींव, जहाँ हर सरकारी योजना, हर सपना, और हर हक अपने सच्चे हकदार तक बिना किसी बाधा के, पूर्ण पारदर्शिता और निष्ठा के साथ पहुँचे। यह संकल्प न केवल अपराध के खिलाफ एक दीवार खड़ी करेगा, बल्कि सामाजिक न्याय और विश्वास की एक मजबूत बुनियाद भी रचेगा, जो हर भारतीय के जीवन को उज्ज्वल बनाए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सोशल मीडिया का दुरुपयोग और नए आईटी नियम-एक विवेचन

आज के इस आधुनिक और डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल संवाद और मनोरंजन का ही माध्यम नहीं रहा है, बल्कि यह जनमत निर्माण, राजनीतिक विमर्श और सामाजिक प्रभाव का सशक्त उपकरण बन चुका है, लेकिन कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय में इसकी अनियंत्रित स्वतंत्रता और तकनीकी दुरुपयोग ने समाज में अनेक नई चुनौतियों को जन्म दिया है। इसी पृष्ठभूमि में सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आईटी रूल्स-2021 में संशोधन करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशा-निर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) संशोधन नियम, 2025 को अधिसूचित किया है। पाठकों को बताता चलूं कि इन संशोधनों का उद्देश्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के दायित्वों को स्पष्ट करते हुए डिजिटल पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिकों के साथ ही साथ देश और समाज की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। संशोधित नियमों के तहत आईटी अधिनियम-2000 की भावना को सशक्त करते हुए यह सुनिश्चित किया गया है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (मध्यस्थ) गैरकानूनी सामग्री को 36 घंटे के भीतर हटाएं और ऐसा पारदर्शी व आनुपातिक तरीके से करें। वास्तव में, यह कदम हमारे देश की संप्रभुता, अखंडता, राज्य की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था और शालीनता की रक्षा की दिशा में एक बड़ा सुधार है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि सोशल मीडिया एक क्रांति है जिसने दुनिया को जोड़ने का तरीका पूरी तरह बदल दिया है। इसने विचारों, सूचनाओं और भावनाओं के आदान-प्रदान को तेज और सरल बना दिया है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी आवाज़ को वैश्विक स्तर पर पहुंचा सकता है। यह लोकतंत्र, शिक्षा और जन-जागरूकता का सशक्त माध्यम बन गया है। सोशल मीडिया ने समाज में पारदर्शिता और भागीदारी बढ़ाई है। सचमुच, यह तकनीकी युग की सबसे बड़ी सामाजिक क्रांति है, लेकिन सोशल मीडिया के आगमन ने जहां एक ओर सूचना की पहुंच को आसान बनाया, वहीं दूसरी ओर फेक न्यूज, डीपफेक, ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और अफवाहों के प्रसार ने समाज में भ्रम और विभाजन की स्थिति उत्पन्न कर दी है। आज एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के अनियंत्रित उपयोग ने सोशल मीडिया को एक खतरनाक मोड़ पर पहुंचा दिया है। डीपफेक तकनीक का प्रयोग कर झूठे वीडियो और तस्वीरें बनाना अब बेहद आसान हो गया है। इनसे न केवल आम नागरिक बल्कि सेलिब्रिटीज, पत्रकार और सार्वजनिक हस्तियां भी प्रभावित हो रही हैं। किसी की आवाज़ या चेहरा बदलकर भ्रामक वीडियो बनाना निजता के अधिकार पर सीधा प्रहार है। ऐसी सामग्री से व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। यह तकनीक लोकतंत्र की जड़ों को भी कमजोर कर सकती है, क्योंकि झूठे तथ्यों और काल्पनिक दृश्यों से जनमत को गुमराह किया जा सकता है। नए आईटी नियम इस दिशा में एक सशक्त व सकारात्मक कदम हैं, जो डिजिटल दुनिया को जिम्मेदार और सुरक्षित बनाने का प्रयास करते हैं। रूल 3(1)(डी) को पूरी तरह से बदलकर सरकार ने स्पष्ट किया है कि कोई भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अब गैर-जिम्मेदार नहीं रह सकता। उन्हें उपयोगकर्ताओं की शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करनी होगी और हानिकारक कंटेंट को समयबद्ध तरीके से हटाना अनिवार्य होगा। इन नियमों से सोशल मीडिया कंपनियों पर यह कानूनी जिम्मेदारी भी आएगी कि वे अपनी सामग्री नीति (कंटेंट पालिसी) को पारदर्शी रखें और शिकायत निवारण तंत्र को मजबूत बनाएं। सोशल मीडिया के दुरुपयोग का सबसे बड़ा उदाहरण चुनावों, सामाजिक आंदोलनों और धार्मिक मुद्दों के समय देखने को मिलता है, जब अफवाहें और झूठी सूचनाएं जनभावनाओं को भड़काती हैं। कई बार एक मनगढ़ंत वीडियो या डीपफेक छवि समाज में हिंसा, असहिष्णुता और अविश्वास का माहौल बना देती है। ऐसी स्थितियों में आईटी नियमों का सख्ती से पालन आवश्यक हो जाता है। नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ उनकी सुरक्षा और गरिमा का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ती ट्रोलिंग संस्कृति ने भी मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। किसी व्यक्ति को बदनाम करने, डराने या सामाजिक रूप से अलग-थलग करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग हथियार की तरह किया जाने लगा है। यह बहुत ही दुखद है कि आज खासकर महिलाएं, सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार इस साइबर हिंसा का सबसे अधिक शिकार होते हैं। इस स्थिति में सरकार का यह कदम कि '36 घंटे में अवैध कंटेंट हटाया जाए', निश्चित रूप से नागरिकों (आम आदमी) के हित में है। यह न केवल जिम्मेदारी तय करेगा बल्कि ऑनलाइन वातावरण को सभ्य, सुरक्षित और विश्वसनीय बनाएगा। हाल के वर्षों में एआई जनित कंटेंट और डीपफेक वीडियो ने लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाए हैं। उदाहरण के लिए, किसी नेता या अधिकारी का फर्जी बयान बनाकर जनता के बीच प्रसारित कर देना, न केवल राजनीतिक माहौल को प्रभावित करता है बल्कि जनविश्वास को भी तोड़ता है। अतः ऐसे डिजिटल अपराधों को रोकने के लिए कड़े आईटी नियम समय की मांग हैं। नए संशोधन यह सुनिश्चित करेंगे कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'मध्यस्थ' की भूमिका निभाते हुए भी अपनी जिम्मेदारियों से भाग न सकें। आज का दौर डिजिटल दौर है और इस डिजिटल दुनिया में स्वतंत्रता और जिम्मेदारी का संतुलन बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। यदि सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का असीमित दुरुपयोग होता रहा तो यह लोकतंत्र की आत्मा के लिए खतरा बन सकता है। वहीं यदि उचित नियमन और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए तो यही सोशल मीडिया समाज सुधार, पारदर्शिता और जनसंचार का सशक्त माध्यम बन सकता है। इसलिए, आईटी मंत्रालय द्वारा अधिसूचित यह संशोधन न केवल समयानुकूल बल्कि अत्यंत आवश्यक कदम है। यह नागरिकों की निजता की रक्षा, डिजिटल शालीनता के संवर्धन और एआई जनित खतरों के नियंत्रण की दिशा में एक निर्णायक पहल है। अंततः यह बात कही जा सकती है कि सोशल मीडिया का दुरुपयोग रोकने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए ये कदम भारतीय डिजिटल लोकतंत्र को अधिक जिम्मेदार, पारदर्शी और सुरक्षित बनाएंगे। जब तकनीक का उपयोग मानवता और समाज के हित में किया जाएगा, तभी डिजिटल इंडिया का वास्तविक अर्थ साकार होगा। नई आईटी गाइडलाइनें इस दिशा में एक मजबूत कदम हैं-जो न केवल तकनीकी अनुशासन स्थापित करेंगी, बल्कि हर भारतीय नागरिक की गरिमा और सुरक्षा की रक्षा भी सुनिश्चित करेंगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

बचपन बिक रहा है: बच्चों से भीख मंगवाना एक सामाजिक अपराध

"मासूम बच्चों का शोषण सिर्फ गरीबी का परिणाम नहीं, बल्कि समाज और व्यवस्था की बड़ी विफलता है।"

मासूम बच्चों का शोषण समाज की गंभीर समस्या बन चुका है। भीख मंगवाना केवल गरीबी का नतीजा नहीं, बल्कि बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाने वाला व्यवस्थित व्यवसाय है। लोग दया के भाव में पैसा देते हैं, जबकि बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रभावित होते हैं। समाज, सरकार और नागरिकों को मिलकर जागरूकता फैलानी चाहिए, चाइल्डलाइन (1098) और एनजीओ के माध्यम से बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, और उन्हें शिक्षा व सुरक्षित वातावरण देना प्राथमिकता बनानी चाहिए। बचपन बच्चों का अधिकार है, किसी का व्यवसाय नहीं।

- डॉ प्रियंका सौरभ

हमारे समाज में बच्चों का बचपन उनकी सबसे बड़ी संपत्ति है। उनका खेलना, पढ़ना, सीखना और सुरक्षित वातावरण में पनपना ही उनका अधिकार है। लेकिन बच्चों का शोषण, भीख मंगवाने के लिए उनका इस्तेमाल और उनकी मासूमियत का लाभ उठाना आज एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुका है।

भीख मंगवाना केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है; यह एक व्यवस्थित व्यवसाय बन चुका है। छोटे शहरों और बड़े शहरों में यह आम दृश्य है कि मासूम बच्चे हाथ में थाली, कपड़े या किसी वस्तु के साथ चलते हैं, और लोग उनके मासूम चेहरों पर दया दिखाकर पैसे डाल देते हैं। यह न केवल बच्चों के बचपन को छीनता है, बल्कि उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से भी प्रभावित करता है।

समाज की जागरूकता की कमी, लोगों का दया भाव और कुछ परिवारों की आर्थिक मजबूरी मिलकर इस समस्या को बढ़ावा देते हैं। यह सिर्फ गरीबी का नतीजा नहीं, बल्कि बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन है।

बचपन किसी भी मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील हिस्सा होता है। यह वह समय है जब बच्चे सीखते हैं, अनुभव प्राप्त करते हैं और अपनी पहचान बनाते हैं। लेकिन जब बच्चों को भीख मंगवाने या किसी अन्य शोषण के लिए मजबूर किया जाता है, तो उनका विकास बाधित होता है।

भीख मंगवाना कभी-कभी आर्थिक मजबूरी का नतीजा हो सकता है, लेकिन जब यह नियमित रूप से होता है, और बच्चे को मजबूर किया जाता है, तो यह

शोषण बन जाता है। मासूमियत का फायदा उठाकर बच्चों से पैसे कमाना एक नैतिक अपराध है।

समाज की भूमिका यहां महत्वपूर्ण बन जाती है। लोग यह सोचकर पैसा देते हैं कि वे मदद कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे बच्चों के शोषण को प्रोत्साहित कर रहे हैं। माता-पिता और परिवार की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बच्चों को इस तरह की गतिविधियों से बचाएं।

भारत में बाल श्रम और बच्चों से भीख मंगवाने को रोकने के लिए कई कानून हैं। बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम बच्चों को मजदूरी और शोषण से बचाने के लिए बनाया गया है। इसके अलावा, चाइल्डलाइन 1098 जैसी सेवाएँ 24x7 बच्चों की मदद के लिए उपलब्ध हैं।

एनजीओ और सामाजिक संगठन भी सक्रिय रूप से बच्चों को शोषण से बचाने और उन्हें शिक्षा उपलब्ध कराने का काम कर रहे हैं। लेकिन वास्तविक चुनौती यह है कि कई बार बच्चे और उनके माता-पिता कानूनी संरचना से अनजान रहते हैं, और शोषण नेटवर्क इतने संगठित होते हैं कि उन्हें पकड़ना मुश्किल होता है।

सरकार और समाज को मिलकर बच्चों की सुरक्षा के लिए जागरूकता फैलानी होगी और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना होगा।

समाज का दया भाव और सहानुभूति अक्सर बच्चों के शोषण का कारण बन जाती है। अगर लोग बच्चों को भीख देने के बजाय सही तरीके से मदद करें, तो वे शोषण को बढ़ने से रोक सकते हैं।

स्थानीय समुदाय, स्कूल, माता-पिता और पड़ोसी मिलकर बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। बच्चों को सुरक्षित वातावरण, शिक्षा और खेलकूद का अवसर देना उनके विकास के लिए जरूरी है।

समाज को यह समझना होगा कि केवल पैसे देना बच्चों की मदद नहीं है। सही कार्रवाई, जैसे कि एनजीओ, चाइल्डलाइन और सामाजिक संस्थाओं को सूचित करना, ही बच्चों को शोषण से बचा सकती है।

भीख मंगवाना कई जगहों पर आर्थिक व्यवसाय बन चुका है। कुछ परिवार और नेटवर्क मासूम बच्चों को इस्तेमाल करके पूरे दिन हजारों रुपये कमाते हैं। यह सिर्फ बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाना नहीं है, बल्कि उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रभावित करना भी है।

पैसा देने वाले लोग यह सोचते हैं कि वे दया कर रहे हैं, लेकिन असल में वे इस प्रणाली को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। यह एक चक्र बन जाता है, जिसमें बच्चों का शोषण जारी रहता है। बच्चों के भविष्य और समाज की नैतिक जिम्मेदारी के लिहाज से यह गंभीर समस्या है।

इस समस्या का समाधान समाज, सरकार और नागरिकों के मिलकर काम करने में है। बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा के लिए कदम उठाना जरूरी है।

पैसे देने की बजाय मदद करें। बच्चों को भीख देने के बजाय उन्हें शिक्षा, खेल और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाएं। बच्चों की सुरक्षा के लिए चाइल्डलाइन (1098) और मान्यता प्राप्त एनजीओ से संपर्क करें। समाज में बच्चों के अधिकारों और शोषण की समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाएं। स्कूल, माता-पिता और पड़ोसी मिलकर बच्चों के सुरक्षित वातावरण को सुनिश्चित करें।

सिर्फ दया भाव या छोटे पैसों से बच्चों की मदद नहीं होगी। सही कार्रवाई, जागरूकता और कानूनी उपाय ही उन्हें बचा सकते हैं।

बचपन बच्चों का अधिकार है, किसी का व्यवसाय नहीं। मासूम बच्चों का शोषण समाज की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी को चुनौती देता है। हमें यह समझना होगा कि बच्चों को सुरक्षित, शिक्षित और स्वतंत्र वातावरण देना हमारा कर्तव्य है।

समाज, सरकार और नागरिकों के मिलकर सही कदम उठाने से ही इस समस्या का समाधान संभव है। जागरूकता, शिक्षा और सहयोग से ही हम बच्चों को उनका बचपन वापस दिला सकते हैं और उनके उज्ज्वल भविष्य की नींव रख सकते हैं।

बिहार की राजनीति और मुस्लिम वोट

शम्स आग़ाज़

अगर बिहार की राजनीति को समझने के लिए किसी एक पहलू को आधार बनाया जाए तो वह है जाति और बिरादरी का प्रभाव। यहां का राजनीतिक परिदृश्य विचारधारा से ज़्यादा सामाजिक संतुलन पर टिका हुआ है। चुनाव प्रचार से लेकर उम्मीदवारों की घोषणा तक, हर निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि किस जाति या बिरादरी की संख्या कितनी है और वह किसके साथ जा सकती है। यह वह राज्य है जहां विचार या कामकाज से ज़्यादा पहचान और निष्ठा वोट के निर्णय तय करती है। ऐसे माहौल में मुसलमान एक बड़ी लेकिन बिखरी हुई राजनीतिक ताकत के रूप में मौजूद हैं ,एक ऐसी ताकत जो हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाने के बावजूद अपने प्रभाव से अनजान नज़र आती है।

बिहार की राजनीति में मुसलमान हमेशा एक मज़बूत वोट बैंक रहे हैं। कई सीटों पर उनकी आबादी इतनी है कि वे परिणाम बदल सकते हैं। लेकिन यह भी सच्चाई है कि उनका वोट अक्सर उनके ही हितों के खिलाफ बंट जाता है। अलग-अलग पार्टियां उनके वोट को अपना "पक्का समर्थन" मानकर चलती हैं, लेकिन उनकी राजनीति में मुसलमानों की असली प्राथमिकताओं को कम ही जगह मिलती है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बिहार के मुसलमान अब तक कोई संगठित राजनीतिक रणनीति नहीं बना पाए हैं, न ही किसी एक विचारधारा पर एकमत हो सके हैं।

राज्य की एक बड़ी पार्टी ने हमेशा खुद को अल्पसंख्यकों की रक्षक के रूप में पेश किया है। उसकी राजनीतिक नींव एक खास जाति और मुसलमानों के गठजोड़ पर टिकी है। विचारधारात्मक रूप से वह "सामाजिक न्याय" और "पिछड़ों के अधिकार" की बात करती रही है, लेकिन व्यावहारिक राजनीति में जातिवाद की दीवारों ने उसके नारों को कमजोर कर दिया। जिस जाति ने उसे सत्ता दिलाई, अब वह अपने हितों के अनुसार फैसला करती है। वहीं मुस्लिम वोटर ने हमेशा विचार और वादे को अहमियत दी, जाति को नहीं। यही वजह है कि वे हर बार दिल से वोट देते हैं लेकिन परिणाम के लिहाज से पिछड़ जाते हैं।

एक दूसरी बड़ी पार्टी, जो राष्ट्रीय स्तर पर धर्मनिरपेक्षता और समानता की बात करती है, बिहार में मुसलमानों के वोटों से सबसे ज़्यादा लाभान्वित रही है। उसके नेता अल्पसंख्यकों के हिमायती माने गए, लेकिन जब सत्ता में आए तो मुस्लिम मुद्दों पर उनकी आवाज़ कमजोर पड़ गई। रोजगार, शिक्षा, प्रतिनिधित्व, सुरक्षा और न्याय जैसे सवाल पीछे छूट गए। इसके बावजूद मुसलमानों ने लंबे समय तक इस पार्टी पर भरोसा किया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि कम से कम यह पार्टी नफरत की राजनीति के खिलाफ खड़ी है। लेकिन वक्त के साथ वह भरोसा भी डगमगा गया, क्योंकि हकीकत ने दिखा दिया कि वादे सिर्फ मंच तक सीमित थे।

तीसरी बड़ी पार्टी की राजनीति कुछ अलग रही है। उसके लिए मुस्लिम वोट अहम तो हैं, पर केंद्र में उसकी अपनी सामाजिक बुनियाद है। वह नीतियों में संतुलन बनाए रखने की कोशिश करती है, लेकिन उसका मुख्य फोकस "विकास" और "प्रशासनिक स्थिरता" है, न कि अल्पसंख्यकों के अधिकार। उसने कभी खुलकर दुश्मनी नहीं दिखाई, लेकिन प्राथमिकता भी नहीं दी। उसके लिए मुस्लिम वोट अतिरिक्त लाभ तो हैं, लेकिन जरूरी आधार नहीं।

वहीं वह पार्टी, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर बहुसंख्यक पहचान को अपने राजनीतिक एजेंडे का केंद्र बनाया है, बिहार में भी उसी रणनीति पर कायम है। उसे मुसलमानों के वोट की ज़रूरत नहीं, बल्कि उसकी सफलता इसी में है कि मुस्लिम वोट एकजुट न हों। इसके लिए उसे ज़्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ती, क्योंकि मुस्लिम वोट की बिखराव की स्थिति खुद उसके लिए अनुकूल माहौल तैयार करती है। कई छोटी पार्टियां, क्षेत्रीय नेता और धार्मिक नारे इस बिखराव को और बढ़ाते हैं, जिसका सीधा फायदा उसी पार्टी को मिलता है जिसके खिलाफ मुसलमान वोट देना चाहते हैं।

यह एक दिलचस्प लेकिन कड़वी सच्चाई है कि मुसलमान जिस पार्टी के खिलाफ वोट डालते हैं, परिणाम अक्सर उसी के हक में चला जाता है। वजह है एकता की कमी और असंगठित राजनीतिक सोच। उनके वोट हर इलाके और तबके में अलग-अलग दिशा में जाते हैं। कहीं धार्मिक जुड़ाव असर डालता है, कहीं स्थानीय रिश्ते, तो कहीं उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि। परिणाम यह कि वोट बंट जाते हैं और जिस ताकत के खिलाफ वे खड़े होते हैं, वही और मज़बूत हो जाती है।

पिछले कुछ वर्षों में बिहार में एक नई राजनीतिक लहर उठी है, जो "जनता की सरकार" और "पारदर्शी राजनीति" के नारों के साथ आई। इसने कुछ मुसलमानों को भी आकर्षित किया, जो निराशा में एक नए चेहरे या सिस्टम की तलाश में हैं। लेकिन राजनीतिक अनुभव बताता है कि ऐसे नए चेहरे अक्सर क्षणिक उम्मीद बनकर उभरते हैं और जल्द ही पारंपरिक राजनीति में समा जाते हैं। वहीं कुछ मुसलमान भावनात्मक नारों और अलग मुस्लिम पार्टी के विचार से प्रभावित हैं। उन्हें लगता है कि अलग राजनीतिक आवाज़ बनाकर वे बड़ी पार्टियों को झुकने पर मजबूर कर देंगे। लेकिन हकीकत में ऐसा शायद ही कभी होता है। वोट और ज़्यादा बंट जाते हैं और फायदा फिर उसी को मिलता है जिसकी वे मुखालफत करना चाहते हैं।

अगर बिहार की सामाजिक संरचना पर गहराई से नज़र डालें तो साफ दिखता है कि यहां लोकतंत्र से ज़्यादा जातिवाद हावी है। लोग पार्टी या घोषणापत्र नहीं, अपनी बिरादरी देखकर वोट देते हैं। विचारधारा बस औपचारिकता रह गई है। कोई उम्मीदवार विकास की कितनी भी बात करे, अगर वह "दूसरी जाति" का है तो उसे वोट देना मुश्किल समझा जाता है। यही स्थिति बिहार में लोकतांत्रिक चेतना के सीमित होने की सबसे बड़ी वजह है।

मुसलमान इस ढांचे में अपनी जगह तलाशने की कोशिश में हैं। उनकी संख्या निर्णायक है, लेकिन वे किसी एक दिशा में संगठित नहीं। एक ओर वे नफरत की राजनीति के खिलाफ दीवार बनना चाहते हैं, दूसरी ओर अपनी अंदरूनी कमज़ोरियों के कारण एकजुट नहीं हो पाते। नतीजतन वे हर पार्टी के लिए महत्वपूर्ण तो हैं, लेकिन जरूरी नहीं। कोई भी पार्टी उन्हें प्राथमिकता देने की ज़रूरत महसूस नहीं करती, क्योंकि उसे यकीन है कि वे कहीं न कहीं तो वोट देंगे ही।

यह स्थिति सिर्फ राजनीतिक नहीं, बल्कि मानसिक भी है। मुस्लिम वोटर भावनात्मक हैं -वे न्याय और समानता के नारों से जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। वे दिल से वोट देते हैं, दिमाग से हिसाब नहीं लगाते। यही प्रवृत्ति उनकी राजनीतिक ताकत को कमज़ोर करती आई है। अगर उनमें सामूहिक सोच और रणनीतिक चेतना विकसित हो जाए, अगर वे अपने वोट को सिद्धांतों के आधार पर इस्तेमाल करें, तो बिहार की राजनीति की दिशा बदल सकती है।

कोई भी पार्टी मुसलमानों के वोट से तभी लाभ उठा सकती है जब मुसलमान खुद अपने मुद्दों को राजनीतिक प्राथमिकता बनाएं। उन्हें तय करना होगा कि वे कब तक दूसरों के एजेंडे पर वोट देते रहेंगे। उनका वोट किसी के फायदे के लिए नहीं, बल्कि अपने समुदाय की बेहतरी के लिए इस्तेमाल होना चाहिए। यह तभी संभव है जब वे अपनी राजनीतिक दिशा को समझदारी से तय करें, क्षणिक जोश या व्यक्ति पूजा के बजाय सामूहिक हित को प्राथमिकता दें।

हर चुनाव में बिहार में वही कहानी दोहराई जाती है ।जनसभाओं का जोश, नारों की गूंज, वादों की बारिश ,लेकिन नतीजे आने पर फिर वही "मुस्लिम वोटों का बिखराव"। कहीं कोई उम्मीदवार कुछ हजार वोटों से हार जाता है, कहीं किसी पार्टी को मामूली अंतर से झटका लगता है, और नतीजा यह कि वही ताकत सत्ता में लौट आती है, जिसके खिलाफ अभियान चला था।

बदलाव तभी संभव है जब बिहार के मुसलमान अपनी ताकत पहचानें और उसे बिखरने से रोकें। राजनीति सिर्फ नारों से नहीं, बल्कि रणनीति, एकता और जागरूकता से बदलती है। अगर उनका वोट किसी उद्देश्य के तहत इस्तेमाल हो, तो वे किसी भी पार्टी को अपनी शर्तों पर झुका सकते हैं। लेकिन अगर वही वोट अलग-अलग दिशाओं में बंटते रहे तो वे हमेशा दूसरों के खेल का हिस्सा बने रहेंगे।

आज जरूरत इस बात की है कि बिहार के मुसलमान अपने अतीत से सबक लें, समझें कि उनके वोट ने बार-बार उनके ही खिलाफ नतीजे क्यों दिए। उन्हें यह तय करना होगा कि राजनीति में अपनी जगह इज़्ज़त और आत्मसम्मान के साथ कैसे बनाई जाए। इसके लिए एकता, जागरूकता और उद्देश्य ज़रूरी हैं। अगर वे अपने वोट की अहमियत को समझकर सामूहिक निर्णय लें, तो वे न सिर्फ अपनी प्रतिनिधित्व को मज़बूत कर सकते हैं बल्कि राज्य की राजनीति का संतुलन भी बदल सकते हैं।

फिलहाल बिहार में जाति आधारित राजनीति हावी है, लेकिन वक्त के साथ यह पकड़ कमजोर हो सकती है ।बशर्ते वोटर अपनी प्राथमिकताएं बदलें। अगर मुसलमान सिद्धांत आधारित राजनीति की ओर लौटें, अपने प्रतिनिधियों से सवाल पूछने की परंपरा डालें और हर चुनाव में वादों के बजाय अपनी असली ज़रूरतों को ध्यान में रखें, तो वे एक नई राजनीतिक इतिहास रच सकते हैं।

यह रास्ता आसान नहीं, लेकिन असंभव भी नहीं। लोकतंत्र में असली ताकत हमेशा जनता के पास होती है ।बस जरूरत इस समझ की है कि उसे कब और कैसे इस्तेमाल किया जाए। अगर बिहार के मुसलमान दिल के साथ दिमाग से भी वोट दें, तो वे सिर्फ "वोट बैंक" नहीं, बल्कि एक निर्णायक शक्ति बन सकते हैं। और शायद उसी दिन बिहार की राजनीति जाति के घेरे से निकलकर सचमुच "जनता की राजनीति" बन जाएगी।

सरायकेला का पवित्र बालूका पूजा घाट उपेक्षित, ओड़िया जनमानस नाराज़

ऐतिहासिक तथ्यों के साथ प्रशासन को पत्र: ओड़िशा का राजस्व जिला रहा सरायकेला में जगन्नाथ संस्कृति तार- तार क्यों ?

के ०के० परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला , संपत्ति झारखंड स्थित सरायकेला ओड़िया भाषी एक देशी रियासत (1620-1947), जो आजाद मुल्क में षड्यंत्र के कारण कभी बिहार तो अब झारखंड में सदैव उपेक्षित रहता आया है । उसकी ओडिया भाषा - संस्कृति, परंपरा यहां तक की लोग के विकास पर 1948 से पुरी तरह राजनीतिक ग्रहण लगा चुका है । आज आलम यह है कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जगन्नाथ को समर्पित पवित्र कार्तिक माह में स्नान पर घाट की साफ सफाई बंद पड़ा है । जिसे विगत एक पखवाड़े पूर्व दुर्गा पूजा परिसमाप्ति के साथ हो जाना चाहिए था । जहां कार्तिक माह के अन्तिम पांच समय में हजारों श्रद्धालुओं भीड़ देखी जा सकती है । यहां जगन्नाथ जी की द्वितीय शादी यानी राई दामोदर पूजा में ।

इसको लेकर सरायकेला वासियों की तरफ से कार्तिक कुमार परिच्छा ने सरायकेला अनुमंडल पदाधिकारी को एक पत्र लिखा है । अपने पत्र में श्री परिच्छा ने कहा है कि सरायकेला मांजना घाट शिवालय समीप पवित्र कार्तिक माह स्नान ,पूजन सरायकेला स्टेट की मूल निवासी ओड़िया एवं अन्य भाषा भाषी महिलाएं शदियों करती आ रही है । इस इलाके की ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि जिस राज्य का विधिवत भारतीय अधिराज्य मे विलय ओड़िशा में रखे जाने हेतु सरदार पटेल के समक्ष 1947 में कटक में हुआ था नकी बिहार में यह उपेक्षा बिहार व झारखंड आज भी जारी है । राज-पाट परिसमाप्ति के बाद हालात का जिक्र करते हुए प्रशासनिक स्तर पर इसे तरहीज न दिये जाने पर खेद प्रकट करते हुए कार्तिक कुमार परिच्छा ने लाखा है कि

जिस जिले की प्रथम उपायुक्त स्व दुर्गा दास ओडिशा कैडर के रहे हैं नकी श्रीमती बंदना डाडेल झारखंड कैडर की रहीं वही आज उपेक्षा का दंश झेल रहा है । संभवतः श्री परिच्छा ने कार्मिक प्रशासनिक सुधार की तरफ इशारा करते हुए नौकरशाही को सरायकेला , खरसावां , सिंहभूम ओडिया भाषी क्षेत्र के विषय में पर्याप्त जानकारी न होने या जानबूझ कर ओड़िया उपेक्षा करने को दर्शाया है ।

आगे उन्होंने लिखा है कि आज पूजा स्थल पर यह महिला स्नान घाट पुरी तरह अवांछित पौधों, कांटों में भर चुका है । गत दिनों नगर प्रशासक से मिलकर सप्ताह भर पहले वस्तु स्थिति पर परिच्छा ने जानकारी दी थी पर नतीजा ढाक के तीन पात निकले पर वे नाराज हैं । सनद रहे हर वर्ष यह स्थल सरकारी अनदेखी का शिकार होने के कारण जनता नाराज रहती हैं।

कार्तिक कुमार परिच्छा ने अपने पत्र में लिखा है कि मैं स्वयं पानी में डूबकर हर वर्ष की तरह यहां देखा , अधिक मानव श्रम की यहां दरकार है । सरायकेला जिनकी भाषा संस्कृति जिम्मेदारी केंद्र व राज्य सरकार के जिम्मे आज भी है , दुर्भाग्य यह राष्ट्रीय समस्या होकर भी भाषा , लोगों के जमीन जायदाद की तरह पूजा से भी उन्हें अब उपेक्षित रखा जाता है । उन्होंने पुछा है ओड़िया लोगों को उनकी जगन्नाथ जगन्नाथ संस्कृति से अलग रखना कहां तक उचित है ?

ईडी ने झारखंड ग्रामीण कार्य विभाग के मामले में दायर की चौथी चार्जशीट

जेल में बंद मंत्री आलम गीर आलम को मिलता था ई0 विरेंद्र राम से कमीशन। चार्जसीट मे पुनः आठ नाम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड सरकार के ग्रामीण कार्य विभाग में भ्रष्टाचार के मामले में ईडी ने चौथी सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर की. यह चार्जशीट रांची की विशेष पीएमएलए पीए एल ए अदालत में दाखिल की गई है. इस नई चार्जशीट में 8 और लोगों को आरोपी बनाया गया है. इनमें कुछ ठेकेदार, अफसरों के करीबी और उनके परिवार के सदस्य शामिल हैं. इन पर अपराध की कमाई, उसे संभालने और सफेद करने का आरोप है. अब तक इस केस में कुल 22 लोग आरोपी बन चुके हैं.

यह जांच एंटी करप्शन ब्यूरो एसीबी मशेदपुर की एफआईआर पर आधारित है, जिसमें जूनियर इंजीनियर सुरेश प्रसाद वर्मा को रिश्वत लेते पकड़ा गया था. बाद में छापेमारी में ग्रामीण कार्य विभाग के तत्कालीन मुख्य अभियंता वीरेंद्र कुमार राम से जुड़े ठिकानों से ₹2.67 करोड़ नकद बरामद किए गए थे. ईडी की जांच में पता चला कि विभाग में एक बड़ा भ्रष्टाचार रैकेट चल रहा था.

पहले की शिकायतों में यह बात सामने आई थी कि मुख्य अभियंता वीरेंद्र कुमार राम ठेके से मिलने वाले कमीशन का प्रबंधन करते थे. जांच में यह भी सामने आया कि उस समय के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम को हर टेंडर पर तय कमीशन मिलता था, जिसे उनका निजी सचिव संजय कुमार लाल और उसके साथी वसूलते थे. इस मामले में अब तक हुई छापेमारियों में ₹37 करोड़ से ज़्यादा नकदी बरामद हो चुकी है.यह पैसा दिल्ली के कुछ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स और एंट्री ऑपरेटरों के ज़रिए घुमाकर संपत्तियों में लगाया गया था. बुधवार को दाखिल की गई इस चौथी चार्जशीट में कई ठेकेदारों की भूमिका भी साफ़ की गई है. जिसमें, राजेश कुमार (और उनकी कंपनियां राजेश कुमार कंस्ट्रक्शंस प्रा. लि. और परमानंद सिंह बिल्डर्स प्रा. लि.) ने माना है कि उन्होंने ₹1.88 करोड़ की रिश्वत दी और दो लग्ज़री गाड़ियां (टोयोटा इनोवा और टोयोटा फॉर्च्यूनर) भी गिफ्ट में दीं.

ठेकेदार राधा मोहन साहू ने भी माना कि उन्होंने ₹39 लाख और एक टोयोटा फॉर्च्यूनर (जो उनके बेटे अंकित साहू के नाम पर थी) रिश्वत के रूप में दी. ये तीनों गाड़ियां बाद में वीरेंद्र कुमार राम के पास से बरामद हुईं. जांच में यह भी सामने आया कि कुछ लोग अफसरों के लिए पैसे संभालते और आगे बढ़ाते थे. अतिकुल रहमान उर्फ अतिकुल रहमान अंसारी, जो वीरेंद्र राम के करीबी थे, के घर से ₹4.40 लाख नकद मिले.

राजीव कुमार सिंह, जो ठेकेदार और अफसरों के बीच बिचौलिये का काम करता था, के यहां से ₹2.13 करोड़ नकद बरामद हुए. उसने माना कि उसने करीब ₹15 करोड़ कमीशन का पैसा इकट्ठा किया था. रीता लाल, जो आरोपी संजय कुमार लाल (पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के निजी सचिव) की पत्नी हैं, पर भी आरोप है कि उन्होंने रिश्वत के पैसों से संपत्तियां खरीदीं और उन्हें वैध आय के रूप में दिखाने की कोशिश की. अब तक ईडी ने इस मामले में ₹44 करोड़ से ज़्यादा की संपत्तियां जब्त की हैं और अदालत से सभी आरोपियों के खिलाफ मुकदमा चलाने और इन संपत्तियों को जब्त करने की अनुमति मांगी है।

जैव हैकिंग का युग: खुद को री प्रोग्राम करने की क्रांति [भविष्य अब शरीर में बसता है — जैव हैकिंग की क्रांति शुरू]

आँखें खुलीं। एक पल में दुनिया बदल गई। थकान बिल्कुल गायब हो गई। दिमाग चाकू की तरह तेज हो गया। शरीर लोहे की तरह मजबूत बन गया। कल तक आप साधारण इंसान थे। आज आप सुपरमैन बन गए हैं। यह जादू नहीं है। यह जैव-हैकिंग की आग है। यह शरीर की हर दीवार तोड़ देती है। विज्ञान और तकनीक से आपका नया जन्म होता है। हार्वर्ड की रिपोर्टें बताती हैं। एनआईएच की खोजें साबित करती हैं। डेव एस्प्री की किताब (स्मार्टर, फास्टर, स्ट्रॉन्गर) सिखाती है। अब हर साँस तीर की तरह तेज है। हर कदम बिजली का झटका देता है। आइए इस तूफान में कूद पड़ें। अपना शरीर सुपरकंप्यूटर बना लें। सारी सीमाएँ जला दें।

जैव-हैकिंग की क्रांति भोजन से प्रारंभ होती है। अब भोजन विष नहीं, अपितु शक्ति का स्रोत बन जाता है। कीटो डाइट अपनाएं—अधिक वसा ग्रहण करें, चावल न्यूनतम रखें। एनआईएच की रिपोर्ट स्पष्ट घोषणा करती है कि इससे मस्तिष्क की क्षमता 30 प्रतिशत तक वृद्धि होती है। फोकस अटल शिला सरीखा दृढ़ हो जाता है, स्मृति लौह-कठोर बन जाती है। इंटरमिटेंट फास्टिंग आरंभ करें—16 घंटे उपवास, मात्र 8 घंटे भोजन। जॉन्स हॉपकिन्स के वैज्ञानिक प्रमाणित करते हैं कि यह शरीर को पूर्णतः शुद्ध करता है, सूजन आधी कर देता है, और आयु को दीर्घायु प्रदान करता है ।सब्जियां एवं फल-आधारित आहार चुनें। स्टैनफोर्ड की अध्ययन रिपोर्ट उद्घोषित करती है कि इससे हृदय 20 प्रतिशत सशक्त हो जाता है। मोबाइल ऐप सक्रिय करें, प्रत्येक चम्मच की गणना करें। प्रोटीन 1.6 ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर-भार लें। एक बायोहैकर गर्व से घोषित करता है—2500 कैलोरी ग्रहण करता हूं, थकान का लेशमात्र नहीं। प्रत्येक निवाला मापित, प्रत्येक आदत परीक्षित। वजन वेग से घटता है, शक्ति आकाश स्पर्श करती है। जीवन पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है—360 डिग्री क्रांति। भोजन अब क्रांति का परम हथियार है !

अब नींद की क्रांति आरंभ होती है—यह परम रहस्य है, परम सुपर-योद्धा। साधारण 7-8 घंटे अपर्याप्त सिद्ध होते हैं; नींद के चक्रों को तोड़कर पुनःसंरचित करें। ओरा रिंग (स्वास्थ्य और नींद पर नज़र रखने वाली एक स्मार्ट रिंग) अपनी तर्जनी (इंडेक्स फिंगर) में पहन लें—गहरी नींद मापें, हल्की नींद विश्लेषित करें; सब कुछ क्रिस्टल-स्पष्ट हो जाता है। सीडीसी (सेंटर्स फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन) की कठोर चेतावनी गूंजती है—खराब नींद अवसाद को 40 प्रतिशत उछाल देती है। सही विधि अपनाएं—स्मृति 25% तेज हो जाती है। रात 9:30 बजे प्रकाश बंद करें, नीली रोशनी रोकने वाले चश्मे का उपयोग करें, मैग्नीशियम लें। नींद की देवी 50% प्रज्वलित हो उठती है। 10 मिनट ध्यान—येल विश्वविद्यालय बताता है: तनाव 22% कम होता है। बेन ग्रीनफील्ड का अनुभव—केवल 4 घंटे की नींद, पर 8 घंटे जितनी ऊर्जा। सुबह उठें—मस्तिष्क निर्मल, निर्णय बिजली-गति से। नींद अब शत्रु नहीं, अजेय योद्धा बन जाती है ! शरीर की मरम्मत करती है, स्मृतियों को मजबूत बनाती है, स्थिरता प्रदान करती है। मात्र एक रात—सब कुछ नवीन हो जाता है।

दिमाग पर हमला बोलो—असल धमाका यही है ! म्यूज़ बैंड सिर पर पहनें; दिमाग की लहरें खुद सीखने लगती हैं। फोकस 40% उछल जाता है। हार्वर्ड के एंड्रयू ह्यूबरमैन कहते हैं—सुबह 10 मिनट धूप लो—खुशी 50% बढ़ती है। टीडीसीएस (ट्रांसक्रेनियल डायरेक्ट करंट स्टिमुलेशन) मशीन चलाओ—सोच 35% तेज हो जाती है। दिमाग की दवा लो—याददाश्त तलवार-सी तेज हो जाती है। सांस की कसरत करो—डर 35% कम हो जाता है। डेव एस्प्री की कॉफी मिक्स बनाओ—ताकत दोगुनी। मीटिंग में आइडिया बरसने लगते हैं, रचनात्मकता फूट पड़ती है। एक ने कहा— मेरा आईक्यू 15 अंक ऊपर चढ़ गया। दिमाग अब रॉकेट बन गया—भावनाएं काबू में, समस्याएँ पल में हल, जंजीरें टूट गईं। सुपरपावर अब हाथ में है।

शरीर की शक्ति जागृत करें—यह बिजली का करंट है ! गार्मिन घड़ी (दौड़ और कुछ स्वास्थ्य आँकड़ों पर नज़र रखना) कस लें; दौड़ की सीमा तोड़ें। एचआईआईटी (हाई-इंटेंसिटी इंटरवल ट्रेनिंग) व्यायाम अपनाएं—सहनशक्ति 25 प्रतिशत उछलती है। सौना में पसीना बहाएं—दर्द आधा हो जाता है। ठंडे चैंबर में उतरें—खुशी का सैलाब छूटता है, ऊर्जा दोगुनी प्रज्वलित होती है। रक्त-परीक्षण करवाएं, हार्मोन संतुलित करें। जिंक-विटामिन लें, थकान-रोधी गोली निगलें—थकान देर से दस्तक देती है। मैराथन धावक गरजे—42 किमी 3 घंटे से घटकर 2:20 रह गया। रिकवरी मात्र 24 घंटे। हर पुश-अप गिना हुआ, हर कदम जिया हुआ। थकान गायब, मांसपेशियां पत्थर-सरीखी, शक्ति अनंत—आप अजेय योद्धा बन जाते हैं।

बायोनिक्स का दरवाजा खोलें। भविष्य सामने आ जाता है। न्यूरालिंक चिप (ब्रेन चिप, एक कंप्यूटर-से-मस्तिष्क इंटरफ़ेस है) लगाएं। सोच से लिखना शुरू हो जाता है। दिल की चिप डालें। बीमारी 99 प्रतिशत पकड़ में आ जाती है। हाथ में चिप लगाएं। द्वार स्वतः खुल जाता है। भुगतान पल में पूरा हो जाता है। कान की मशीन लगाएं। सब कुछ सुनाई देने लगता है। आंख की मशीन डालें —दृष्टि दोगुनी तीक्ष्ण हो जाती है। ताकत 200 प्रतिशत बढ़ जाती है। सब सुरक्षित है। डॉक्टर की मुहर लगी हुई। शरीर अब रखवाला बन जाता है। हर धड़कन चेतावनी देती है। खतरा पहले ही भाग जाता है। इन्द्रियां नवजीवन प्राप्त करती हैं। जीवन लोहे का हो जाता है।

खतरे से सावधान रहें। जीन बदलने से उम्र रुक सकती है, लेकिन एनआईएच चेताता है, सावधानी बरतें। दवा बिना डॉक्टर के न लें। लीवर 12 प्रतिशत खराब हो सकता है। सर्वे बोलता है। 75 प्रतिशत लोग कहते हैं। जानकारी ही ढाल है। डेटा की चोरी न होने दें। गलत तरीका मौत ला सकता है। सही तरीका अमरता देता है। ताकत अपने हाथ में लें। सीमाओं को जला दें !

यह सबके लिए है। उम्र रोकने वाली गोली लें—जीवन 25% लंबा हो जाता है, हार्वर्ड के सिनक्लेयर के अनुसार। वीआर (वर्चुअल रियलिटी) में ध्यान करें—डर मिट जाता है। नन्हा रोबोट भेजें—कैंसर मर जाता है। उम्र और बीमारी खत्म, बंधन टूटते हैं, आसमान खुल जाता है। विज्ञान और तकनीक का महामेल—आप देवता बन जाते हैं। जैव-हैकिंग की आग अंदर का राज खोल देती है, जीवन अनंत हो जाता है। आज घड़ी बांधें, एक तरीका आजमाएँ—कल आप राजा बन जाएंगे। सीमाएँ राख बन जाती हैं। यह महायुद्ध है—आप योद्धा हैं। कूद पड़ें, जीत हासिल करें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

आदिवासी नेता भुजबल आडबंग सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

अपाड़ा/भुवनेश्वर: प्रमुख और वरिष्ठ आदिवासी नेता भुजबल अड़बंग गुरुवार को नुआपाड़ा में आयोजित एक विलय समारोह में अपने सैकड़ों समर्थकों की उपस्थिति में औपचारिक रूप से भाजपा में शामिल हो गए। इस अवसर पर, जाने-माने वकील और आदिवासी नेता एडवोकेट गाजीराम बाग, एडवोकेट गोपाल सामंत, एडवोकेट पूर्णचंद्र साहू और अशोक देवगन भाजपा में शामिल हुए।गौरतलब है कि आडबंग ने 2024 के आम चुनाव में नुआपाड़ा विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था और लगभग 6,000 वोट हासिल किए थे। भाजपा में शामिल होते हुए उन्होंने कहा कि नुआपाड़ा की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ओडिशा के लोकप्रिय मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी की सरकार में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया है। विशेषकर, मुख्यमंत्री स्वयं एक आदिवासी हैं और नुआपाड़ा जिले के प्रति उनका प्रेम तथा नुआपाड़ा जिले के समग्र विकास के लिए लोकप्रिय मुख्यमंत्री की प्रतिबद्धता ने हम सभी को प्रभावित किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राज्य में भाजपा की डबल इंजन सरकार के कारण नुआपाड़ा जिले का समग्र विकास संभव होगा। इस अवसर पर प्रदेश सह प्रभारी लता उसेंडी, मंत्री नित्यानंद नद किया।त्री डॉ. मुकेश महालिंग, सांसद अनंत नायक, प्रदीप पुरोहित, सुजीत कुमार, रबीनारायण बेहरा, पूर्व मंत्री हिमांशु मेहेर, अभिनंदन पांडा, प्रसन्न पाढ़ी, प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक मिश्रा, जिला प्रभारी आर्तत्राण महापात्र, जिला अध्यक्ष कमलेश दीक्षित प्रमुख रूप से उपस्थित थे और नये सदस्यों को पार्टी की टोपी और पगड़ी पहनाकर स्वागत किया ।

सुरक्षा एवं गुणवत्ता पर "प्राथमिक चिकित्सा में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम" पर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: सरकार राज्य के कारखानों में श्रमिकों की सुरक्षा और सुरक्षित कार्यस्थलों के निर्माण को प्राथमिकता दे रही है। इसी उद्देश्य से, राज्य बीमा विभाग के अनुमोदन से, कारखाना एवं कारखाना निदेशालय नियमित रूप से विभिन्न सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

इसी क्रम में, आज 24.10.2025 को राज्य श्रम संस्थान, भुवनेश्वर के सम्मेलन कक्ष में ₹प्राथमिक चिकित्सा में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम - सुरक्षा एवं गुणवत्ता₹ पर एक राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में, कारखाना एवं कारखाना निदेशालय के उप निदेशक (सुरक्षा) डॉ. मलय कुमार प्रधान ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि ₹कारखानों में स्वास्थ्य और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। जब सुरक्षा विफल हो जाती है, तो प्राथमिक उपचार शुरू किया जाता है, जो जीवन और मृत्यु के बीच एक सेतु का काम करता है। समय पर प्राथमिक उपचार से आकस्मिक मृत्यु का जोखिम 90 प्रतिशत से अधिक कम हो जाता है।"

संयुक्त निदेशक (सुरक्षा) श्री अनिल कुमार नंदा और संयुक्त निदेशक (मुख्यालय) श्री पंकज कुमार बिस्वाल ने भी प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया और प्रशिक्षण के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संस्थान से विभिन्न श्रेणियों के 57 कारखाना अधिकारियों ने भाग लिया। शाम के समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

इस कार्यशाला के माध्यम से श्रमिक सुरक्षा, आपातकालीन तैयारी और प्राथमिक चिकित्सा के बारे में जागरूकता बढ़ाई गई है, जिससे राज्य के कार्य सुरक्षा अभियान को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

झारखंड के वरीय अधिकारियों के पास सात आठ फोन , सेटिंग -गेटिंग के लिए अलग फोन

नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल का भ्रष्ट नौकरशाही पर जोरदार हमला , मुख्यमंत्री को टैग कर किया पोस्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड के नेता प्रतिपक्ष सह राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री रहे बाबूलाल मरांडी ने भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों पर जोरदार हमला बोला है। बाबूलाल मरांडी ने आरोप लगाया है कि राज्य के कुछ सीनियर अधिकारियों के पास 7-8 तक मोबाइल फोन हैं। इनके पास कई मोबाइल नंबर हैं। सरकारी नंबर अलग है। प्राइवेट नंबर अलग है। सीक्रेट नंबर अलग है, जो सेटिंग-गेटिंग और धंधे के लिए प्रयोग होता है।बाबूलाल मरांडी ने अपने एक्स अकाउंट से ट्वीट करके सरकारी अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर हमला किया है। उन्होंने ट्वीट में लिखा-"आज सुबह लगभग 11 बजे मैंने जनसरोकार से जुड़े एक मामले में बात करने के लिये बोकारो जिले के एसपी, डीसी और एसडीओ को उनके सरकारी एवं ग़ैर सरकारी नंबरों पर कॉल किया और करवाया। लेकिन हैरानी की बात यह है कि इन तीनों प्रमुख अफ़सरों के सरकारी-एवं ज्ञात ग़ैर सरकारी नंबर्स स्विच ऑफ थे। मरांडी ने आगे लिखा- "अगर दिन के 11 बजे जिले के शीर्ष अधिकारी से संपर्क से बाहर हों, तो यह बताने की जरूरत नहीं कि सरकार कितनी "गंभीरता" से काम कर रही है और ऐसे अधिकारी कितने ग़ैर ज़िम्मेदार हैं ?" उन्होंने बड़ा आरोप लगाते हुए लिखा- "यह भी जानकारी मिली है कि झारखंड के अधिकांश वरिष्ठ अधिकारी तीन-तीन, चार-चार मोबाइल नंबर रखते हैं—एक सरकारी नंबर, जो कभी उठाया नहीं जाता, दूसरा प्राइवेट नंबर, जो सिर्फ दोस्तों और परिचितों के लिए होता है, और बाकी सीक्रेट नंबर, जो "सेटिंग-गेटिंग" और "धंधे" के लिए प्रयोग होता है।"

मरांडी ने आगे लिखा- "समाचारों में भी आया था कि एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तो सात-आठ फोन तक एक बैग में साथ रखकर चलते हैं और उनके लिये दलाली और वसूली का काम सँभाल रहे कुछ लोग भी थोक के भाव मोबाइल रखकर "नेटवर्किंग" एवं वसूली की रकम को जगह पर पंहुचाने का काम सँभाले हुए हैं।" पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी ने हेमंत सोरेन को टैग करते हुए लिखा- "मेरी बातों पर यकीन न हो तो खुद से भी पता कर लीजिए कि आपके ऑख में धूल झोंक कर बेनामी नंबरों से ऐसे अफ़सर कैसे -कैसे धंधा कर रहे हैं ? यह स्थिति प्रशासनिक अनुशासन पर गंभीर सवाल उठाती है। कृपया इस पर संज्ञान लें- अधिकारियों को कुर्सी पर बैठने के लिए नहीं, बल्कि जनता की सेवा के लिए नियुक्त किया गया ।

छत्तीसगढ़ व झारखंड से अवैध शराब आपूर्ति पर सख्त कार्रवाई जरूरी : डॉ. राजकुमार यादव

डॉ. राजकुमार यादव, प्रदेश अध्यक्ष – राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), ओड़िशा

राउरकेला में बढ़ रही अवैध शराब की आपूर्ति पर चिंता — संभावित जहरीली दुर्घटनाओं का खतरा गंभीर

राउरकेला और उसके आसपास के इलाकों में बीते कुछ महीनों से अवैध शराब की तस्करी और खुलेआम आपूर्ति ने गंभीर रूप धारण कर लिया है।

इस संबंध में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने चेतावनी दी है कि

> "छत्तीसगढ़ और झारखंड सीमावर्ती इलाकों से लगातार अवैध शराब की आपूर्ति हो रही है, जिससे राउरकेला (बिरमित्रपुर, मालगोदाम, तिलकानगर, बिसरा) और सुंदरगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में किसी भी समय जहरीली शराब की बड़ी दुर्घटना होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।"

डॉ. यादव ने कहा कि यह मामला अब केवल कानून-व्यवस्था का नहीं, बल्कि जनजीवन, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा का मुद्दा बन चुका है।

अवैध शराब गिरोह ग्रामीण व शहरी इलाकों में सक्रिय हैं, जो सस्ती लेकिन अशुद्ध, मिलावटी और रासायनिक रूप से जहरीली शराब बेच रहे हैं।

ऐसे अवैध कारोबार से न केवल गरीब तबका प्रभावित होता है बल्कि इससे राज्य सरकार का राजस्व भी बुरी तरह प्रभावित होता है।

सीमावर्ती राज्यों से गहराता नेटवर्क — प्रशासन की निष्क्रियता पर सवाल

डॉ. यादव ने आरोप लगाया कि ओड़िशा की सीमा से लगे छत्तीसगढ़ और झारखंड के कुछ जिलों से बड़ी मात्रा में देसी शराब, महुआ आधारित कच्ची शराब और रासायनिक मिश्रित शराब की खेप लगातार ओड़िशा में प्रवेश कर रही है।

रात के अंधेरे में सीमावर्ती रास्तों से यह माल छोटे ट्रकों, ऑटो और बोलेरो द्वारा लाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि —

> "सीमा चौकियों, पुलिस गश्त और आबकारी विभाग की निष्क्रियता के कारण यह नेटवर्क दिन-ब-दिन मजबूत हो रहा है।

यदि अभी सख्त कार्रवाई नहीं की गई, तो यह समस्या भविष्य में मोहनपुर, बड़ाबाजार, बिसरा, ब्राह्मणी तराई और कुर्मितार जैसे क्षेत्रों में गंभीर जनहानि का कारण बन सकती है।"

राज्य सरकार और प्रशासन से डॉ. यादव की मांग

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ओड़िशा की ओर से डॉ. राजकुमार यादव ने निम्नलिखित मांगें रखी हैं —

*छत्तीसगढ़ और झारखंड की सीमाओं पर विशेष संयुक्त जांच चौकियां (Joint Border Checkpoints) बनाई जाएँ।

*अवैध शराब के भंडारण स्थलों पर त्वरित छापेमारी अभियान चलाया जाए।

* राउरकेला, सुंदरगढ़ और आसपास के इलाकों में आबकारी विभाग की विशेष टास्क फोर्स गठित की जाए।

*स्थानीय थानों और आबकारी अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाए — लापरवाही पर तत्काल निलंबन या विभागीय कार्रवाई हो।

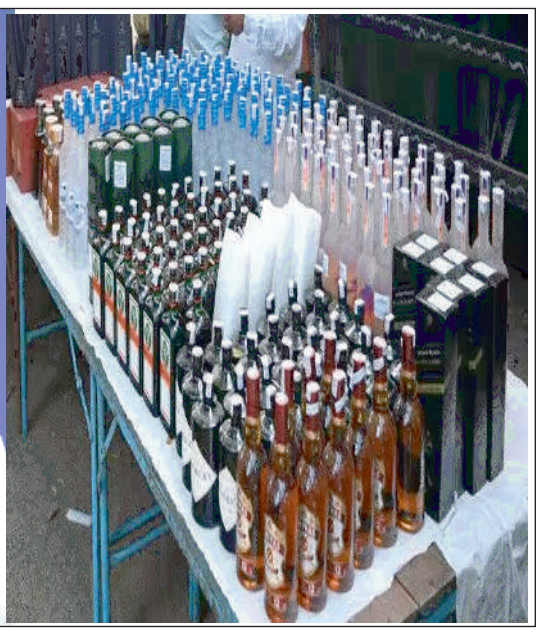

*जनजागरण अभियान चलाकर ग्रामीण जनता को अवैध शराब के दुष्परिणामों से सचेत किया जाए।

जनहित में सख्त चेतावनी और अपील

डॉ. यादव ने स्पष्ट कहा कि — "यदि सरकार और प्रशासन समय रहते इस अवैध शराब तस्करी पर रोक नहीं लगाते, तो आने वाले दिनों में राउरकेला में भी बिहार, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे जहरीली शराब कांड की पुनरावृत्ति हो सकती है।यह व्यवस्था के अंदर इतने शातिराना तरीके से शामिल हैं कि आवाज उठाने वाले अफसरों का तबादला तक करवा लेते हैं व आबकारी टीम पर हमला भी आम बात है1 आबकारी टीम इनके इशारे पर ही छापा मारती है व इनके कमाई बराबर मिठाई के रूप मे वितरित भी होती है 1अब यह वक्त है कि शासन केवल बयान नहीं, बल्कि भूमि पर निर्णायक कार्रवाई करे।"

उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी हर स्तर पर जनहित और जनस्वास्थ्य के पक्ष में संघर्ष जारी रखेगी।

यदि प्रशासन निष्क्रिय रहा, तो पार्टी राज्यव्यापी जनआंदोलन और हस्ताक्षर अभियान चलाने को बाध्य होगी।

निष्कर्ष - राउरकेला जैसे औद्योगिक और श्रमिक प्रधान शहर में अवैध शराब की घुसपैठ न केवल सामाजिक विष है, बल्कि यह राज्य की सुरक्षा और विकास के लिए भी एक गंभीर चुनौती है।

अब सरकार को यह साबित करना होगा कि जनस्वास्थ्य और कानून व्यवस्था केवल नारे नहीं, बल्कि शासन की प्राथमिकता हैं।

क्या है ओआरएस (ORS) को लेकर एफएसएसएआई (FSSAI) का आदेश, जिस पर हाइ कोर्ट ने लगाई रोक

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार को जॉनसन एंड जॉनसन की एक सहायक कंपनी को बड़ी राहत दी है. कोर्ट ने फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें जेएनटीएल कंपनी को अपने हेल्थ ड्रिंक प्रोडक्ट्स पर ओआरएस लिखने से मना किया गया था. बीते दिनों ही एफएसएसएआई ने कहा था कि कोई भी कंपनी अपने किसी प्रोडक्ट के पैकेजिंग पर ओआरएस नहीं लिख सकती है. सिर्फ वही कंपनी यह मेंशन कर सकती है जिसके प्रोडक्ट में ओआरएस के सॉल्ट और फार्मूला का यूज हो और जो प्रोडक्ट डब्ल्यूएचओ (डब्ल्यूएचओ) के मानकों के आधार पर बने हैं.

बाजार में ऐसे कई प्रोडक्ट बिक रहे थे जिसमें पैकेट पर ओआरएस लिखा गया था, लेकिन वह केवल एक सामान्य हेल्थ ड्रिंक थी. लेकिन ओआरएस लिखा होने के कारण लोग इनको खरीद रहे थे और बच्चे इनका सेवन भी कर रहे थे. हैदराबाद में बच्चों की डॉ. शिवरंजनी संतोष ने इसके खिलाफ आवाज उठाई थी. कई सालों से वह इसके लिए संघर्ष कर रही थी और उन्होंने जीत हासिल की थी. उनकी अपील के बाद ही एफएसएसएआई ने यह आदेश जारी किया था. लेकिन अब जेएनटीएल कंज्यूमर हेल्थ इंडिया के केस सुनवाई में हाईकोर्ट ने एफएसएसएआई के आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी है.

इसको लेकर आने सुनवाई की जाएगी.

डॉ. शिवरंजनी संतोष का कहना था कि कई कंपनियां अपने हेल्थ ड्रिंक पर ओआरएस लिखती हैं, लेकिन उनमें ओआरएस का सॉल्ट डब्ल्यूएचओ के मानकों के आधार पर नहीं होता है. ओआरएस लिखे हुए कई पैकेट्स में शुगर की मात्रा तय मानक से अधिक होती है. इनमें आर्टिफिशियल स्वीटनर भी मिलाया जाता है. जो सेहत के लिए खतरनाक होता है.

डॉ शिवरंजनी की शिकायत के बाद फूड सेफ्टी अथॉरिटी और कोर्ट ने ऐसे प्रोडक्ट्स की बिक्री पर बैन लगा दिया. संस्था ने कहा कि ओआरएस का काम शरीर में पानी की कमी को पूरा करना है, लेकिन कुछ ब्रांड में शुगर लेवल अधिक है.

क्या होता है ओआरएस ओआरएस को पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी पूरी करने के लिए पीना होता है. अगर किसी को दस्त, डिहाइड्रेशन हो तो डॉक्टर ओआरएस पीने की सलाह देते हैं. लेकिन अगर इसमें शुगर का स्तर ज्यादा हो जाए, तो यह बच्चों और डायबिटीज के मरीजों के लिए नुकसानदेह हो सकता है. केवल वही ओआरएस पीना चाहिए जो डब्ल्यूएचओ के मानकों के हिसाब से बना हो.

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, ओआरएस बनाने के लिए 1 लीटर साफ पानी में 5 से 6 चम्मच चीनी और एक चम्मच नमक होना चाहिए. इसमें किसी भी तरह की स्वीटनर या कलर के लिए केमिकल का यूज नहीं होना चाहिए.

1. ब्लड शुगर बढ़ना खासकर डायबिटीज के मरीजों में
2. पेट दर्द और अपच ज्यादा शुगर से गैस और दस्त की समस्या बढ़ सकती है
3. मोटापा और कैलोरी इंटेक बच्चों में बार-बार सेवन से वजन बढ़ सकता है

क्या कहते हैं एम्स के डॉक्टर एम्स दिल्ली में पीडियाट्रिक विभाग में डॉ हिमांशु भदानी बताते हैं कि उल्टी और दस्त के मामलों में ओआरएस बच्चों लिए जीवनरक्षक है, लेकिन शुगर का सही लेवल भी जरूरी है. ज्यादा मीठा ओआरएस हानिकारक हो सकता है. ऐसे में जरूरी है कि हमेशा भरोसेमंद और सरकारी मानक वाले ओआरएस पैकेट खरीदें. पैकेट पर शुगर कंटेंट और एक्सपायरी डेट जरूर चेक करें।

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण ने आम जनता का जीना दूभर कर दिया है: एमएल भास्कर

- कृत्रिम बारिश जैसे खोखले दावे करने वाली सरकार अपने मौजूदा संसाधनों का भी सही उपयोग नहीं कर पाईः भास्कर

नई दिल्ली: रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक जहांगीर पुरी के अध्यक्ष एम.एल. भास्कर ने कहा कि दिल्ली सरकार का तथा कथित 'प्रदूषण नियंत्रण अभियान' पूरी तरह विफल साबित हो रहा है। जिसके कारण राजधानी दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में शीर्ष स्थान पर पहुँच चुकी है।

एम.एल. भास्कर ने कहा कि दिल्ली की सत्ताधारी भाजपा सरकार सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति में उलझी हुई है, जबकि प्रदूषण नियंत्रण के लिए कोई ठोस व प्रभावी कदम जमीन पर नजर नहीं आते। सरकार बड़े-बड़े दावे करती रही, परंतु परिणाम शून्य हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में वायु प्रदूषण गंभीर स्तर पर पहुँचने के बावजूद प्रदूषण रोधी योजनाएँ सिर्फ कागजों पर चल रही हैं। उन्होंने आगे बताया कि सांस और फेफड़ों के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है, अस्पतालों में भीड़ रोज नया रिकॉर्ड बना रही है। कृत्रिम बारिश जैसे खोखले दावे करने वाली सरकार अपने मौजूदा संसाधनों का भी सही उपयोग नहीं कर पाई। भास्कर ने कहा कि स्थिति यह है कि दिल्ली का हर नागरिक जहरीली हवा में जीने को मजबूर है, लेकिन सरकार के पास न नीति दिखती है।

दलविंदरजीत सिंह ने अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर के रूप में संभाला पद

अमृतसर, 24 अक्टूबर (साहिल बेरी)

2017 बैच के अधिकारी श्री दलविंदरजीत सिंह ने आज डिप्टी कमिश्नर अमृतसर के रूप में अपना पदभार संभाल लिया। उल्लेखनीय है कि डिप्टी कमिश्नर श्री दलविंदरजीत सिंह इससे पहले गुरदासपुर के डिप्टी कमिश्नर के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। अमृतसर पहुंचने पर पुलिस कर्मियों ने उन्हें सलामी दी और गर्मजोशी से स्वागत किया।

श्री दलविंदरजीत सिंह ने कहा कि वे स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें गुरु नगरी अमृतसर की सेवा करने का अवसर मिला है और वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे।

पदभार संभालने के उपरांत, डिप्टी कमिश्नर ने जिला अधिकारियों के साथ पराली प्रबंधन, धान की खरीद और जिले में चल रहे विकास कार्यों संबंधी बैठक की। उन्होंने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता नागरिक सेवाओं को बिना किसी परेशानी के लोगों तक पहुँचाना है।

उन्होंने बताया कि 90 प्रतिशत नागरिकों के कार्य सेवा केंद्रों और फर्द केंद्रों के माध्यम से पूरे होते हैं, और लंबित कार्यों (pendency) के खत्म होने से लोगों को बड़ी राहत मिलेगी।

डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि जिले में चल रहे सभी विकास कार्यों में तेजी लाई जाएगी। उन्होंने कहा कि पराली प्रबंधन को लेकर किसानों में जागरूकता बढ़ाने की ज़रूरत है ताकि पराली को जलाने से बचा जा सके और बिना आग लगाए पराली को संभालने के लिए किसानों को प्रेरित किया जा सके।

उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन किसानों को इन-सीटू और एक्स-सीटू दोनों तकनीकों के माध्यम से पराली प्रबंधन के लिए पूरा सहयोग देगा और किसानों को समय पर आवश्यक मशीनरी उपलब्ध करवाई जाएगी।

इस अवसर पर वधीक डिप्टी कमिश्नर (जनरल) श्री रोहित गुप्ता, वधीक डिप्टी कमिश्नर (शहरी विकास) श्रीमती अमनदीप कौर, एस.डी.एम. श्री गुरसिमरनजीत सिंह, श्री मनकंवल सिंह चहल, श्री अमनदीप सिंह, श्री संजीव शर्मा, सहायक कमिश्नर (प्रशिक्षणाधीन) मैडम पियूषा, जिला माल अधिकारी श्री नवकिरत सिंह, जिला जनसंपर्क अधिकारी श्री शेरजंग सिंह हुंदल, सहायक जनसंपर्क अधिकारी श्री योगेश कुमार सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

करमजीत सिंह रिंटू ने 88 फुट मेन रोड के प्रीमिक्स कार्य का किया उद्घाटन

अमृतसर, 24 अक्टूबर (साहिल बेरी)

अमृतसर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज श्री करमजीत सिंह रिंटू ने आज 88 फुट मेन रोड पर प्रीमिक्स डालने के कार्य का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को नई गति दी जा रही है और कोई भी परियोजना अधूरी नहीं छोड़ी जाएगी।

रिंटू ने बताया कि आने वाले एक महीने के भीतर उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की सभी टूटी सड़कों का नवीनीकरण पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में ग्रीन एवेन्यू, बसंत एवेन्यू, शास्त्री नगर, जोशी कॉलोनी और सर्कुलर रोड के विकास कार्य भी शुरू करवाए जा रहे हैं। इन सड़कों के निर्माण से क्षेत्रवासियों को बेहतर यातायात सुविधा के साथ-साथ समय की बचत और व्यापारिक गतिविधियों में भी वृद्धि होगी।

उन्होंने कहा कि क्षेत्र के प्रत्येक हिस्से में मूलभूत सुविधाओं के उन्नयन के लिए लगातार स्वीकृतियाँ दी जा रही हैं ताकि जनता को सभी आवश्यक सुविधाएँ सुगमता से मिल सकें। रिंटू ने स्पष्ट किया कि विकास कार्यों के लिए फंड की कोई कमी नहीं है और हर दिन लोग अपनी स्थानीय समस्याएँ लेकर उनसे मिलते हैं, जिनका निपटारा प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की जनहितैषी और पारदर्शी नीतियों को ज़मीनी स्तर तक पहुँचाकर आम जनता को सीधा लाभ दिया जा रहा है। इस अवसर पर पार्षद गुलज़ार बिट्टू जी, अनेक सिंह, आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता और क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

अमृतसर, 24 अक्टूबर (साहिल बेरी)

सिविल सर्जन डॉ. स्वर्णजीत धवन के निर्देशानुसार, जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉ. नीलम भगत के नेतृत्व में सिविल सर्जन अमृतसर कार्यालय में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल पर एक विशेष प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय प्रशिक्षण में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ-साथ पैरा-मेडिकल स्टाफ ने भी भाग लिया। इस अवसर पर जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉ. नीलम भगत ने कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर को ऊँचा उठाना है। इस प्रशिक्षण के दौरान गर्भवती माताओं का शीघ्र पंजीकरण, उच्च जोखिम गर्भावस्था और प्रसवोत्तर केआर के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है, ताकि मातृ मृत्यु दर को कम किया जा सके। इस अवसर पर सभी सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों को एचबी, एचसीवी और सॉल्ट टेस्टिंग फॉर ऑडियो का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

इस अवसर पर जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जसपाल सिंह, जिला महामारी विशेषज्ञ डॉ. हरजोत कौर, जिला एमईआईओ अमरदीप सिंह, डॉ. नवनीत कौर, डीपीएम सुखजिंदर सिंह, कोऑर्डिनेटर कलमदीप भल्ला व समस्त स्टाफ उपस्थित था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023